समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 01 अप्रैल - 30 सितम्बर 2018

एकता का प्रतीक

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-17-8

प्रथम संस्करण
अप्रैल, 2019

समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 01 अप्रैल 2018 - 30 सितम्बर 2018

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

★ महामन्त्र★

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है।
उसी को जानो,
मानो और वैसे ही
गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु,
शरीर नहीं है।

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं,
ज्ञान को अपनाओ ।
निमित्त में नहीं,
नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
अप्रैल 2018		
1. दिः 01 का सबक़		1
2. दिः 08 का सबक़	अमरपद प्राप्ति हेतु विनती	9
3. दिः 15 का सबक़	अमरपद प्राप्ति हेतु सजन, श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे प्रार्थना	14
4. दिः 22 का सबक़	अमरपद प्राप्ति हेतु सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के आगे प्रार्थना	20
5. दिः 29 का सबक़	अपने जीवन वृत्तान्त को सुन्दर बनाने का आवाहन्	27
मई 2018		
6. दिः 06 का सबक़	सत्-शास्त्र के अध्ययन की महत्ता	32
7. दिः 13 का सबक़	सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित भजनों, एवं कीर्तनों को समझने का सही तरीका	68
8. दिः 20 का सबक़	मानव स्वरूप की पहचान	50
9. दिः 27 का सबक़	आत्मविजय-1	57
जून 2018		
10. दिः 03 का सबक़	आत्मविजय-2	64
11. दिः 10 का सबक़	आत्मविजय-3	68
12. दिः 17 का सबक़	आत्मविजय-4	74

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
13. दिः 24 का सबक़	आत्मविजय-5	83
जुलाई 2018		
14. दिः 01 का सबक़	प्रकाश-1	91
15. दिः 08 का सबक़	प्रकाश-2	97
16. दिः 15 का सबक़	प्रकाश-3	102
17. दिः 22 का सबक़	प्रकाश-4	107
18. दिः 28 का सबक़	प्रकाश-5	114
अगस्त 2018		
19. दिः 05 का सबक़	प्रकाश	120
20. दिः 12 का सबक़	प्रकाश (त्रिकालदर्शी-1)	129
21. दिः 19 का सबक़	प्रकाश (त्रिकालदर्शी-2)	136
22. दिः 26 का सबक़	प्रकाश	143
सितम्बर 2018		
23. दिः 02 का सबक़	वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-1	148
24. दिः 09 का सबक़	वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-2	155
25. दिः 16 का सबक़	वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-3	161
26. दिः 23 का सबक़	वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-4	167
27. दिः 30 का सबक़	वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-5	171

दिनाँक 01 अप्रैल 2018 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि आप सब जानते ही हैं कि दृढ़ निश्चयी होकर, अमरता की प्रतीति रखते हुए, निर्भयता से आदर्श जीवन जीने हेतु, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार, हर मानव के लिए, अपने मन को वश में रखते हुए सम, संतोष-धैर्य जैसे दिव्य गुण धारण कर, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढलने का विधान है ताकि मानव दुःख-सुख सम कर जान, न केवल अकर्त्ता भाव से अपने समस्त कर्त्तव्यों का कुशलता से निर्वाह करते हुए आजीवन प्रसन्नचित्त बना रह सके अपितु अंत अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य यानि मोक्ष को भी निर्बाध सिद्ध कर सके।

इस संदर्भ में सजनों जानो इस महान मकसद की सिद्धि यानि अपना जन्म सफल बनाने का यह महत्त्वपूर्ण कार्य, भक्त शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति विशेष श्रद्धा व अपार प्रेम रखते हुए, उनका संग प्राप्त करने व आत्मविश्वास के साथ उन्हीं के ही विचार नीतिसंगत अपनाने पर सहजता से संभव हो सकता है। अतः इस तथ्य के दृष्टिगत हम सजनों के लिए बनता है कि हम उन्हीं द्वारा प्रदत्त भक्ति की रीति-नीति को, सुरत व शब्द के अखंड मिलन/योग का साधन मान, अफुरता से उन्हीं के अंग-संग बने रहते हुए, सदा उन्हीं के हुक्म अनुसार निष्काम भाव से सेवारत रहें और इस प्रकार युग-धर्मों से ऊपर उठ ब्रह्म भाव अपनाएँ व ब्रह्ममय हो जाएँ।

कहने का आशय यह है कि अभी से अपने मन को संकल्प रहित अवस्था में साधे रखने हेतु, उनके अमृत रूपी विचार प्राप्त कर, अपना हृदय सचखंड बनाएँ व ए विध् सच्चे दिल से उनके उपासक बन जाएँ। मान लो कि इसी प्रकार अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना-बाणा निर्मल बना, निर्वैर, निरासक्त, निष्कलंक, निर्विकार, निर्भय जीवन जीने में समर्थ हो सकते हो और समस्त भिन्न-भेद व संशय-भ्रम मिटा, उन्हीं की भांति अमरपद प्राप्त करने के योग्य अधिकारी बन सकते हो।

इस महान उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए, सजनों सर्व कल्याण हेतु ऐसा सुनिश्चित करना आवश्यक समझो और पूरी तरह से कामयाब होने के लिए, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का समझदारी से नित्य प्रति अध्ययन करते हुए उसमें विदित विचारों को अविलम्ब अमल में लाना आरम्भ कर दो। यही नहीं, अपने हृदय को प्रकाशित कर, अपना वास्तविक स्वरूप जानने हेतु प्रणव अर्थात् शब्द ब्रह्म/मूलमंत्र आद् अक्षर को अपना गुरु मान, अपनी सुरत को ध्यान से अजपा जाप द्वारा उस अनवरत गुंजायमान नित्य शब्द ब्रह्म के साथ जोड़ो। इस तरह अपने ख़्याल को हर तरफ से समेटकर यानि एकाग्रचित्त करके, अफुर अवस्था में आ, अपनी सर्वव्याप्त महान ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने का भरसक प्रयास करो। निःसंदेह ऐसा करने से जो संदेश उस अजपा ध्वनि के माध्यम से प्रसारित हो रहा है उसे धारण कर, परिपूर्ण सचेतन अवस्था को प्राप्त हो जाओगे और हृदय वेद विदित आध्यात्मिक ज्ञान स्वतः ही प्राप्त होना आरम्भ हो जाएगा। फलतः ब्रह्म और जीव के खेल की रमज़ जान आत्मतुष्ट हो जाओगे और मन को पूर्ण संतोष प्राप्त हो जाएगा।

याद रखना ऐसा हितकारी उद्यम दिखाने पर ही, जगत में आते समय, भक्त वत्सल परब्रह्म परमेश्वर को जो प्रतिज्ञा दी थी, उसे एक विद्वान इंसान की तरह, उचित परिश्रम दिखाकर, समयबद्ध पूरा कर सकोगे और उनकी कृपा प्राप्ति के उचित पात्र बन यानि शब्द ब्रह्म विचार धारण कर, उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो जाओगे। इस पात्रता को प्राप्त कर, परमेश्वर के सत्यनिष्ठ व कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र कहलाने हेतु सजनों सदा याद रखना कि इस अनमोल मानव चोले के प्राप्त होने के पश्चात, आप इस जगत में सब कुछ परमेश्वर के हुक्म अनुसार उन्हीं के निमित्त समर्पित भाव से करने हेतु वचनबद्ध हो और आपके लिए मनमत अनुसार आत्मीयता के प्रतिकूल आचार-विचार अपनाना

व व्यवहार दर्शाना वर्जित है। अतैव जीवन की हर परिस्थिति में, प्रतिज्ञा के अनुकूल समवत् आचार-विचार व व्यवहार दिखाना सुनिश्चित करना और ए विध् निरंतर परमार्थ के रास्ते पर सुदृढ़ बने रह अपने जीवन का अर्थ सिद्ध कर लेना।

इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें जो-जो कुदरती ग्रन्थ और पुस्तकें युग-युग में आ रही हैं, उनमें वर्णित दो प्रकार के भक्ति भावों यथा बाल अवस्था की युक्ति और भक्ति व युवावस्था की युक्ति और भक्ति की, एक विवेकशील इंसान की तरह परख करने का निर्देश दे रहा है ताकि हम इन दोनों प्रकार की भक्तियों के औचित्य यानि पारस्परिक गुणों व मूल्यों के अंतर को समझने के पश्चात् ही, जो हितकर हो व सरल और सहज हो, उस भक्ति भाव को अपना कर अपने स्वभाव के अंतर्गत कर सकें और जीवन के विचारयुक्त सवलड़े मार्ग पर प्रशस्त हो सकें।

इस संदर्भ में सजनों इस परख के दौरान हम कलुकालवासियों से कोई भूल न हो जाए इस हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ इनके पारस्परिक भेद व होने वाली प्राप्ति को स्पष्टतया अभिव्यक्त करते हुए कह रहा है कि 'बाल अवस्था की भक्ति है नाम चलाना और ध्यान लगाना। यह बुद्धि थोड़ी अनजानपने के कारण नचनी टपनी होती है तथा युवा अवस्था की भक्ति है, समभाव-समदृष्टि की युक्ति। इस में एक तो बल की प्राप्ति होती है और दूसरा शक्ति ताकतवर हो जाती है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर दें कि बाल अवस्था की भक्ति जहाँ द्वि-भाव/स्वार्थ सिद्धि के भाव की प्रधानता के कारण आडम्बर व कर्मकांड युक्त होती है और मन-चित्त व बुद्धि को चंचल बना अन्दरुनी वृत्ति को कमज़ोर बनाती है, वहीं युवावस्था की भक्ति शाश्वत सत्य, निष्कामता व समभाव पर आधारित होने के कारण, तमाम आडम्बरों व कर्मकांडों से स्वतन्त्र होती है और मन-चित्त व बुद्धि को क्रमशः स्थिर, एकाग्र व निर्मल बना अन्दरुनी वृत्ति को सशक्त बनाती है। उपरोक्त कारण से ही बाल अवस्था के भक्ति भाव को अपनाने वाले इंसान का मन द्वैत व द्वेष भाव से मुक्त नहीं हो पाता व उसके स्वभावों का टैम्प्रेचर घटता-बढ़ता रहता है। इसके विपरीत युवावस्था का सशक्त भक्तिभाव अपनाने वाला, 'ईश्वर है अपना आप' इस सत्य को स्वीकार, अजर-अमर-अडोल व निश्छल पद को प्राप्त कर, एक आत्मज्ञानी की तरह परमार्थ के रास्ते पर सुदृढ़ बना रह, अपना नाम रोशन करने में

कामयाब हो जाता है।

सजनों इन दोनों प्रकारों के भक्ति भावों का परिचय प्राप्त होने के पश्चात् हमारे लिए बनता है कि हम सभी सजन युवावस्था का ताकतवर भक्ति-भाव अपना लें यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति को धारण कर आत्मिक बल को प्राप्त कर लें। इस तरह एक समर्थवान, पराक्रमी इंसान की तरह, आत्मविश्वास के साथ अपनी जीवनी शक्ति का उचित प्रयोग करते हुए, इस मायावी जगत में हर काम निष्कामता व निपुणता से सिद्ध करने के योग्य बनें। सजनों जानो ऐसा करने पर ही अपने कुसंगी संकल्प को संगी बना, संतोष, धैर्य और सच्चाई, धर्म के सवाल हल कर, समभाव को नज़रों में कर, समदर्शिता अनुरूप सजन भाव का व्यवहार करने में सक्षम हो पाओगे और परस्पर एकता, एक अवस्था में बने रह, जीवन का आनन्द मानते हुए, परमानन्द को प्राप्त कर सकोगे।

अंततः सजनों यह सब जानने-समझने के उपरांत अगर दिल में, अमरता की प्रतीति कर परमानन्द प्राप्त करने हेतु प्रबल रुचि पैदा हुई है तो अविलम्ब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम-युक्ति की प्रवानगी द्वारा अपने मस्तक की ताकी खोल लो और अपने अविनाशी स्वरूप के दर्शन कर समस्त इच्छाओं/वासनाओं से मुक्त हो जाओ। इस तरह अपने मन में अपार शांति, आनन्द और संतोष का अनुभव करते हुए, एक आत्मतृप्त इंसान की तरह आत्मीयता के भाव से युक्त होकर, यथार्थता से जीवन जीना आरम्भ कर दो। निःसंदेह इस हेतु सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में निर्मल प्यार रखते हुए, उन पर अपना सर्वस्व बलिहार यानि निछावर करने के लिए तत्पर होना होगा और उनका निष्काम भक्ति भाव अपनाना होगा। तो सजनों क्या सभी ऐसा करने के लिए तैयार हो जी?

हाँ जी।

यदि ऐसा ही है तो फिर इस नेक काम का शुभारंभ करने में देरी कैसी? आओ तत्क्षण ही जीवन बनाने हेतु, आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार करने के प्रति दृढ़ संकल्पी हो जाएं यानि सहर्ष अपना शीश प्रभु चरणों में समर्पित कर, वैराग अवस्था को धारण

करें। इस प्रकार शांति-शक्ति का हथियार हाथों में पकड़, समस्त झगड़े-बखेड़ों से निरपेक्ष हो, जन्म जन्मांतरों से लगी प्रभु मिलन की पिपासा को, अपने शाश्वत परमात्म स्वरूप के दर्शन से बुझा, परमपद पा लें और अपना सोया भाग्य जगा लें। सजनों परम पुरुषार्थ द्वारा इस भाग्य को जगाने हेतु ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हम सब सजनों को इस भजन के माध्यम से आवाहन दे रहा है:-

आओ भज भज के, आओ सज धज के,
दर्शन पावां महाबीर रघुनाथ जी दा रज रज के।
महाबीर जी देओ मैंनूं दीदार, सांवले चरणां नाल प्यार।
जावां चरणां तों बलिहार, दर्शन दिखा दिओ रज के।।
जी मैं बिस्तरा खूब बिछावां, उत्ते सिया राम लषण नूं बहलावां।
सांवले चरणां दा चरणामृत, पिला दिओ रज रज के।।
खोलो मस्तक दी ताकी, दिखा दिओ रघुनाथ जी दी झांकी।
मिला दिओ मैंनू तुसी अविनाशी, दर्शन दिखाओ रज के।।
खोलो मस्तक दी बारी, मिला दिओ रघुनाथ बिहारी।
जावां चरणां तों बलिहारी, दर्शन दिखा दिओ रज के।।
मैं दासी खड़ी उदासी, दर्शन दिखाओ मेरे अविनाशी।
तेरे दर्शन दी प्यासी, दर्शन दिखाओ रज के।

सजनों अब जब जन्म की बाज़ी जीत सुनिश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने हेतु सुमतिवान, चारों वेदों के महरम, सब से श्रेष्ठ, सब से विद्वान, सब से गुणवान, सब से बलवान, सब से धनवान, सब से बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग बने रहने का निश्चय ले ही लिया है तो हमारे लिए बनता है कि हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार अब तक जो भी परमार्थी विद्या/पढ़ाई की है उसकी दोहराई करना सुनिश्चित करें ताकि शब्द ब्रह्म विचार हमारी स्मृति में अच्छी तरह से बैठ जाएं और हम गुढ़ाई के समय उन विचारों के गूढ़ अर्थ को समझते हुए, उन्हें आत्मसात् करने व समदृष्टता से उनका व्यवहार करने में दक्ष हो सकें। याद रखो ऐसा करने पर ही हम एक आत्मज्ञानी की तरह समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार परस्पर सजन-भाव का व्यवहार करने में निपुण हो सकेंगे और विचार, सत्-

ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था को धारण कर आत्मविजयी हो जाएंगे। सजनों इस आत्मविजय को प्राप्त करने हेतु ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

हिम्मत दिखाई ओ जावो हिम्मत वधाई ओ जावो।
हिम्मत न हारनी ओ बेटा, हिम्मत बढ़ाई ओ जावो।।

अंततः हम तो यही कहेंगे कि हमेशा, इस सत्य को मानते हुए कि जीवन के इस परम पुरुषार्थ की सिद्धि हेतु परमेश्वर सदा हमारे साथ है, कदाचित् जीवन की किसी भी परिस्थिति में हिम्मत न हारना।

क्या सब ऐसा करने हेतु तत्पर हो ?

हाँ जी।

तो फिर आओ इस हेतु एक अभ्यास करते हैः-

1. सर्वप्रथम सारे यथास्थान खड़े हो जाओ और अपने मन में अमरत्व प्राप्त करने की प्रबल इच्छा पैदा करो यानि अपने आप को मानसिक रूप से तैयार करो कि कुछ भी हो जाये अब मैं किसी भी हालत में नहीं रुकूँगा। चाहे इस हेतु मुझे कुछ भी त्यागना पड़े, मैं वह त्यागने से भी नहीं सकुचाऊँगा।

2. अब यह मानो कि हम जो भी प्राप्त करने जा रहे हैं, उस प्राप्ति के पश्चात् और कुछ प्राप्त करने की इच्छा अन्दर रहती ही नहीं यानि हम अमीरों के भी अमीर बन आत्मतुष्ट होने जा रहे हैं। उस अमीरी को प्राप्त करने के लिये हमें भरपूर मेहनत करनी है। जानो ऐसा करने से आपके मन को पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो जायेगा और आप ताकतवर होकर निर्भयता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकोगे।

3. इस प्रकार सजनों धीरता से अपने मानसिक सन्तुलन को बनाये रखते हुए अपनी दृष्टि को लक्ष्य पर स्थिर करो। जान लो कि जब हमारी दृष्टि इधर या उधर होती है तो लक्ष्य के प्रति हमारे दृष्टिकोण में खलल उत्पन्न हो जाता है क्योंकि फिर जो हमने इधर-उधर देखा है हम उसी में ही अटक जाते हैं और हमारा ख़्याल उसी विषय का चिन्तन

करने लग जाता है। परिणामतः जीवन लक्ष्य दृष्टि से ओझल हो जाता है और हम संसार में भटक जाते हैं। ऐसा न हो इस हेतु निर्धारित लक्ष्य पर टकटकी लगाये रखो। इसी से एकाग्रचित्त होंगे और ख़्याल व ध्यान, लक्ष्य पर निरंतर एकरस ठहरा रहेगा। सजनों यही एकमात्र तरीका है, जिसके द्वारा दिल और दिमाग़ सन्तुलित रहता है और लेशमात्र भी फुरना अन्दर घर नहीं कर पाता। याद रखो फुरने का अन्दर घर करना मृत्यु को आवाहन देना है। यह हार का प्रतीक है। इसके विपरीत अफुर अवस्था का जो जीवन है वह विजय प्राप्ति का प्रतीक है।

4. विजय प्राप्ति हेतु सजनों अब अक्षर चलाना आरम्भ कर दो ताकि जिस विजय पथ पर प्रशस्त होने जा रहे हो उसे प्रकाशित कर सको। अब अपना ख़्याल ध्यान वल स्थिर कर लक्ष्य की तरफ टिका लो। इसी सचेतन अवस्था में बने रह अब सब सुरतें आगे लक्ष्य की ओर बढ़ना आरम्भ कर दो ताकि रास्ते में आने वाले कंटक भी आपको लक्ष्य की ओर बढ़ने से रोक न पायें। सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने हेतु सजनों अक्षर निरन्तर चलाना मत भूलो।

5. अब सब सुरतें अपने सच्चे घर में प्रवेश करो। यहाँ पहुँच कर देखो कि क्या आप अभी भी अलग-अलग नज़र आ रहे हो या एक हो गए हो? सजनों इसी रहस्य को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है।

6. इस संदर्भ में सजनों हम चाहते हैं कि जब भी आप इस शरीर रूपी घर से आज़ाद होवो तो इधर-उधर भटको नहीं अपितु अपने सर्वसांझे घर परमधाम में पहुँच कर विश्राम को पाओ। इस सच्चे घर में प्रवेश करने हेतु सजनों अपने मन-मस्तिष्क व शरीर का संतुलन साधो। अगर यह संतुलन साध लिया तो आपका ख़्याल स्वच्छ व मजबूत हो जाएगा और कदम सीधा घर की ओर बढ़ेगा। इस के प्रति सजनों कदाचित कमज़ोर मत पड़ो अपितु चेहरे पर मुस्कुराहट व हृदयगत प्रसन्नता के साथ आगे कदम बढ़ाओ। याद रखो यदि एक बार घर में प्रवेश कर गए तो एक जोत में ही समा जाओगे और परमानन्द को प्राप्त कर लोगे।

7. इस आनन्द की प्राप्ति कर घर में स्थिर बने रहने हेतु सजनों अब किसी भी रविवार

क्लास मिस नहीं करना अपितु निर्धारित समय पर सत्संग में पहुँचना। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि कुदरत के नियमानुसार प्रत्येक कार्य नियत समय अनुसार निर्धारित ढंग से ही होता है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों अब नश्वरता का भाव छोड़, नित्यता का भाव अपनाकर घर की ओर बढ़ने का समय आ गया है। अतः वक्त की नज़ाकत को समझते हुए सब सजन बन जाओ। याद रखो जब सब सजन बन गए तो साजन परमेश्वर आपको अपना लेंगे और सब कुछ अर्थात् त्रिलोकी का राज दे देंगे।

इस तरह जीवन यज्ञ
निर्विघ्न सम्पन्न होगा और सुरत अपने घर
परमधाम पहुँच विश्राम को पाएगी।
आप सब ऐसा करने में कामयाब होवो इस
हेतु हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

दिनाँक 8 अप्रैल 2018 का सबक़

अमरपद प्राप्ति हेतु विनती

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात्
ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात्
ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि गत सप्ताह हमने जाना कि अमरपद की प्रतीति करने हेतु दिल से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग करना अनिवार्य है। इसी सन्दर्भ में आओ आज इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने हेतु, अपने दोषों को स्वीकार, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे करबद्ध होकर, ठीक उसी प्रकार समर्पित भाव से विनती करें जिस विशुद्ध भाव से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत इस भजन में सच्चेपातशाह जी ने की और उन द्वारा प्रदत्त युक्ति का अनुशीलन कर समदृष्टि हो गएः-

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी।
काम क्रोध हैं दुश्मन भारी, इनको मार मुकाओ महाबीर जी।
शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, नारद जी वी बीन बजावे महाबीर जी।
शेष गणेष तुहाडा हर जस गावे, इन्द्र वी दिल विच हर्षावे महाबीर जी।
तुलसी दास तुहाडा ध्यान लगावे, विभीषण नूं अमर बनाया महाबीर जी।
लंका जीत अयोध्या नूं आवन, भरत नूं राम मिलाया महाबीर जी।

दिन रात भैणों तुसी नाम ध्यावो, गदा महाबीर जी दा हृदय विच वसाओ।
दुष्टां नूं मार मुकाया महाबीर जी, सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी।
मैं दासी नूं समदृष्टि कर देओ, भवसागर से पार उतारो महाबीर जी।
सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी।

भावार्थ

सजनों इस भजन के अंतर्गत आध्यात्मिकता से भटका हुआ यानि अपने आत्मस्वरूप को न जानने वाला, जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँसा हुआ कलियुगी जीव, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को अपनी दशा बताते हुए कहता है कि मैं माया रूपी अविद्या के कारण भौतिक सुखों को ही जीवन का सुख समझ ऐसी दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति को प्राप्त हो चुका हूँ कि अब ऐश्वर्य के समस्त साधन उपलब्ध होते हुए भी मुझे यह संसार दुःखमय और सूना लगने लगा है। संसार के साथ जुड़ने के कारण मुझे संसार की हवा लग गई है जिसके दुष्प्रभाव से मैं स्वार्थी यानि छली हो गया हूँ। इस संसार में मैं अब जो भी बनाता हूँ, इसी मायारूपी अविद्या नामक शक्ति के आश्रय से ही बनाता हूँ। इससे मेरे मन की शांति भंग हो गई है और मेरे मन में काम, क्रोध रूपी दुश्मन यानि मनोविकार घर कर गए हैं। इन्हीं काम-क्रोध के दुष्प्रभावों से मैं विषय-वासना के प्रति इस प्रकार आकर्षित हो चुका हूँ कि मेरे मन-मस्तिष्क पर मनोरथ सिद्धि की इच्छा हावी हो गई है और मैं जैसे-तैसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के स्वभाव में फँस स्वार्थी हो गया हूँ। वह कहता है कि हे महाबीर जी ! काम भावना के कारण होने वाली व्यथा यानि पीड़ा मुझसे सहन नहीं होती व मैं निरंतर इस काम अग्नि में जलता रहता हूँ। काम प्रवृत्ति यानि सुख चाहने की इसी मानसिक वृत्ति ने मुझे कामनायुक्त बना दिया है इसीलिए तो मैं विवेकहीन हो व्यभिचार यानि कुकर्म-अधर्म करने लगा हूँ और पतित होता जा रहा हूँ। यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह अपराध है तथापि मैं कामनाओं की पूर्ति का इतना विषयी हो चुका हूँ कि अब मेरी रुचि कामवासना बढ़ाने वाले भावों, दृश्यों, बातचीत, साहित्य आदि में ही पनपती है। इस तरह इस काम वासना की प्रबलता के कारण मुझे भले-बुरे का ज्ञान तक नहीं रहा है और निष्काम कर्म करने की बजाय अब मेरी कर्म फल में आसक्ति हो गई है। इसीलिए तो अब मैं जो भी करता हूँ, कर्म फल प्राप्त करने हेतु ही

करता हूँ। हर क्रिया के पीछे मेरा मकसद किसी तरह से अपना काम निकालना यानि अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है यानि यही स्वार्थ ही अब मेरे व्यवहार व उपयोग का हेतु है। स्वार्थ सिद्धि के अतिरिक्त अब अन्य किसी बात से मेरा सम्बन्ध नहीं। इसलिए तो मैं मनमत पर चलने वाला स्वेच्छाचारी इंसान बन गया हूँ।

आगे अपनी हालत बताते हुए वह जीव कहता है कि हे महाबीर जी ! कामना पूर्त्ति न होने के कारण मेरे अन्दर क्रोध रूपी तीक्ष्ण मनोविकार उत्पन्न हो गया है। इसीलिए मेरे मन में किसी के अनुचित व्यवहार या काम से, उसके कर्त्ता या किसी अन्याय पूर्ण करूर अपमान जनक स्थिति के प्रति, तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं। इसके वशीभूत होकर ही मैं किसी से नाराज़ हो, ऊँचे क्रोध भरे स्वर में बोलता हूँ और कभी खुद आवेश से व्याकुल हो एक अंधे व्यक्ति जैसा आचरण कर बैठता हूँ। स्पष्ट है कि उस समय मैं उचित-अनुचित को नहीं समझ पाता। इस तरह यह क्रोध का स्वभाव मेरे स्वभाव के अंतर्गत हो गया है। तभी तो मुझे अब बिना विशेष बात के यानि अकारण ही क्रोध आ जाता है और कभी-कभी क्रोध का भयानक दौरा भी पड़ता है। इन्हीं कारणों से मैं दयाहीन हो हिंसापूर्ण, भयानक व नीच कार्य करने से भी नहीं सकुचाता यानि मेरे स्वभाव में ही दुष्टता भर गई है। वह जीव कहता है कि चूँकि इस तरह मेरा मन काम, क्रोध और लोभ के वश में हो चुका है इसी कारण मेरे मन में अब किसी के भी प्रति अनुराग सहजता से पनप जाता है और मैं उस विषय-वस्तु के साथ जुड़, मोह बंधन में फँस जाता हूँ। फलतः मैं 'ब्रह्म हूँ' के भाव से भटक 'अहं भाव' का अविचारी चलन अपना चुका हूँ।

आगे वह जीव कहता है कि हे महाबीर जी ! यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह संसार नश्वर है व निरन्तर रूप बदलता रहता है यानि कामना योग्य नहीं तथापि अज्ञानवश इससे जुड़ कर मैं आत्महत्या करने के समान दुष्कृत्य कर रहा हूँ। अतः हे महाबीर जी ! मैं कहीं इस संसार सागर में भटक न जाऊँ इसलिए मेरी आप से प्रार्थना है कि इन काम-क्रोध रूपी दुश्मनों को मार मुकाओ ताकि मुझे अब से यह द्वि-द्वैत, ईर्ष्या-द्वेष, तेरी-मेरी, वैर-विरोध, मान-अपमान, अपना-पराया, संयोग-वियोग आदि न सताए और मैं सहजता से इस भवसागर को पार कर अपने जीवन लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकूँ ।

इस सन्दर्भ में वह आगे इस कीर्तन के अंतर्गत सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के

विशेष बल व बुद्धि की उपमा करते हुए कहता है कि हे महाबीर जी ! आप सबसे श्रेष्ठ, सबसे विद्वान, सबसे गुणवान, सबसे बलवान, सबसे धनवान, सबसे बुद्धिमान व सारी दुनियां विचों ज्ञानवान हो इसीलिए तो शिव-ब्रह्मा भी आपका ध्यान लगाते हैं। नारद-शारद, शेष-गणेश आप का यश गाते हैं। यहाँ तक कि देवताओं का राजा इन्द्र भी आपका दर्शन कर दिल में हर्षाता है। यही नहीं महाबीर जी ! तुलसीदास जी ने तो आपका ध्यान लगा कर 'रामचरितमानस' जैसे महान ग्रन्थ की रचना ही कर दी व राक्षसी कुल में जन्मे विभीषण ने आप द्वारा प्रदत्त मंत्र प्राप्त कर अमर पद प्राप्त किया। इसी तरह रावण की लंका पर विजय प्राप्ति के उपरान्त आपने भरत और राम का पुनः मिलन करा दिया।

अतः हे बलधारी ! जिस तरह आप ने विभिन्न युगों में सबकी बिगड़ी सँवारी उसी तरह अब मेरी डूबती नैय्या को भी इस भवसागर से पार उतारने हेतु मेरे ख्याल को इधर-उधर भटकने से बचा लो। इस तरह काम-क्रोध रूपी दुष्टों को मार मुका कर, महाबीर जी ! मेरे मन को एकाग्रचित कर दो ताकि मैं दिन-रात आप द्वारा प्रदत्त नाम-ध्यान की युक्ति प्रवान कर, अपने असलियत स्वरूप में जुड़े रह, स्वयं को परिपूर्ण पाऊँ। हे महाबीर जी ! इस प्रकार मेरे हृदय को शांति-शक्ति से भरपूर कर, समदृष्टि का सबक़ प्रदान करो। ताकि मेरे अन्दर समदृष्टि होने का भाव पनपे और मैं सबको समान समझ सकूँ। हे महाबीर जी ! मुझे सब को समान दृष्टि से देखने योग्य बना दो ताकि मैं किसी से किसी प्रकार का भेद भाव न रखूँ व इस तरह राग-द्वेष रहित हो जाऊँ। मैं सबका हो जाऊँ और सब मेरे हो जाएं। इस तरह मैं स्वार्थपर अविचार चलन से हट, पुनः परमार्थ के रास्ते पर बने रहने के योग्य बन जाऊँ। हे महाबीर जी ! मेरी यह बेनती स्वीकार करो जी और इस तरह मुझे इस भवसागर से पार उतारो जी।

सजनों क्या यह सब सुनने के पश्चात् आपके अन्दर भी भवसागर से पार उतरने की तीव्र इच्छा पैदा हुई है ?

हाँ जी।

तो फिर अहंता-ममता छोड़कर इस शरीर, इन्द्रियों, मन व बुद्धि से ऊपर उठो और

अपने वास्तविक आत्म स्वरूप की पहचान कर, निष्काम कर्म करने वाले सच्चे योगी बनो। इस हेतु खुद को समझाओ कि सुख भोगने के लिए स्वर्ग है तथा दुःख भोगने के लिए नरक है और सुख-दुःख इन दोनों से ऊपर उठकर महान आनन्द व अमर पद प्राप्त करने यानि अपने सच्चे घर परमधाम में पहुँच विश्राम पाने के लिए ही मैं इस मनुष्यलोक में आया हूँ। अतः जब तक मैं इन्द्रिय-विषयों में लिप्त हो इस संसार के नाशवान सुख भोगता रहूँगा तब तक अविनाशी परमानंद की प्राप्ति नहीं कर सकूँगा यानि जब तक नाशवान वस्तुओं में सत्यता दिखती रहेगी तब तक आत्मबोध नहीं कर पाऊँगा। आत्मबोध करने हेतु तो मुझे राग-द्वैष, वैर-विरोध, मान-अपमान, तेरी-मेरी युक्त असत्य-भावों को त्याग कर, पूर्ण निष्ठा, लगन व सत्यता से समभाव व सजन भाव अपनाना होगा। इस तरह आचार-विचार व व्यवहार की शुचिता सुनिश्चित करते हुए, मन को प्रभु में लीन रखना होगा और निरासक्त, निर्विकारी जीवन जीना सुनिश्चित करना होगा। ऐसा होने पर ही यकीन मानो हकीकत में इस मानव चोले का प्रयोजन सिद्ध कर जीवन का वास्तविक आनन्द उठा पाओगे।

सजनों आप सब ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु यकीनन आपको सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के गुणों को आत्मसात् कर, उन जैसा उत्कृष्ट जीवन चरित्र बनाना होगा। आपकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह हम सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के गुणों से परिचित हो, इसी विषय में बातचीत करेंगे।

दिनाँक 15 अप्रैल 2018 का सबक़

अमरपद प्राप्ति हेतु सजन
श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे प्रार्थना

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

जैसा कि यह सत्य सर्वविदित ही है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही सबसे श्रेष्ठ, सबसे विद्वान, सबसे गुणवान, सबसे बलवान, सबसे धनवान, सबसे बुद्धिमान व सारी दुनियां विचों ज्ञानवान हैं। वह ही चार वेद, छः शास्त्रों के महरम व कुदरती साईंस के श्रेष्ठतम साईंसदान हैं तथा युग-युग में प्रभावी होने वाली धर्मनाशक शक्तियों का अपने बल, बुद्धि एवं पराक्रम द्वारा विनाश कर, पुनः धर्म की स्थापना करने वाले हैं। इतना ही नहीं सजनों वह ही समभाव-समदृष्टि की सूक्ष्म युक्ति व शब्द गुरु का मंत्र बताकर, ख़्याल का सम्पर्क सीधा नित्य के साथ जोड़ने वाले हैं और इस तरह विभिन्न निमित्त रूपों व सेवक-स्वामी, भक्त-भगवान व गुरु-चेले वाले बाल-अवस्था के द्वि-भाव युक्त भक्ति-भावों के बंधन से मुक्त करा, निष्कामता से अपने असली घर परमधाम पहुँचने का सुगम मार्ग दर्शाने वाले हैं। सजनों उन अजर-अमर हस्ती द्वारा बक्षा हुआ नाम-ध्यान, युक्ति व विचार अतुलनीय है क्योंकि इसी के द्वारा वह अपने प्यारों को प्रतिबिम्ब का नज़ारा दिखा, अजर-अमर बनाने वाले हैं व उनका जन्म-मरण मिटा मौत के भय से मुक्त कराने वाले हैं।

सजनों हम यह भी जानते हैं कि सर्वमहान वैद्यों के वैद्य सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही मनमत से बचा गुरमत की खैर पा, घर-घर में लगी तृष्णा की आग को नाम रूपी वर्षा द्वारा बुझा, पाँचों विषय-विकारों से छुटकारा दिला, हौं-मैं का रोग हटा, संकल्प-विकल्प से छुटकारा दिला, तीनों तापों को मिटा, कर्म-बन्धनों को काटने वाले हैं तथा वह ही सबकी आस पुजा, तमाम संशय-भ्रम मिटा, चिर स्थाई शान्ति प्रदान कर जीवन मुक्त बना, भव-सागर से पार लगाने वाले हैं। यही नहीं वह उच्च सुमति वाले यानि मति और बुद्धि के भण्डार ही, सबकी मति, बुद्धि और प्रेरणा को सावधान बना, सुमति बक्षने वाले हैं और अज्ञान का बादल हटा शब्द-सुरति का मेल कराने वाले हैं। इस तरह वह पातशाहवाँ दे शाह ही, रोते हुओं को हँसा, उजड़े हुओं को बसा, गिरते हुओं को उठा, सोए हुओं को जगा व कुरस्ते पड़े हुओं को रास्ते पर ला, उनकी लाज बचाने वाले हैं यानि बिगड़ी सँवारने वाले हैं।

स्पष्ट है सजनों वह दुःख भंजन परमपिता ही अपनी सूझ-बूझ से सभी उलझनों व संकटों को मिटा, तमाम विपत्तियों का हरण कर, झगड़े मिटाने वाले हैं व गुप्त प्रकट होकर अकर्त्ता रूप में जगत के सारे कारज सिद्ध करने वाले हैं। यह जानते समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि जो अजीत, रणधीर, जगदीश, रहीश, प्रतिपालों के प्रतिपाल व भक्ति एवं शक्ति के राजे हैं व जिनके बल और तेज के सामने सारी सृष्टि काँपती है और जिनकी लीला का अंत शेष गणेष भी नहीं पा सकते, उन बलधारी, ब्रह्मचारी, संकटटारी, असुरसिंहारी, जगत भंडारी, भक्त हितकारी, परोपकारी, गदाधारी, तेजधारी, न्यायकारी, शहनशाहों के शाह को प्रसन्न कर, तदनुकूल ढलने के लिए, प्रतिदिन उनके प्रति अपनी श्रद्धा, सम्मान, विनय आदि प्रकट करने का कृत्य नतमस्तक हो पूर्णतः समर्पित भाव से झुकाव में आकर करें। आओ अपने आराध्य तुल्य बन, अपना परमार्थ व स्वार्थ दोनों ही सँवारने हेतु प्रतिदिन हमने यह क्रिया कैसे सम्पन्न करनी है, इसकी विधि जानते हैं:-

सब सजन शांत हो जाओ और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त करने हेतु, सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की परम पावन, सुन्दरता से परिपूर्ण सशक्त चारित्रिक छवि का अपने हृदय में अनुभव करते हुए उनके आगे नतमस्तक हो करबद्ध प्रार्थना करो:-

धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सब तों श्रेष्ठ, सब तों विद्वान, सब तों गुणवान, सब तों बलवान, सब तों धनवान, सब तों बुद्धिमान, सारी दुनियां विचों ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

सजनों इस प्रार्थना में वर्णित सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की प्रमुख विशेषताओं को अर्थ सहित समझो और जानो कि इस के माध्यम से, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आपको किस प्रकार उस सर्व महान तेजस्वी की ही तरह, अपनी भावात्मक व स्वाभाविक चारित्रिक छवि को उज्ज्वल, निर्मल, ओजस्वी व असीम सुन्दर बनाने का निर्देश दे रहा है:-

श्रेष्ठ अर्थात् निज ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर, अंतर्निहित सर्वोत्तम विष्णु स्वरूप को उजागर करने हेतु आप अपने अन्दर उत्तमता यानि सजनता का भाव विकसित कर सर्व कल्याणकारी बनो व इस तरह सजन युग की बुनियाद पक्की कर दो।

विद्वान अर्थात् आत्मा का स्वरूप जान, आप परमात्मा की सर्वज्ञता का बोध करने वाले बनो व इस तरह तदनुरूप यथार्थता से विचारयुक्त जीवन जीना सुनिश्चित करो।

गुणवान अर्थात् अपनी यथार्थ पहचान करने हेतु आप गुण और दोष का विचार करते हुए, अंतर्विद्यमान गुणों को जान-परख कर, एक सजन पुरुष की तरह, अच्छे स्वभावों में ढलते हुए, उन सद्गुणों का प्रयोग करने की कला में पारंगत बनो व इस तरह यश-कीर्ति प्राप्त करो। इस प्रकार प्रकृति के सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों पर प्रभुत्व रखते हुए परमात्मा की तरह निर्वैर, निर्भय, निरासक्त, निर्विकार, निष्कलंक जीवन जीने के योग्य बनो।

बलवान अर्थात् ताकतवर बन आप शंख चक्र गदा पद्मधारी श्री विष्णु भगवान की तरह दृढ़ता व निर्भयता से हर कार्य सिद्ध करने में समर्थ बनो। इस प्रकार एक कर्त्तव्यपरायण इंसान की तरह अपना सबके प्रति फ़र्ज़ अदा हँस कर करते हुए अपना घर सतयुग बना लो।

धनवान अर्थात् शब्द ब्रह्म विचारों के ग्रहण द्वारा परमार्थी धन से सम्पन्न हो आप संतोषी इंसान की तरह, धीरता से सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर निषंग बने रहने में समर्थ बनो व इस तरह हर प्रकार की कामना व लालसा से मुक्त रह सदा प्रसन्नचित्त व शांत बने रहो।

बुद्धिमान अर्थात् एक समझदार इंसान की तरह आप चेतनायुक्त जीवन जीते हुए, एकता व एक अवस्था में आजीवन स्थिर बने रहो व इस तरह विषयमुक्त हो, हर प्रकार के बुद्धिभ्रम व बुद्धिभ्रंशता से छुटकारा पा, आनन्द से अपनी जीवन यात्रा सम्पन्न करो यानि परमधाम पहुँच विश्राम को पा लो।

ज्ञानवान अर्थात् एक आत्मज्ञानी की तरह, आप अपने मन या विवेक में ब्रह्म, आत्मा और ईश्वर आदि के सम्बन्ध के सच्चे और यथार्थ ज्ञान का बोध रखते हुए, ब्रह्मज्ञानी बनो व इस तरह आत्मविश्वास के साथ दिव्य दृष्टि का सबक़ प्राप्त कर आवागमन से मुक्त हो जाने का पराक्रम दिखाओ।

सजनों अब जब हमें यह समझ में आ गया है कि प्रतिदिन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की प्रार्थना को करने का भावाशय क्या है, तो यह जानने के पश्चात् हमारे लिए बनता है कि हम अर्थों सहित उनके इन विशेष गुणों को, अन्दरुनी वृत्ति में ग्रहण करें व इस तरह युक्ति अनुसार उन जैसे ही सदाचारिता के प्रतीक भाव-स्वभाव अपना कर, अपनी बैहरुनी वृत्ति अर्थात् मन-वचन-कर्म द्वारा, उन गुणों को अपने व्यवहारिक रूप में, यथा प्रकट करने का दृढ़ संकल्प लें।

जान लो यदि एक दृढ़ निश्चयी की भांति सुदृढ़ बने रह, इस संकल्प पर पूरी तरह से खरे उतरें तो मन में किसी प्रकार का यानि आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक ताप यानि दुःख नहीं उपजेगा। फलतः आधि-व्याधि से स्वतन्त्र रह आजीवन तन्दुरुस्त, निरोगी व सशक्त बने रह, एक अवस्था में सधे रहोगे। आशय यह है कि फिर अखंडता से अपनी सुरत यानि ख़्याल को शब्द अर्थात् परमतत्त्व के संग जोड़े रख, सचेतन बने रहोगे और अपने वास्तविक स्वरूप, ज्ञान व शक्ति का अनुभव कर पाओगे। इस तरह फिर अपने परमार्थिक दिव्य स्वरूप का अनुभव करने पर हमारे अन्दर दैविक व भौतिक

शक्तियों की शरणागत हो, तदनुसार जीवन जीने का तौर-तरीका अपनाने की कामना जाग्रत नहीं होती और हम 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव पर स्थिरता से बने रह, आत्मोद्धार करने हेतु, सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता अपनाने में सफल हो जाएंगे। फलतः मन सदा तुष्ट व शांत रहेगा और हम समबुद्धि हो अपनी विवेकशक्ति का सही अर्थों में इस्तेमाल करते हुए निर्बाध अपने जीवन का प्रयोजन सिद्ध कर लेंगे।

इसी उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों सच्चेपातशाह जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की उपमा करते हुए कह रहे हैं:-

उपमा कही न जाए महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
उपमा कही न जाए, उपमा कही न जाए।।
अंजनी माता पई हर्षावे, जिस लाल महाबीर पाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
राम लक्ष्मण को मिलने आये, ब्राह्मण रूप बनाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
राम लक्ष्मण नूं मोढियां ते चाके, सुग्रीव नूं जाके मिलाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
लंघ समुद्र लंका नूं जावन, विभीषण नूं मन्त्र सिखाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
सीता माता पई घबरावे, मुन्दरी जाए दिखाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
बाग उजाड़ लंका नूं साड़यो, राक्षस मार गिराए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,

महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
माता जी दा चूड़ामणि लिया के, रघुनाथ जी नूं सन्देशा पहुंचाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
ऋषि मुनि उपमा कर नहीं सकदे, रघुनाथ जी वी दिल में हर्षाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।
मैं दासी तुहाडे चरणां दी चाकर, ऋषि मुनि गुण गाये,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए,
महाबीर जी दी उपमा कही न जाए।।

दिनाँक 22 अप्रैल 2018 का सबक़

अमरपद प्राप्ति हेतु सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के आगे प्रार्थना

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के गुणों के संदर्भ में जो भी बातचीत हुई, उस सब पर गंभीर रूप से मनन व चिंतन करने के उपरांत क्या आपके दिल में भी वैसा ही गुणी व सुमतिवान बनने की इच्छा जाग्रत हुई है?

हाँ जी।

तो फिर आपको भी चाहिए कि जैसे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने अपने इष्ट सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के प्रति समर्पित भाव रखते हुए, उन के गुणों को धारण कर, युक्तिसंगत व्यवहार में ला अमर पद पाने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाया और फिर उन्हीं गुणों के प्रयोग द्वारा, समस्त संसार के ताप-संताप हरने में सक्षम बन, बलधारी, ब्रह्मचारी, असुर सिंघारी, तेजधारी, जगत हितकारी, पर उपकारी, न्यायकारी नाम कहाया, वैसे ही हम भी उन द्वारा प्रदत्त समभाव-समदृष्टि की युक्ति प्रवान कर, आत्मपद की प्रतीति करें और कर्त्तव्य परायणता की भावना से ओत-प्रोत हो निष्काम भाव से परोपकार कमाने का अद्‌भुत साहस दर्शाएँ।

इस संदर्भ में सजनों आओ, आज सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी के अजर-अमर, नित्य, परम स्वतंत्र, निरंजन, परमात्म स्वरूप का अपने हृदय में अनुभव करने हेतु विशुद्ध भावना से, नतमस्तक होकर उनको कोटि-कोटि प्रणाम करते हुए, उनकी प्रार्थना करें:-

आद् पुरुष, निरंकार, ज्योति स्वरूप, पारब्रह्म परमेश्वर भक्त वत्सल श्री रघुनाथ जी महाराज दोनों भुजा पसार कर धरूँ चरणों पर सीस मेरी कोट कोट प्रणाम।

सजनों अब इस प्रार्थना में वर्णित सजन दयालु श्री रामचन्द्र महाराज जी की प्रमुख विशेषताओं को अर्थ सहित समझो और जानो कि इस के माध्यम से, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आपको, किस प्रकार, अपनी भावात्मक व स्वाभाविक चारित्रिक छवि को बल, शील, संतोष, क्षमा, त्याग आदि जैसे सद्गुणों से सम्पन्न बना, सर्वश्रेष्ठ मानव बनने का निर्देश दे रहा है:-

आद् पुरुष अर्थात् अकर्त्ता तथा असंग चेतन पदार्थ जो प्रकृति से भिन्न तथा उसका पूरक अंग माना गया है। वे ही इस कारण जगत के मूल आधार तथा आदि कर्त्ता परमेश्वर हैं और आदि पुरुष यानि शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी - विष्णु रूपी परमशक्ति के रूप में, इस जगत की सर्वरूपेण पालना करते हैं। वे ही परमधाम के मूल निवासी हैं तथा अपनी इसी परिपूर्ण विशेषता व विराटता के कारण सर्व दर्शनीय हैं। इस आधार पर सजनों हम कह सकते हैं कि वे बेअन्त ही हकीकत में सबके श्रद्धेय व सर्वप्रथम सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी हैं और उनके ही ज्ञान और गुणों को धारण कर धर्म-कर्म द्वारा व्यवहार में लाना अनिवार्य है। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

जीव जन्तु प्रभु जी तेरे उपजाए, फुरने दे स्त्री पुरुष नज़र आए
सब स्त्रियाँ इक पुरुष हर थाईं बेअन्त बेअन्त बेअन्त गुसांई

अर्थात् नज़र आ रहे स्त्री-पुरुष सब फुरने के आकार हैं। हकीकत में तो सर्व एक ही आद् पुरुष की सत्ता है बाकी तो सब उसका प्रतिबिम्ब हैं यानि स्त्री रूप में उनकी सुरतें हैं, जिन्हें अपने इस कारण जगत में आने का प्रयोजन सिद्ध कर, भिन्न-भिन्न मिथ्या

आकारों की फिर-फिर प्राप्ति से छुटकारा पा व अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम प्राप्त करना होता है। यही जगत में आने के पश्चात् इंसान का सर्वप्रथम पालनीय कर्त्तव्य होता है।

सजनों उस परम पिता परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति होने के नाते, हम सब भी अपने मन को परमेश्वर में लीन रखते हुए एकरस सचेतन अवस्था में बने रह, इस उद्देश्य की पूर्त्ति कर सकें, इस हेतु हम मानवों के लिए बनता है कि हम उस आद् पुरुष परमात्मा के गुणों को समझें, परखें और उसके हुक्म अनुसार उनका प्रयोग करते हुए चरित्रवान बनें। इस तरह अपने असलियत ज्ञान स्वरूप का बोध रखते हुए, हम अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा, अंतर्निहित दिव्य गुणों को अमल में लाने का अदम्य पुरुषार्थ दिखा, उन का अलौकिक दर्शन सब को कराएं। सजनों याद रखो ऐसा करने पर ही हम मानव शारीरिक स्वभावों में उलझने के स्थान पर, विचारयुक्त हो, अपने हृदय को प्रकाशित रख सकते हैं व निष्कामता से अपने मिथ्या शरीर रूपी यंत्र सहित इस जगत की पालना कर, सर्वहितकारी नाम कहा सकते हैं। इसी तरह सजनों हमारी वृत्ति-स्मृति व भाव-स्वभाव रूपी बाणा निर्विकारता से, निर्मलता में सधा रह सकता है और हम उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो, उस परमेष्ट की मायावी शक्ति को पहचान, उससे निर्लिप्त रहते हुए, उसे प्रयोग करने की कला में निपुण बन, अपने नित्य परमात्मस्वरूप में बने रह सकते हैं। कहने का आशय यह है कि कर्त्ता होते हुए भी अकर्त्ता भाव से इस जगत में विचरते हुए, आत्मीयता के अनुकूल परस्पर सजनता से परिपूर्ण व्यवहार दर्शा सकते हैं और निर्वैर, निरासक्त व निर्दोष बने रह, सहजता से अपने जीवन का मुख्य प्रयोजन सिद्ध करने का पराक्रम दिखा सकते हैं। सजनों यह अधमता व मंद अधमता के भाव से उबर कर, उत्तम पुरुष बनने की बात है क्योंकि जो इंसान इस प्रकार का उत्तम चाल-चलन दर्शाता है उसके मन को कुबेर का धन व कामदेव का काम भी भरमा कर, सत्य धर्म के रास्ते से विचलित नहीं कर सकता। अन्य शब्दों में कोई भी धन-प्रलोभन में फंसा कर उससे कोई अधर्म नहीं करवा सकता। अतः सजनों आप भी ऐसे ही विचार ईश्वर आप नूं मान, सत्य धर्म के निष्काम साधक बनकर, श्रेष्ठ सदाचारी मानव बनने का साहस दिखाओ।

निरंकार अर्थात् जिसका कोई आकार या शक्ल सूरत नहीं है यानि जो रूप रंग, रेखा से रहित है व जो जगत से आज़ाद सर्वव्यापी व सर्वशक्तिमान परमात्मा है। सजनों तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

संसार है ओ आत्मा परमात्मा आधार है,
निराकार आकार न कोई है ओ अपरम्पार है

अर्थात् जगत आधार वह आदि पुरुष, आत्मा रूप में, हर प्राणी के हृदय आकाश में व्याप्त रहता है और इस तरह जगत में विशेष होते हुए भी उससे सदा निर्लेप बना रहता है। सजनों आप भी अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्तियों में समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, सबके हृदय में व्याप्त उस निराकार निर्गुण परमेश्वर का बोध करते हुए, अपने उस असलियत प्रकाश में ठहरे रहो और इस प्रकार आत्मतुष्टि द्वारा मन में संतोष प्राप्त कर व संकल्प रहित बने रह इस जगत में निष्कामता से विचरने के योग्य बनो।

ज्योति स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्ञान, गुण व शक्ति धारण कर आत्मा में विद्यमान अपने परमात्म स्वरूप को पहचानो। याद रखो जो अपने इस समरूप परमात्म स्वरूप को पहचानता है, वही उस शाश्वत स्वरूप का भाव या धर्म जानते हुए 'विचार ईश्वर है अपना आप' के ब्रह्म भाव अनुसार निर्वैर, निर्भय, निरासक्त, निर्विकार व निष्पाप जीवन जी सकता है। इस संदर्भ में सजनों जानो कि वह अगम-अगोचर, ज्योति स्वरूप परमात्मा ही हर जीव को अपनी ब्रह्म सत्ता से सचेतन कर व इस जगत में विचरने के काबिल बना, अपने यथार्थ गुणों पर बने रहने के लिए विवेकशक्ति प्रदान करते हैं ताकि वह सदा उपयोगी व अपनी यथार्थ सुन्दरता में बना रहे। इसीलिए तो ख़्याल में इस यथार्थता का निरंतर बोध रहना कि 'मैं वह वस्तु हूँ जिसे हथियार काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पवन उड़ा नहीं सकती व पानी बहा या गला नहीं सकता, मैं अजर-अमर हूँ', आवश्यक माना गया है। इसी के साथ सुन्दरता के प्रतीक अंतर्निहित, आत्मीय दिव्य गुण को पहचानने व ग्रहण करने हेतु विधिवत् आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का विधान भी है। अतः आप भी इस विधान अनुरूप अपनी वास्तविक स्वाभाविक शक्तियों तथा गुणों से युक्त हो, अपना हृदय सचखंड बनाओ।

पारब्रह्म परमेश्वर अर्थात् निर्गुण और निरूपाधि ब्रह्म जो सर्वश्रेष्ठ है, जगत से परे है व सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप है। उसके आगे व अधिक सजनों कुछ और नहीं। सजनों जो भी अक्लमंद इंसान उस ब्रह्म की सत्ता को ग्रहण कर, उसकी आज्ञाओं को परम व अंतिम मान, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन किए बगैर यानि यथा ईमानदारी से पालन करता है, वह ही उस मूलतत्व से अपने ख़्याल को जोड़े रख, सही ढंग से अपना सर्वांगीण विकास कर पाता है। इस तरह वह ही, हाँ केवल वह उत्तम भाव वाला परोपकारी ही, परमार्थ से भरपूर हो, परमपद यानि मोक्ष जैसे सर्वोत्तम पद को प्राप्त करने का अधिकारी सिद्ध होता है। सजनों आपको भी निष्कामता से भावयुक्त होकर इस सर्वोत्तम पद को प्राप्त करने का अधिकारी बनना है।

भक्त वत्सल अर्थात् सबके प्रति सजनता का भाव संजोए रख, परस्पर प्रीतिपूर्वक विचरो। सजनों अपने अन्दर इस गुण का विकास करने हेतु 'सजन सदो सजन सदाओ, सजन ही पहरेवा पाओ, सजन करो वर्त-वर्ताओ अर्थात् जिह्वा से सबको सजन बुलाओ और अपने आप को पाओ। याद रखो सजन शब्द बुलाने से सारा ब्रह्माण्ड एक सजन हो जाएगा और मौत का भय नहीं रहेगा। सजन शब्द बुलाने से बाकी कोई संकल्प नहीं रहेगा। एक निगाह एक दृष्टि होकर, दिव्य दृष्टि हो जाएगी और एक आत्मा होकर परमात्मा से मेल खाकर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है उसकी पहचान कर सकेंगे और रौशन हो जाएँगे। अतः स्मरण रहे 'सजन है कुल चानणा, सजन है कुल दीपक"। इस तरह सजनों सत्य धर्म का निष्काम भक्ति भाव, आप अपना कर, अन्य जो भी आपके संगी साथी हैं, उनको भी जीवन उद्धार हेतु इस नेकी की राह पर चलने के लिए प्रेरित कर परोपकार कमाओ।

सजनों अब जब समझ में आ गया है कि प्रतिदिन सजन श्री रघुनाथ जी की प्रार्थना को करने का भावाशय क्या है, तो यह जानने के पश्चात् हमारे लिए बनता है कि हम भवसागर से पार उतरने हेतु एक निगाह एक दृष्टि द्वारा सर्गुण-निर्गुण के खेल को समझते हुए, एक दर्शन में स्थित हो, परमपद रूपी ऊँची पदवी पाने के लिए दृढ़ संकल्प लें।

तो क्या सब ऐसा करने हेतु तत्पर हो जी?

हाँ जी

तो फिर आज के कलुषित समय काल को दृष्टिगत रखते हुए, आपको ऐसा उत्तम या श्रेष्ठ इंसान बनने हेतु, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में, श्री साजन परमेश्वर द्वारा दर्शाए चाल-चलन व नीति नियमों का अनुसरण कर, आत्मीयता से परिपूर्ण चाल-चलन अपनाने की सामर्थ्य दर्शानी होगी। क्या ऐसा करने के लिए भी तैयार हो जी?

हाँ जी।

सजनों अगर दिल से ऐसा साहस दिखाने की चाहना है तो फिर तहे दिल से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अपनाने के प्रति दृढ़ संकल्पी हो, उनकी चरण-शरण में आ जाओ और मिलकर बोलोः-

चरण-शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारंबार, दास सीस धरे चरणां उत्ते सजन त्रिभुवनपति रघुनाथ।

सजनों तहे दिल से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आने के पश्चात् अब अपने आप से वायदा करो कि मैं अपने परमपिता के वचनानुसार सर्वव्यापक श्री साजन परमेश्वर को ही अपना मित्र/प्रियतम जान, उन्हीं को ही अपना जीवन आधार मानूँगा, जानूँगा और उन्हीं के ही गुण अपनाऊँगा।

मैं अपने परमपिता के वचनानुसार शब्द को ही गुरु मानूँगा और तद्नुसार ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाऊँगा यानि निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाऊँगा।

मैं अपने परमपिता के वचनानुसार मूलमंत्र के अजपा जाप द्वारा आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर अपने हृदय को प्रकाशित करूँगा और 'ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा, का सत्य बोध कर आत्मज्ञानियों की तरह इस जगत में निर्दोष, निर्विकार, निरासक्त, निर्भय जीवन व्यतीत करूँगा।

यकीन मानो यदि मात्र इतना कर लिया तो सरलता से अपने संतोष-धैर्य के बलबूते पर अपने मन को इच्छा रहित रखते हुए व सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर निष्कामता से

चलते हुए, अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न कर, अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम पाने का पराक्रम दिखाने में सफल हो जाओगे यानि अमरता की प्रतीति कर अमर हो जाओगे।

आप सबकी जानकारी हेतु सजनों आगामी कक्षा में आपको यह बताया जाएगा कि जब सच्चेपातशाह जी ने हनुमान जी की युक्ति अपना कर व शांति शक्ति का हथियार धारण कर, जगत में रहते हुए व सब कुछ करते हुए, शारीरिक स्वभावों से ऊपर उठ व उन शहनशाह के इष्ट के गुणों को धारण कर यथा निर्भयता से व्यवहार में लाने का पुरुषार्थ दिखाया तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी किस प्रकार हर्षा उठे और उन्होंने उनके सुन्दर व परम पावन जीवन वृत्तान्त का वर्णन करते हुए क्या कहा? उनके निर्मल जीवन वृत्तान्त को जानने हेतु सजनों सब अत्यन्त प्रेम व उत्साह से आना और हुई सारी बातचीत को मनन द्वारा अमल में ला अपना जीवन सफल बनाना।

दिनाँक 29 अप्रैल 2018 का सबक़

अपने जीवन वृत्तान्त को सुन्दर बनाने का आवाहन्

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों आओ आज जानते हैं कि जब सच्चेपातशाह जी ने हनुमान जी की युक्ति अपना कर व शांति शक्ति का हथियार धारण कर, जगत में रहते हुए व सब कुछ करते हुए, शारीरिक स्वभावों से ऊपर उठ व उन शहनशाह के इष्ट के गुणों को धारण कर यथा निर्भयता से व्यवहार में लाने का पुरुषार्थ दिखाया व परोपकार कमाया तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी किस प्रकार हर्षा उठे और उन्होंने उनके सुन्दर व परम पावन जीवन वृत्तान्त का वर्णन करते हुए क्या कहा.....कृपया ध्यान से सुनना और उस अद्भुत आत्म पदवी को पाने के प्रति तत्पर हो, अपना लोक व परलोक दोनों ही सुधार लेनाः-

श्री हनुमान जी के मुख के शब्द

श्री रामचन्द्र जी अजब रचाई ने रचना, अजब पदवी रहे ने दिखा।
साजन जी दा सारा वृत्तान्त नगरी ऊपर खोल के रहे ने सुना,
श्री रामचन्द्र जी।।

सिफ़ती है मेरा साजना, सिफ़त रिहा है दिखा।
राम नाम दा शब्द बता के नगरी ऊपर रटन रहे ने करवा,
श्री रामचन्द्र जी।।
रचना देख हैरान हुए, हैरान हुए परेशान हुए।
रचना रचावन वाले नू असां देख के परेशान हुए।।
जगदीश रहीश परमात्मा फिर आद मध्य अन्त तो ओही हुआ।
फिर एक दी जोत है जग ते निराली, चानणा प्रकाश तो ओही हुआ।।
सप्तद्वीप गगन मण्डल उसे दा ही निवास हुआ।
साजन जगदा आया और जगदा राहसी, फिर विश्वपति तो ओही हुआ।।
कई कई खेडां खेडन, साजन जी तुहाडे मिलने दी खातर।
वर्त ही नेम और साधना कर कर, हो हो कर के आतुर।।
कई तरह तरह दियां ओ अराधना कर के, कई तरह तरह दी साधना करके।
कई करन उपासना तुसां दी खातर, ओ वृत्ति जमा जमा कर।।

इस कीर्तन के अंतर्गत सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कह रहे हैं कि सच्चेपातशाह जी के अनन्य प्रेम, श्रद्धा व निष्काम भक्ति भाव से प्रसन्न होकर, जैसे ही श्री रामचन्द्र जी ने अपनी कृपा से, उनके हृदय में अपने ज्ञान गुण स्वरूप को स्थित कर, उन्हें अपनी वास्तविक शक्ति से परिचित कराते हुए, अपने आप को सँवारने की प्रक्रिया में प्रवृत्त किया व अपने ही रंग में रंगने की आश्चर्यजनक रचना रचाई वैसे ही उन्हें अपने अद्‌भुत प्रतिष्ठासूचक आत्मपद का अनुभव हो गया। इस प्रकार सजनों उन्ही के मार्गदर्शन में समर्पित भाव से रहते हुए, जब सच्चेपातशाह जी ने कलियुग में मानव रूप में कदम-कदम पर विचार व विचार से ही प्यार रखते हुए अपना पुनर्निर्माण किया और परमेश्वरीय ज्ञान, गुण व शक्ति को धारण कर परमेश्वरमय हो गए तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी उन परमेश्वर रूप साजन जी का सारा वृत्तांत अर्थात् समाचार जगतवासियों को विस्तार सहित खोल कर बताने लगे।

वह कहने लगे कि सच्चेपातशाह जी का जीवन वृत्तांत हम सबके सामने आदर्श रूप में एक अनुकरणीय उदाहरण है। इस का अनुसरण कर हम कलुकाल के प्रभाव से हर प्रकार से पथभ्रष्ट इंसानों को शारीरिक भाव-स्वभाव के स्थान पर, ईश्वरीय ज्ञान व

गुण से सम्पन्न हो, अंतर्निहित वास्तविक शक्ति को अनुभव करना है और अपना पुनर्निर्माण कर झूठ, चतुराई व छल-कपट का रास्ता छोड़ पुनः सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त रहने हेतु ध्यानपूर्वक साधना करनी है। निःसंदेह सजनों ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि जब तक हम स्वार्थपर कामनायुक्त शारीरिक स्वभावों को कुर्बान करने में सक्षम नहीं हो जाते तब तक हम सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर अग्रसर हो इस महान पद की प्राप्ति नहीं कर सकते। अतः इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हम सबके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की बात को विचार में ला, बिना किसी तर्क-वितर्क के उस पर अमल फरमाना बनता है।

सजनों हम, आप, सब भी सुनिश्चित रूप से ऐसा करने में कामयाब हों व हमारे मन में भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को युक्तिसंगत आत्मसात् कर उस सर्वोत्तम पद को प्राप्त करने हेतु उमंग व उत्साह पैदा हो इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी श्री साजन जी की सिफ़त यानि सत्कार करते हुए व जगतवासियों को उनकी ज्ञान, गुण व अविनाशी स्वरूप की विशेषताएँ बताते हुए कहते हैं कि जानो श्री साजन परमेश्वर इस जगत में रहते हुए भी इससे निर्लेप हैं। वह ही अपनी मूल शक्ति का प्रयोग करते हुए, कलुकाल के स्वभावों में अटके हुए इंसानों को, यह जना रहे हैं कि 'एक ईश्वर का नाम ही सच्चा है' और इसीलिए वह उनको सद्मार्ग पर लाने हेतु परमात्मा अर्थात् राम नाम का शब्द निरंतर जपते रहने के स्वभाव में प्रवृत्त कर, आत्मबोध करा रहे हैं और निष्काम भाव से अनथक परिश्रम द्वारा उन्हें परमात्मा सम बनाने की चेष्टा कर रहे हैं।

आगे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कहते हैं कि निष्काम पुरुषार्थ द्वारा नैतिक पतनता की गर्त में गए मानव समाज को पुनः अपने वास्तविक रूप में खड़ा करने हेतु, उन द्वारा ध्यानपूर्वक युक्तिसंगत की गई इस क्रिया को देखकर हम हैरान हैं यानि जिस अदभुत् तरीके से वह सजनों को स्वार्थ के अविचारयुक्त कवलड़े रास्ते से हटा, परमार्थ के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चढ़ा रहे हैं, उस निराले ढंग को देखकर हम आश्चर्यवश हैरान-परेशान हैं। इस तरह सजनों इस कलियुग में मानव समाज को अपने यथार्थ परमात्म स्वरूप का दर्शन करा, उन्नति तथा सम्पन्नता के पथ पर प्रशस्त करने का उनका विशेष पराक्रम देख कर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी आश्चर्य से स्तब्ध हो रहे हैं और कह रहे हैं कि श्री साजन जी ही जगदीश अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर हैं और वह ही

आद्-मध्य-अंत यानि इस सृष्टि के मूल कारण, जगत के पालनहारे व संहारकर्त्ता हैं। उन्हीं अनुपम, एकता के प्रतीक की निराली अर्थात् विलक्षण जोत यानि अविनाशी प्रकाश से ही यह जगत प्रकाशित है और वह ही इस जगत में सूर्य चाँद के प्रकाश का आधार स्रोत भी हैं। वह कहते हैं कि जीव और ब्रह्म में अभेद की कल्पना करने वाला जो भी इंसान समर्पित भाव से उनकी इस बात को सत्य मान सहृदयता से स्वीकार लेता है वह आत्मज्ञानी ही वास्तविक रूप से ब्रह्मानंद को प्राप्त कर सकता है।

तत्पश्चात् वह कलुकालवासियों के मन में सर्वज्ञ श्री साजन परमेश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास व श्रद्धा पैदा करने हेतु, उनकी सर्वव्यापकता का बखान करते हुए कहते हैं कि सप्तद्वीप, गगनमंडल में भी उन्हीं सर्वशक्तिमान परमेश्वर का ही निवास अर्थात् प्रकाश है। इस तरह वह बेअन्त साजन ही आद् से ब्रह्मसत्ता के रूप में सर्व-सर्व एक समान जगमगा रहे हैं और सदा जगमगाते रहेंगे। वह कहते हैं कि सजनों इस विचार को धारण कर मानो कि वह ही समस्त ब्रह्मांड की सुरतों के पति व स्वामी हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हम सब सुरतों को भी इसी विचार को धारण कर सदा उन्हीं में लीन रहते हुए, एकरस चेतन अवस्था में बने रहने के महत्त्व को समझना है और इस जगत में विचरते समय, किसी भी कारणवश विचलित हो, किसी अन्य संग नहीं जुड़ना। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यह संगी संकल्प को कुसंगी बनाने की व समुचित प्रतिष्ठा यानि यश-कीर्ति गँवा, झुखने-रोने के स्वभाव में फँसने की व अधर्म के रास्ते पर अग्रसर होने जैसी हानिकारक बात होगी। हमारे साथ ऐसा न हो इसलिए सजनों हम इंसानों के लिए बनता है कि हम अपने वास्तविक स्वरूप व शक्ति में स्थिर बने रहने हेतु सुरत-शब्द के योग को अखंडता से बनाए रखें और सदा एकता, एक अवस्था में बने रह सदाचारिता का चलन अपनाएं।

आगे सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, श्री साजन जी को सम्बोधित करते हुए जगतवासियों द्वारा उनके प्रति अपनाए अनेक प्रकार के भक्ति-भावों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आज के समय काल में दुनियावासी आपसे मिलने यानि मेल खाने की ख़ातिर तरह-तरह के खेल, खेल रहे हैं और व्रत-नेम अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान के निमित्त नियमपूर्वक उपवास करते हुए, अनेकानेक धार्मिक क्रियाओं का पालन कर रहे हैं। इस तरह अपने उद्देश्य की सिद्धि हेतु यानि आपका संग प्राप्त कर सुनिश्चित रूप से

सफलता प्राप्त करने हेतु वे साधना करने वाले आतुर यानि अधीर होकर कई प्रकार के पूजा-पाठ के ढंग अपना रहे हैं और ए विध् अपनी वृत्ति को सब तरफ से हटा कर, दृढ़ता पूर्वक आप में ध्यान इस्थर कर, ऐक्य भाव में आने का यत्न कर रहे हैं पर सफल नहीं हो पा रहे।

इस विवेचना से सजनों स्पष्ट होता है कि वर्तमान कलियुग में सजन, श्री साजन परमेश्वर से मेल खाने हेतु बाल-अवस्था के अविचारयुक्त नाना प्रकार के कर्मकांड व आडम्बरी भक्ति भावों में फँसे हुए हैं और शायद इसी लिए इस कीर्तन में उन द्वारा की गई साधना, आराधना व उपासना द्वारा किसी प्रकार की सफलता प्राप्त होने का जिक्र नहीं आया है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों समझ आती है कि क्योंकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में बाल्य अवस्था के भक्ति भाव छोड़, युवावस्था का भक्ति भाव अर्थात् समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना कर, परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए सदा एकता, एक अवस्था में बने रहने का आवाहन दिया गया है। हमें भी सजनों इस बात को और गहराई से समझना है और निःसंकोच समर्पित भाव से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में बने रह, सहर्ष युवावस्था का भक्ति भाव यथा अपना कर, सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण बनना है। इस हेतु सजनों समर्पित भाव से अपना तन-मन-धन-सम्बन्ध व समय सब कुर्बान करने के लिए तत्पर रहना होगा और ए विध् इंसानियत में आ अपना जीवन वृत्तांत सुन्दर बनाना होगा।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हम सब अपने आप को सौभाग्यशाली समझें क्योंकि वह परमपिता सुनिश्चित रूप से परमपद प्राप्त कराने हेतु न केवल हम सबका सही मार्गदर्शन करते हैं अपितु आवश्यक युक्ति भी प्रदान करते हैं। इसलिए हम सबके लिए बनता है कि अपने व सबके कल्याण हेतु अपना सर्वस्व निछावर करते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को प्रवान करने में ही अपनी शान समझें और इस हेतु अपने परमात्म स्वरूप अनुरूप अपना पुनर्निर्माण करने का तप पूरी दिलचस्पी में आकर तहे दिल व कर्मठता से करना आरम्भ कर दें और ऐक्य भाव में आ अपने जीवन का वृत्तान्त भी श्री साजन जी जैसा सुन्दर बना लें व इस तरह श्रेष्ठ मानव कहलाएं।

दिनाँक 6 मई 2018 का सबक़

सत्-शास्त्र के अध्ययन की महत्ता

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अभी तक हम जान चुके हैं कि मन को वशीभूत कर इंद्रियों का निग्रह करने से, सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे गुण अपनाकर एक शक्तिशाली व सर्वगुण सम्पन्न इंसान की तरह राग-द्वेष पर विजय प्राप्त कर समभाव पर स्थित रहने से और प्राणिमात्र के प्रति निष्काम भाव से परोपकारी प्रवृत्ति अपनाने से कोई भी साधक अमर पद प्राप्त कर सकता है। आशय है कि निरंतर स्थिरता से अपने परम लक्ष्य यानि अमर पद की ओर बढ़ते रहने हेतु, हमारे लिए एक ही परमसत्ता में विश्वास रखते हुए अद्वैतवाद का सिद्धान्त अपनाना व तद्नुसार यह संसार मिथ्या है तथा ब्रह्म से ही सकल विश्व की उत्पत्ति हुई है, इस सत्य को मानना नितांत आवश्यक है। इस सत्य को मानने वाला ही ब्रह्म तथा जीव की ऐक्यता को स्वीकार कर, विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था में बना रह सकता है।

इस संदर्भ में सजनों हम इस आत्मीयता से परिपूर्ण विचार से हटकर कोई अन्य विचारधारा अपना कर अपनी वास्तविकता से गिर विनाश को प्राप्त न हो जाएँ, इस हेतु हमें सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के नियमित अध्ययन का महत्त्व समझना है और पाप

व अधर्म की प्रतीक अधम अवस्था से उबर सचेतनता से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहने के लिए उसमें विदित शब्द ब्रह्म विचारों को धार अमल में लाने के लिए सतत् रूप से प्रयत्नशील बने रहना है ताकि वे विचार हमारे स्वभाव के अंतर्गत हो जाएं और हम बुराई का रास्ता छोड़ सदाचार का रास्ता अपना, जीवन की बाज़ी जीत लें। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित इन शब्दों को स्मरण रखोः-

चार वेद छः शास्त्र गुरु, इस बाग दा मालक ईश्वर जान।
इन्हां विचों शब्द पकड़ लवो, सजनों अपना आप लवो पहचान

निःसंदेह सजनों सत्-शास्त्र के अध्ययन और मनन के बिना अपने आप की पहचान संभव नहीं। यहाँ सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अध्ययन की महत्ता को और स्पष्ट करते हुए हम बताना चाहते हैं कि मस्तिष्क को इस प्रकार के सद्-अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी शरीर को आहार व व्यायाम की। आशय यह है कि जिस प्रकार शारीरिक तन्दुरुस्ती के लिए सात्विक आहार का सेवन व शारीरिक व्यायाम करना जरूरी है, उसी प्रकार मानसिक तन्दुरुस्ती के लिए सद्-ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा सात्विक विचारों का सेवन करना अत्यन्त आवश्यक है ताकि हमारी बुद्धि अर्थात् सोचने-समझने की शक्ति सदा निर्मल व विवेकशील बनी रहने के साथ-साथ निश्चयात्मक भी बने और किसी प्रकार की भी भोग कामना हमारे मन में जाग्रत न हो। इसलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

वेद पुरान कुरान, इन्सान इको जान
गुरु ग्रन्थ गुरु वाणी इन्सानों सारे ग्रन्थ इसे नूं जान,
मानो हीरे रत्नां दी है खान।।

इसके विपरीत सजनों यदि मस्तिष्क अस्वस्थ है तो शरीर का भी समुचित ढंग से संचालन नहीं हो पाता और यह भी रोगी होकर भोगी हो जाता है। परिणामस्वरूप नकारात्मक सोच पनपती है और इंसान झुखता-रोता है। ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि सद्-ग्रन्थों के अध्ययन व मनन द्वारा सात्विक आहार व विचारों का सेवन कर, शारीरिक-मानसिक स्वस्थता व स्थिरता साधने वाले योगी बनो। याद रखो सद्-ग्रन्थों

के अध्ययन की यह क्रिया सहज मानवीय संवेदनाओं को गहराई से स्पर्श करती है और पाश्विक वृत्तियों के नाश व सद्-वृत्तियों के विकास द्वारा व्यक्ति को उदारचित्त यानि महान बना, सुख-दुःख आदि में समचित्त बने रह, लोक कल्याण के लिए प्रेरित करती है। इस तरह अध्ययन द्वारा मानव शब्द ब्रह्म विचार धारण करता है और अपनी जैविक आवश्यकताओं यथा आहार, निद्रा और मैथुन से आगे बढ़कर कुछ और उत्तमोत्तम प्राप्त करता है, अपनी सोचने-समझने की शक्ति में वृद्धि करता है, सत्य-असत्य का पारखी बन उचित निर्णय लेने की सामर्थ्य का विकास करता है और मनुष्यता में ढल चिर स्थाई आनन्द प्राप्त करता है। कहने का आशय यह है कि सद्-ग्रन्थों का अध्ययन व्यक्ति को उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल बनने हेतु चिन्तन व मनन करने के लिए प्रेरित करता है, जिसके द्वारा सब बुरी चिंताएँ मिट जाती हैं, संशय-भ्रम रूपी पिशाच भाग जाते हैं, रोग-सोग-भोग मिट जाते हैं और मन में सद्भाव के जाग्रत होने से परम शांति प्राप्त होती है। याद रखो जहाँ परम शांति है वहाँ परम आनन्द है। जहाँ परम आनन्द है वहाँ सुरत का परमधाम में वास है। ऐसा होने पर इंसान जगत का होकर नहीं विचरता अपितु सब कार्यव्यवहार करते हुए भी उससे निर्लिप्त रहता है और अपने मूल स्थान परमधाम में स्थित रहता है। इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

चार वेद छः शास्त्रां दा कर लिया जैं इश्नान।
अपना आप पहचान लिया, फिर पा लिया आत्मिक ज्ञान।।

स्पष्ट है सजनों यह सद्-ग्रन्थों के अध्ययन का ही प्रभाव है कि मनुष्य की मेधा यानि बात को स्मरण रखने और समझने की मानसिक धारणा शक्ति, शांति और आनंद की खोज में सतत् व्यस्त है। निःसंदेह सद्-अध्ययन द्वारा, मन-मस्तिष्क को आत्मिक ज्ञान रूपी अमृत रस प्राप्त रहने पर, इन दोनों तत्वों यथा शांति और आनन्द की प्राप्ति सहज संभव है। तभी तो कहा जाता है कि सद्ग्रन्थों का अध्ययन मानव के विवेक को जाग्रत करता है, उसे औचित्यपरायण बनाता है, दिव्य आनंद प्रदान कर सरस व सहृदय बनाता है और व्यक्तित्व के आकर्षण को बढ़ा, मानव कहलाने के योग्य बनाता है। ऐसे अध्ययन के प्रति प्रेम, जीवन में आने वाले दुःखद क्लेशपूर्ण क्षणों को आनंद और प्रसन्नता के क्षणों में परिवर्तित करने की क्षमता तो रखता ही है साथ ही इसका

मूल संदेश लोक कल्याण उन्मुखी होता है जो व्यापक स्तर पर मानवीय हित के चिंतन का कार्य करता है और विश्व समुदाय को सही दिशा देता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों कलुकाल के स्वभाव छोड़ सतवस्तु की चाल अपनाने हेतु, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का ध्यानपूर्वक व गंभीरता से अध्ययन करो व तदुपरांत, उसमें लिखित तथ्यों, विचारों का एकांत मन से, मनन एवं चिंतन करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

सतवस्तु दी सजनों चाल चलो। सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो।।
सतवस्तु दे असूलां नू फड़ो सजनों। सत सत वचनां नाल प्यार करो।।

उपरोक्त कथन के अनुसार सजनों जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता पर विवेकपूर्वक विचार करते हुए सत्य अन्वेषण का प्रयत्न करो। इससे मन के विचार तो गूढ़ होंगे ही, साथ ही बुद्धि भी प्रखर हो सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होगी और व्यक्तित्व का सर्वांगीण उन्नयन हो सकेगा। इसके विपरीत आलस्य वश इसके अध्ययन में लापरवाही वर्तने से या फिर किसी कारण व्यवधान पड़ने से, वर्णित भावों-विचारों की एकसूत्रता छिन्न-भिन्न हो जाएगी जिससे अध्ययन के अनन्तर सही निष्कर्ष प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होगी। परिणास्वरूप लक्ष्यहीन हो, परमार्थ का रास्ता छोड़ स्वार्थपरता का दुष्कर मार्ग अपना बैठोगे और माया डंगनी की पीड़ा से त्रासित हो अपनी होश-हवाश गँवा बैठोगे।

ऐसा न हो, इस हेतु सजनों जानो कि प्रमाद सत्-शास्त्र के अध्ययन-पथ की सबसे बड़ी बाधा है। यह प्रमाद आलस्य का एक रूप है। अन्य शब्दों में सद्-अध्ययन के दौरान मनुष्य को जो अन्य इन्द्रिय सुख त्यागने होते हैं, उन्हें न त्यागने की इच्छा ही प्रमाद है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि सत्-शास्त्र के महत्त्व से भली-भांति परिचित होने के बावजूद भी इंसान इस उत्तम कार्य के प्रति प्रमाद क्यों दर्शाता है? इस संदर्भ में सजनों जानो कि जहाँ अन्य कार्यों के करने से मनुष्य को तत्काल इन्द्रिय सुख पा, अन्य लाभ प्रत्यक्षतः प्राप्त होता है वहाँ सद्-अध्ययन से वैसी प्रत्यक्ष उपलब्धि नहीं होती। अतः इसके संदर्भ में मनुष्य प्रायः प्रमाद करता है। यही कारण है कि बचपन और किशोर अवस्था में भी सत्-शास्त्र के अध्ययन की अपेक्षा सोना, घूमना, खेलना अधिक

सुखप्रद प्रतीत होता है। लेकिन हकीकत में सत्-शास्त्र के अध्ययन के समक्ष इन समस्त क्रियाओं का महत्त्व गौण है। ऐसा इसलिए क्योंकि जहाँ अन्य क्रियाएं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं वहाँ सत्-शास्त्र का अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। दोनों का अपना-अपना महत्त्व है। अतः बुद्धि को विभ्रमित व भ्रष्ट होने से बचा, एक सुमतिवान इंसान की तरह वास्तविक सुख प्राप्ति हेतु, जीवन में अन्य क्रियाओं के साथ-साथ सत्-शास्त्र के अध्ययन का संतुलन भी अवश्य बनाओ। ऐसा करने से न केवल दैनिक क्रियाओं का शांत चित्त व एकाग्रता से निर्वहन कर अपना घर सतयुग बना सकोगे अपितु चिंतामुक्त हो अपने जीवन के परम प्रयोजन यथा परमात्मा का साक्षात्कार कर परमानंद भी प्राप्त कर लोगे।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हर प्रकार का आलस्य त्याग कर, इस सद्-अध्ययन में बाधक सभी कर्मों को छोड़ दो और पूरी लगन व सत्य-निष्ठा से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन कर उसमें वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को ग्रहण कर, धारण करने की उत्तम आदत विकसित करो। इस संदर्भ में जानो कि अभ्यास इस आदत के विकास का सर्वोत्तम उपाय है। यदि बाल्य अवस्था से ही जैसे समझाया है वैसी आदतों का विकास हो जाए तो भविष्य में सारा जीवन लाभ मिल सकता है। अतः अपने बच्चों के अन्दर बचपन से ही सत्-शास्त्र के अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करो और उन्हें समझाओ कि सत् शास्त्र का अध्ययन मनुष्य की सर्वोत्तम उपलब्धि है क्योंकि जो यहाँ से प्राप्त हो सकता है वह कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकता। अन्य शब्दों में यह वह मानवीय क्रिया है जो मनुष्य को आत्मबोध कराती है और वह आत्मज्ञानी बन आत्मतुष्टता से आत्मविश्वास के साथ अपने आत्मिक बल का समुचित प्रयोग करते हुए आत्मविजयी हो जाता है। जानो इस अध्ययन रूपी क्रिया द्वारा ए विध् आत्मविकास करना, मनुष्य के अतिरिक्त सृष्टि के किसी अन्य जीव-जन्तु द्वारा कदापि संभव नहीं। इस बात को समझते हुए सजनों सत्-शास्त्र का विचार करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

शास्त्र नूं विचार, हुन दरख़त नूं सँवार।
हुण कदे न खासें हार, जयकार सदा जयकार।।

उपरोक्त के संदर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि नकारात्मक स्वभावों में बने रहने का हठ छोड़कर शास्त्र की बात मान लो और अपने शरीर रूपी दरखत को सँवार लो। सारतः हम कह सकते हैं कि मानव का सच्चा जीवन साथी इन ग्रन्थों व सत्-शास्त्रों में वर्णित आध्यात्मिक विद्या/आत्मिक ज्ञान है। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इस जीवन काल में समस्त झूठे रिश्ते-नाते यानि भाई-बहन, माता-पिता, सगे-सम्बन्धी, दोस्त-यार सब साथ छोड़ सकते हैं और धोखा दे सकते हैं परन्तु यह कभी न बदलने वाला शाश्वत आत्मिक ज्ञान आत्मा का साथ नहीं छोड़ सकता। अतः इस विद्या/ज्ञान को अर्जित कर जीवन व्यवहार के दौरान इसका प्रयोग करने वाले श्रेष्ठ मानव बन सर्वरूपेण सुखी रहो। इसलिए बार-बार कह रहे हैं कि सत्-शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन अवश्य करो और उस संग अपने मानस को जोड़ दो। यहाँ याद रखना है कि इस अध्ययन द्वारा अर्जित विद्या का प्रयोग खंडन और असत्य सिद्ध करने के लिए नहीं करना, न ही विश्वास करके मान लेने के लिए करना है व न ही बातचीत और वाद-विवाद करने के लिए करना है, बल्कि मनन और परिशीलन यानि खूब सोचते समझते हुए अनुसरण करने के लिए करना है। यदि यह सावधानी ले ली तो सद्-अध्ययन द्वारा शब्द ब्रह्म विचार प्राप्त कर उनको अमल में लाने के प्रति रुचि निर्मित होगी और शीघ्र ही आदत के रूप में विकसित हो आपकी प्रकृति का अभिन्न अंग बन जाएगी। प्रकृति का सहज अंग बन गई तो इस क्रिया द्वारा अर्जित सद्-ज्ञान/सद्-विचार जीवन व्यवहार के दौरान प्रयोग में आएंगे और जीवन को दिव्य गुणों से अलंकृत कर, अपार सन्तुष्टि प्रदान करेंगे। फिर अध्ययन द्वारा ठीक वैसा ही आनन्द प्राप्त होगा जैसा खिलाड़ी को खेल में, योगी को समाधि-साधना में और संगीतकार को संगीत-साधना में मिलता है यानि यह क्रिया आपकी आवश्यकता बन जाएगी और इसके बिना आपको अपनी दिनचर्या पूर्ण नहीं लगेगी।

अंततः सजनों सच्चेपातशाह जी के वचनानुसार जान लो किः-

शब्द है हमारी पढ़ाई, ग्रन्थ है हमारी सफ़ाई। सजनों जो ग्रन्थ है उससे है हमारे अन्दर की सफ़ाई। इसके सुनने से मन्दी चीज़ें छोड़नी हैं और अच्छी चीज़ें धारण करनी हैं।

अतः सच्चाई धारण करो और सच का वर्त-वर्ताव करो क्योंकि सतयुग आ रहा है।

अतैव श्रेष्ठता को प्राप्त करने हेतु इस क्रिया द्वारा सजनों इस बदन से खोट निकाल, खालस सोना होने की आवश्यकता को समझो। याद रखो ऐसा करने पर ही सत्य के प्रतीक बन अमर पद पा सकोगे और मालो-माल हो जाओगे।

सबकी जानकारी हेतु आगामी कक्षा में हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित भजनों/कीर्तनों को समझने का सही तरीका बताएंगे। तब तक आज की बात पर अमल फरमाना और अपना जीवन सफल बनाने हेतु तत्पर हो जाना।

दिनाँक 13 मई 2018 का सबक़

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित भजनों एवं कीर्तनों को समझने का सही तरीका

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात्
ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात्
ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

बस सजनों इसी सत्य को याद रखो कि मैं आत्मा हूँ और मुझ में ही परमात्मा है। उस परमात्मा के रूप में सब कुछ मेरे ही अंतर्निहित है। अतः मुझे कुछ भी, बाहर कहीं से नहीं खोजना या प्राप्त करना क्योंकि मैं अपने आप में भरपूर हूँ।

जैसा कि सजनों आप सब सजन जानते ही हो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की महिमा महान व अपरम्पार है क्योंकि इसमें न केवल आत्मिक ज्ञान के रूप में जीवन बनाने की समस्त युक्तियों का वर्णन है अपितु मानव जीवन के हर पहलू का सद्ज्ञान अत्यन्त ही सुन्दरता व सूक्ष्मता से विधिवत् पिरोया हुआ है। इसमें विदित सत्यज्ञान नित्य है, स्थाई है, शुद्ध है, पवित्र है, श्रेष्ठ है और भौतिक नश्वरता के भाव से उबार, मानव को ब्रह्म भाव में स्थित करने वाला है। जानो जब यह विशुद्ध भाव मानव के रोम-रोम, रग-रग में रम उसके मन-मस्तिष्क को अपने रंग में रंग लेता है तो स्वतः ही उसकी जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन हो जाती है और हृदय सचखंड यानि खालस

सोना हो जाता है। यह अद्‌भुत घटना उस मानव के ख़्याल के सतवस्तु से जा जुड़ने का प्रतीक होती है जिसके परिणामस्वरूप इंसान की धारणा, वृत्ति, स्मृति, बुद्धि सब निर्मल हो जाती है और वह आत्मज्ञानी हो जाता है। सजनों अगर आपके दिल में भी सतवस्तु को धारण कर आत्मज्ञानी बनने की उमंग है तो नियमित रूप से इस ग्रन्थ को समझदारी से पढ़ना आरम्भ कर दो। जानो ज्यों-ज्यों इस ग्रन्थ की गहराई में उतरते जाओगे, त्यों-त्यों विचार रूपी हीरे मिलते जाएंगे और अंतरपट खुल जाएंगे। ऐसा होते ही आत्म साक्षात्कार होगा यानि अपने वास्तविक स्वरूप को जान लोगे और आत्मतुष्ट हो जाओगे। इस तरह मन को संतोष प्राप्त होने पर आप धीरता से इस ग्रन्थ में वर्णित समभाव-समदृष्टि के उसूलों पर चलते हुए सहजता से सत्य-धर्म का भक्ति भाव अपना परमार्थिक दृष्टिकोण अपना लोगे। इस प्रयत्न द्वारा आप अपने वास्तविक गुण-धर्म को पहचान अच्छे स्वभाव वाले बन जाओगे और जीवन निर्वाह के समय अपना हर कर्त्तव्य/कर्म निष्काम भाव से करते हुए, निपुणता व प्रसन्नता से जीवन जीने योग्य बन जाओगे यानि तेरी-मेरी के झंझट से उबर विशेष बुद्धि हो जाओगे। फिर परोपकार कमाना ही आपकी विशेषता होगी जिसके फलस्वरूप आप परमगति को प्राप्त होंगे। अतः सजनों याद रखो कि जीवन लक्ष्य की सिद्धि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार गृहस्थाश्रम में रहते हुए व फ़र्ज़ अदा हँस कर विवेकशीलता से निभाते हुए ही कर पाना संभव है।

इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों विगत वर्ष से अपने व सब के सुख के लिए, नित्यप्रति नियम से भावयुक्त होकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन-पठन व गायन करने का आवाहन दिया जा रहा है ताकि आप इसमें विदित शब्द ब्रह्म विचारों को न केवल पढ़ने-सुनने की अपितु समझ कर चिंतन द्वारा विचार में लाने की आदत भी डालें और इस तरह ईश्वरीय वाणी का मनन कर उसका अनुसरण करें यानि उस पर अमल फरमाएँ। सजनों यह क्रिया एक प्रयास है शब्द गुरु द्वारा प्रदत्त विचारों पर आपके ख़्याल व दृष्टि को खड़ा कर, आत्मपद की ओर बढ़ रहे आपके कदमों को सुदृढ़ करने का ताकि अज्ञानवश कहीं आप हार न खा जाओ। इस प्रयत्न को सतत् रूप से जारी रख, अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाने वाला सजन निश्चित रूप से इस कुदरती ग्रन्थ में वर्णित आत्मिक ज्ञान को आत्मसात् कर न केवल अपने सत्य स्वरूप को जानने में

सक्षम हो सकता है अपितु समभाव-समदृष्टि के सबक़ का युक्तिसंगत अनुशीलन करते हुए परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने में भी निपुण बन सकता है। इस तरह अपने मन को 'मूलमंत्र जो है आद् अक्षर' उसके अजपा जाप द्वारा संकल्प रहित अवस्था में साधे रख वह उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल, विचार, सत्-ज़बान, एकता व एक अवस्था में स्थिरता से बने रह, जन्म की बाज़ी जीत अपना जीवन सफ़ल बना सकता है यानि सर्गुण-निर्गुण के खेल अफुरता से खेलते हुए निर्वाण पद पा सकता है।

इस संदर्भ में जान लो कि एकता, एक अवस्था का अनुभव करने के लिए, सर्गुण से ऊपर उठकर, अफुरता से निर्गुण में जहाँ एकान्त होता है वहाँ आत्मानन्द की अनुभूति करते हुए स्थिर होना होता है। जो निर्गुण में स्थिर हो जाता है उसे फिर सर्गुण में सबके बीच में रहते हुए भी एकान्त में रहने की आदत पड़ जाती है। परिणामतः वहाँ भी (सर्गुण में) उसकी एकता, एक अवस्था बनी रहती है और उसे संसार में लिप्त होने का भय नहीं सताता। इस तरह जब सर्गुण-निर्गुण एक अवस्था हो जाती है तो इंसान निर्वाण पद को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप सब सजन भी कहीं उचित मार्गदर्शन के अभाव में उपरोक्त लाभ को प्राप्त करने से वंचित न रह जाएं इस हेतु आओ आज आपको एक भजन का भावार्थ स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि आपको किस प्रकार सच्चेपातशाह जी की ही युक्ति अनुसार इस क्रिया को निपुणता से करते हुए उचित परिणाम प्राप्त करना है:-

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
संसार सागर तों महाबीर जी लंघावन, नाम दा कवच पहना।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत बढ़ावीं, रघुनाथ जी नू देसन मिला।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
सांवली सूरत नाल प्रेम बढ़ावीं, पंजां नू देवन भजा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सारी उमर दुःखां विच गुज़ारी, हुन रघुनाथ जी दे दर्शन पा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
विषयां विच न उमर गवावीं, प्रीति हरी चरणां विच ला।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
नाम महाबीर जी दा हृदय विच ध्यावीं, चरण रघुनाथ जी दे देसन दिखा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
कंडयां दे रस्ते मूल न जावीं, उमर रघुनाथ जी दे चरणां विच बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
अंध कूप विचों बली जी कढेसन, हर श्वास नाम ध्या।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
वाशना नू तुसी परे हटाओ, अन्धेरा देसन हटा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
कई सूरजां दा सूरज तू पावें, सारी उमर आनन्द दी बिता।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।
मैं दासी सुरति सुरति पुकारां, हरदम चरणां विच जा।
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सजनों इस भजन में प्रत्येक सजन के ख़्याल को अविचारयुक्त कवलड़ा रास्ता छोड़कर विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपनाने का आवाहन दिया जा रहा है। निःसन्देह इस हेतु इसके लिए अपना ख़्याल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के साथ जोड़ना होगा और उन्हीं की चरण-शरण में बने रहते हुए किसी ज्ञानी को नहीं अपितु केवल आत्मज्ञान को ही महत्त्व देते हुए, आत्मसुधार कर यानि अधर्म का रास्ता छोड़, पुनः धर्म के रास्ते पर लौट आना होगा। तभी तो इस भजन में कहा गया है:-

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

क्या कोई बता सकता है कि यहाँ हर इन्सान को अपनी सुरति को इस भाव से सम्बोधित करने के लिये क्यों कहा गया है?

जानो सजनों, जब यह एहसास हो जाता है कि हमारा ख़्याल संसार की तरफ रुड़ रहा है यानि विषय विकारों में बह नकारात्मकता में जा रहा है तो उसको पुनः सद्मार्ग/परमार्थ के सकारात्मक रास्ते पर ला, प्रभु में लीन रखने के लिए ऐसे ही अपनी सुरति को आवाहन देना होता है 'नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा'। याद रखो जिसका ध्यान लगाने के लिए कहा जाता है, उसके प्रति ख़्याल के ध्यान स्थिर होने पर उसकी बात व विचारों की धारणा चित्त में हो जाती है। अतः बली जी का ध्यान लगाने से तात्पर्य है सुमति के दाता, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों व विचारों की ओर अपने ख़्याल को एकाग्रचित्त कर उन्हीं को ध्यान से धारण कर परमार्थी विद्या प्राप्त कर वैसे ही श्रेष्ठ इंसान बनने से है। सजनों यह सजन के ख़्याल को जगत से निर्लिप्त यानि अफुर रख, सच्चे घर में स्थिर करने की व निज यथार्थ का यानि जीव, जगत व ब्रह्म के सत्य का बोध कराने की अमूल्य बात है। आगे कहा गया है:-

धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता।

सजनों चूंकि कलुकाल में साधारण इन्सान जीवन में कुरस्ते पर चलना पसन्द करता है इसलिए उसे सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के संग रह, अधर्म का रास्ता छोड़, धर्म के रास्ते पर चलते हुए प्रसन्नता/खुशी से जीवन जीने का निर्देश दिया जा रहा है।

संसार सागर तों महाबीर जी लंघावन, नाम दा कवच पहना।

उपरोक्त कार्य की सिद्धि हेतु यानि संसार सागर को निर्विघ्न पार करने हेतु सच्चेपातशाह जी सुरति को उस परम पिता द्वारा प्रदत्त नाम अर्थात् आत्मबोध कराने वाले शब्द का कवच पहनने के लिए कह रहे हैं। नाम का कवच पहनने से तात्पर्य नाम के अजपा जाप द्वारा अपने हृदय को भरपूर कर, प्रकाशमय/तेजोमय वातावरण का सृजन करने से है ताकि किसी भी कारण आत्मिक ज्ञानदृष्टि पर पर्दा न पड़ जाए और जीव सांसारिक अज्ञान धारण करने पर मजबूर न हो जाए। इस तथ्य की महत्ता के दृष्टिगत हमें भी सजनों मन में यह विश्वास रखते हुए कि इस संसार सागर से महाबीर जी ही पार लंघा सकते हैं, उनकी युक्ति को प्रवान करने का परम पुरुषार्थ दिखाना सुनिश्चित करना होगा। याद रखो यदि एक बार ऐसा कर लिया तो उस नाम रूपी

कवच को भेदकर हृदयगत सकारात्मक वातावरण में अर्थात् मन में कोई बुराई नहीं घर कर पाएगी। सजनों इसलिए उन द्वारा बक्षे गये नाम की महत्ता को समझो और उसे युक्तिसंगत प्रयोग/व्यवहार में लाते हुए भवसागर से पार हो जाओ।

महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत बढ़ावीं, रघुनाथ जी नू देसन मिला।

सजनों वर्तमान दुःखों/कष्टों से उबारने हेतु वह सुरति को मिथ्या संसार संग प्रीति छोड़, महाबीर जी के चरणों में प्रीत बढ़ाने के साथ-साथ प्रीत की रीत निभा, मन में पुनः संतोष, प्रसन्नता व आनन्द प्राप्त करने का आवाहन दे रहे हैं। आगे वह सुरति को विश्वस्त कर रहे हैं कि जानो ऐसा होने पर वह पारस्परिक सच्ची मित्रता के नाते अवश्यमेव परमात्मा से मिला देंगे। इस उपलब्धि को देखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम उनके चरणों में मजबूती से प्रीत जोड़े रखने के निर्देश को समझें और उन द्वारा दर्शाई जीवन शैली को अपनाकर इस संसार के नानाविध् प्रलोभनों व आकर्षणों के आगे कदाचित् कमज़ोर न पड़ें। यहाँ स्पष्ट कर दें कि चरणों से उनका तात्पर्य बैहरुनी वृत्ति में किसी को गुरु मानकर उसके चरण पकड़ने से नहीं अपितु सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के संग बने रह, आत्मिक ज्ञान अनुसार उनकी श्रेष्ठतम विचारधारा को अमल में ला मनुष्यता में आने से है। अतः सजनों उन द्वारा प्रदत्त आचार-संहिता को अन्दरुनी वृत्ति में ग्रहण/धारण कर वर्ताव में ले आओ और इस तरह मायावी संसार के प्रति निरासक्त बने रहो। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर स्वतः ही जितेन्द्रिय हो जाओगे और अपने वास्तविक स्वरूप का बोध हो जायेगा।

सांवली सूरत नाल प्रेम बढ़ावीं, पंजां नू देवन भजा।

आगे ईश्वर सुरत को कहते हैं कि सांवली सूरत अर्थात् पति परमेश्वर संग प्रेम बढ़ा, उसी की छवि को हृदय में रमा, सदा सुन्दरतम अवस्था में बनी रहना। याद रख, इस प्रकार आत्मस्वरूप के दर्शन में स्थित रहने पर उनकी कृपा से, संसारी अज्ञान धारण करने के कारण मन में घर कर गये पाँचों विषय-विकार यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार स्वतः ही बाहर भाग जाएंगे और हृदय विशुद्ध हो जाएगा। मानो ऐसा अद्भुत होने पर वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी बाणा निर्मल हो जायेगा और आप निर्विकारता से इस जगत में विचर सकोगे।

सारी उमर दुःखां विच गुजारी, हुन रघुनाथ जी दे दर्शन पा।

इसी सन्दर्भ में वह आधि-व्याधि के दुःखों से त्रस्त सुरत को कहते हैं कि मानव रूप में यदि बचपन से लेकर अब तक व्यतीत किए जीवनकाल पर दृष्टिपात करो तो ज्ञात होगा कि आत्मिक ज्ञान के अभाव के कारण सारा जीवन कष्ट-क्लेशों में ही व्यतीत हुआ है। अब आगे वे दुःख पुनः न भोगने पड़ें अर्थात् मन की इस कष्टदायक अवस्था से छुटकारा पाने हेतु वह सुरत को शब्द में जुड़, उस तत्त्वज्ञान/आध्यात्मिक विद्या प्राप्त करने के लिए कह रहे हैं जिसमें प्रकृति, आत्मा-परमात्मा, जगत के नियामक धर्म और जीवन के अन्तिम लक्ष्य का निरूपण होता है। वह कहते हैं कि यदि सुनिश्चित रूप से ऐसा कर लिया तो न केवल दुःखमय अतीत से उबर कर, अपने निर्गुण, निराकारमय स्वरूप का बोध करने में सक्षम हो जाओगे अपितु ताकतवर हो सुख-दुःख सम कर जान आजीवन एक अवस्था में बने रहोगे।

विषयां विच न उमर गवावीं, प्रीति हरी चरणां विच ला।

निःसन्देह इसके लिये इन्द्रियों के विषयों यथा रूप, रस, रंग, शब्द व स्पर्श से ऊपर उठना होगा अन्यथा ये आपके ख़्याल को भौतिक पदार्थों में आसक्त कर, मिथ्या जगत में फँसा, अधर्म के मार्ग पर अग्रसर कर देंगे। ऐसी भूल न हो इस हेतु इन्द्रिय-निग्रह करके आत्मानुशासित होना होगा और अनन्य प्रीत द्वारा अपने मन को हरि में यानि सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर में लीन रखते हुए, उनके श्रेष्ठतम जीवन चरित्र को अंगीकार करना होगा। सजनों यह अपने ख़्याल व विचारधारा को जगतीय विषयों की तरफ से हटाकर प्रभु संग जोड़ने की बात है। इस यत्न द्वारा इधर-उधर भटक रहा आपका मन आत्मनियंत्रित हो एकाग्रचित्त व स्थिर हो जायेगा। इस हेतु सजनों शब्द को गुरु मान, मूलमन्त्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्मसत्ता को अफुरता से ग्रहण कर अपनी वास्तविक शक्ति का एहसास करना होगा। ऐसा पराक्रम दिखाने पर आपकी सोच, आपकी विचारधारा जो नश्वरता के भाव में अटकी हुई है, वह पलटा खा नित्यता के भाव में आ जायेगी और आप इस 'अ' 'क्षर' अवस्था का बोध कर कह सकोगे कि, 'मैं अजर अमर आत्मा हूँ यानि ब्रह्म हूँ'। स्पष्ट है सजनों जब आपका ख़्याल अजपा जाप द्वारा नित्य ब्रह्म में जुड़ जायेगा तो आप ब्रह्म

भाव अपना कर 'आत्मा में जो है परमात्मा' अर्थात परब्रह्म परमेश्वर की पहचान कर रौशन हो जाओगे।

नाम महाबीर जी दा हृदय विच ध्यावीं,
चरण रघुनाथ जी दे देसन दिखा।

इसलिए सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बक्षे आत्मबोध कराने वाले नाम शब्द की हृदय में ध्यानयुक्त होकर रटन लगाओ। अगर उनका हुक्म मानकर ऐसा कर दिखाया तो वह निश्चित रूप से ध्यान दृष्टि द्वारा आपको हृदय में ही परमात्मा के होने का अनुभव करा देंगे। इसलिए भक्ति-भाव से महाबीर जी का नाम हृदय में बसा, उन्हें प्रसन्न कर लो। ऐसा होने पर हृदय वेद-विदित प्रकाशित हो जाएगी और ख़्याल प्रभु संग स्थिरता से जुड़ जायेगा। इस तरह सहज ही सुरति शब्द का मिलाप हो जायेगा।

कंडयां दे रस्ते मूल न जावीं, उमर रघुनाथ जी दे चरणां विच बिता।

ऐसा ही हो इस हेतु सजनों वह सुरति को सतर्क करते हुए कहते हैं कि कलुकालवासियों के स्वभावों में फँसकर भूलकर भी अविचारयुक्त/अधर्मयुक्त कंटक भरे मार्ग पर कदम न बढ़ाना अन्यथा जगत के मायाजाल में फँस जाओगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए सजनों, अपने सब कर्त्तव्य कुशलता से संपादित करने के लिए, निष्काम कर्म करने के भाव को अपना कर, विचारयुक्त सौखे रास्ते पर मज़बूती से बने रहना और निज धर्म की रक्षार्थ तन-मन-धन वारने से भी मत सकुचाना। कहने का आशय यह है कि आजीवन प्रभु के चरणों में यानि सत्य आद् ज्ञान स्त्रोत से जुड़े रह त्याग भाव से धर्म के मार्ग पर मज़बूत बने रहना।

अंध कूप विचों बली जी कढेसन, हर श्वास नाम ध्या।

सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि याद रख महाबीर जी अन्धकारमय कुएँ यानि मनुराज में फँसे हुए तेरे ख़्याल को इस पतित अवस्था से उबारने में समर्थ हैं इसलिए एक सुपुत्र

की तरह उनका कहना मान और हर श्वास नाम ध्याना सुनिश्चित कर और उन द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु तत्पर रह। जान ले कि ऐसा करने से मन में संकल्प के रूप में कोई फुरना उदित नहीं होगा और अपने वास्तविक स्वरूप में बने रहने हेतु अफुरता से, ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल साधे रखना सहज हो जाएगा। फलतः आत्मज्ञान प्राप्त हो जायेगा और पूर्ण सन्तोष मिल जायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मतुष्ट होकर सबसे अमीर हो जाओगे और किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं खलेगा। इस सन्दर्भ में सजनों नाम-ध्यान में स्थिर रह व परमार्थिक ज्ञान प्राप्त कर आपको इसी अमीरी की तरफ बढ़ना है व हर कामना से मुक्त हो जाना है। इस हेतु अब तक अन्दर जितना भी अज्ञान अन्धकार छा चुका है, उससे उबरना होगा ताकि कोई भी आपको आपके यथार्थ के प्रति भरमा न सके और आप समबुद्धि हो धर्मपथ पर बने रह सको। इसके लिए सजनों आपको किसी की कोई भी संसारी बात हृदय में धारण नहीं करनी अपितु जो भी बात एक कान से सुनो उसे दूसरे कान से बाहर निकाल देना। ऐसा करने से कोई बात अन्दर नहीं ठहरेगी और मन संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त हो भरपूरता का अनुभव करेगा। इस तरह विचार पकड़, त्रिलोकी के मालिक बन जाओगे और जगत उद्धारक बन जीवन का वास्तविक आनन्द मान सकोगे।

वाशना नू तुसी परे हटाओ, अन्धेरा देसन हटा।

उपरोक्त उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों वह कहते हैं कि वाशना अर्थात जन्म-जन्मान्तरों के प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख-दुःख की भावना यानि मिथ्या विचार या ख़्याल के चंगुल में फँस, सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता छोड़ कुरस्ते न पड़ जाना। याद रखो यदि ऐसा उद्यम कर दिखलाया तो वह आपके मन पर जमे हुए पूर्व जन्मों के संस्कारों के प्रभाव को मिटा देंगे। परिणामस्वरूप हृदय के आगे छाया हुआ, अज्ञान का घोर तम् हट जायेगा और उजाला होते ही सत्य प्रकट हो जाएगा।

कई सूरजां दा सूरज तू पावें, सारी उमर आनन्द दी बिता।

कहने का आशय यह है कि इस प्रयत्न से हृदय में कई सूरजों का सूरज उदित हो

जाएगा यानि आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार हो जाएगा। फलतः अपने वास्तविक सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का बोध कर आप सारी उमर आनन्द से व्यतीत कर सकोगे और इस अनमोल मानव चोले का समुचित लाभ उठा अपना जीवन सफल बना लोगे व मृतलोक पर फतह पा जन्म की बाज़ी जीत लोगे।

मैं दासी सुरति सुरति पुकारां, हरदम चरणां विच जा।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति की प्रवानगी द्वारा, परम पवित्र जीवन जीते हुए, इस उत्तम परिणाम को प्राप्त करने के तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सच्चेपातशाह जी, अस्थिर ख़्याल को आत्मेश्वर में साधने के लिए, पुकार-पुकार कर हरदम अपने मूल आद् स्रोत से जुड़े रह जाग्रत अवस्था में बने रहने का निर्देश दे रहे हैं ताकि वह उसी विशुद्ध भाव पर समरस बने रहना उचित समझे और तद्नुकूल निर्मल आचार-विचार-व्यवहार धारण कर, निरासक्त व निर्विकार होकर इस जगत में निषंग, बेखौफ़ा-बेखतरा विचर सके। सजनों यह अपने आप में समभाव-समदृष्टि हो, विचार ईश्वर है अपना आप के भाव अनुकूल जो प्रकाश है मन मन्दिर, उसी प्रकाश का जग अन्दर अनुभव करते हुए निष्काम भाव से जीवन जीने की बात है।

इस भजन के भावार्थ से सारतः सजनों स्पष्ट होता है कि आज हर इंसान कलुकाल के दुष्प्रभाववश परमार्थ का रास्ता छोड़, स्वार्थपरता के सिद्धान्त अनुसार जीवन जीने का ढंग अपना चुका है जिसके कारण उसके मन में हर पल कुछ पाने की इच्छा सताती रहती है। निःसंदेह इसी वजह से उसका ख़्याल हरदम संसार में इधर-उधर भटकता रहता है और वह अर्थपूर्ण जीवन जीने में असफल हो, अपना जन्म बरबाद कर बैठता है। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे लिए बनता है कि हम भी समय रहते अपने ख़्याल की अवस्था की भाल करें और उसे युक्तिसंगत सदा अपने सच्चे घर में साधे रखने के प्रति जागरूक रहें। सजनों यह अविचार युक्त कवलड़ा रास्ता छोड़ने हेतु, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति प्रवान कर, विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपनाने की व सही अर्थों में यथार्थता से जीवन जीने की बात है। इसी प्रयत्न से हमारी सुरत अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच सकती है और जीवात्मा विश्राम को प्राप्त कर सकती है। ऐसा शुभ होने पर जानते हो

क्या कह उठोगे:-

(श्री साजन जी के मुख दे शब्द)

ख़्याल जदों अपने घर विच राहवे, तदों जीव विश्राम नूं पावे।
जेहड़े इन्सान यत्न करन, यत्न करन।।
ख़्याल जदों अपने घर विच राहवे, इन्सान ध्यान इस्थर हो जावे।
संग लक्ष्मी चतुर्भुजधारी दा दर्शन पावे, कोई विरले दर्शन करन दर्शन करन।।
केहड़े रस्ते जाना सी सजनों, केहड़े रस्ते जाय चढ़े।
घर दा रस्ता भुल के ते, दूसरे शहर विच जाय वड़े जाय वड़े।।

सजनों यह सब सुनने समझने के पश्चात् अगर हम अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के प्रति गंभीर हैं तो समभाव अपना कर परस्पर सजन भाव का वर्त वर्ताव करना सुनिश्चित करना ही होगा और एकरूप हो जाना होगा।

दिनाँक 20 मई 2018 का सबक़

मानव स्वरूप की पहचान

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ आगे बढ़ने से पूर्व आज हम समझते हैं कि मनुष्य रूप में हम हैं क्या ?

हम मानव हैं। मानव यानि प्रकृति की सर्वोत्तम अद्भुत कलाकृति। मानव रूप में हमारा यह जन्म सभी जन्मों में श्रेष्ठ, महत्त्वपूर्ण व दुर्लभ है तथा मोक्ष का द्वार है।

हमारा यह मानव रूप, चैतन्य शक्ति आत्मा और पंचतत्त्व युक्त विनाशशील जड़ शरीर का समन्वय है। इस संदर्भ में जानो कि न तो चैतन्य शक्ति के बिना यह जड़ शरीर क्रियावन्त हो सकता है और न ही जड़ शरीर के बिना चैतन्य शक्ति कोई कार्य कर सकती है। अन्य शब्दों में मानव रूप में हमारा यह जड़ शरीर चैतन्य शक्ति का अमूल्य वाहन है। अतः दोनों को ही संतुलित विकास वांछनीय है। आत्मिक ज्ञान ही इस वांछनीय विकास की पूर्ति का एकमात्र साधन है यानि इसी से ही शरीर व आत्मा का उचित विकास हो सकता है और इन्सान के लिए हर परिस्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखना सहज हो जाता है।

जानो कि प्रकृति ने सर्वोत्कृष्ट मानव/प्राणी के भेस में हमारी रचना स्वयं अपने नियंता, सेवक तथा संचालक के रूप में की है। हममें प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ के गुण, दोष, कर्म तथा स्वभाव को जानने की तथा उसको सर्व हित के निमित्त प्रयोग करने की क्षमता है। हमारी क्षमताएँ असीम हैं। कोई भी कार्य हमारे लिए असंभव नहीं।

यही नहीं मानव रूप में हम सृष्टि कर्त्ता, संचालक भगवान के साकार प्रतिनिधि हैं। भगवान अर्थात् जो एक है, इच्छा/संकल्प रहित है, जिसका कोई रूप, रंग तथा नाम नहीं है, जो सच्चिदानंद और परमधाम स्थित है तथा समग्र विश्व जिसकी सुन्दर अभिव्यक्ति है। इस अर्थ से हम में से प्रत्येक मानव भगवान का ही रूप है यानि भगवान जो कि सब शक्तियों के भंडार हैं वह ही इस मानव शरीर/देह में स्थित होकर अपनी ब्रह्म सत्ता के माध्यम से लोक कल्याणार्थ अनेक लीलाएँ कर रहे हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस जगत में उसका प्रतिरूप बनकर सब कुछ उसी ईश्वर के निमित्त उसी सम शक्तिशाली होकर, समर्पित भाव से ही करो। यह 'विचार ईश्वर है अपना आप' पर खड़े रह, अपने धर्म पर स्थिर बने रहने की बात होगी।

स्मरण रहे जिस मानव शरीर में स्थित होकर परमात्मा आप नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ कर रहे हैं उसे नौ द्वारों वाली देवपुरी/देवालय कहा जाता है। इस देवालय में सोने का एक ज्योतिस्वरूप एवं प्रकाशमय परिपूर्ण रमणीय, मस्तिष्क है जो मानव के समस्त प्राणियों में विशिष्ट, विवेकशील व बुद्धिमान होने का परिचायक है। अतः जीवन आनन्दमय व्यतीत करने हेतु इसको प्रकाशमय रखते हुए तनावमुक्त रखना अनिवार्य है।

जानो परम कल्याणकारी, ज्ञानसागर, परमपिता, दिव्य चैतन्य शक्ति परमेश्वर द्वारा रचित यह विशाल ब्रह्मांड हम सबका कार्य क्षेत्र तथा एक अति सुन्दर रंगशाला है। हम सब उस परमात्मा के अभिन्न अंश, इस रंगशाला के अभिनेता हैं तथा इसको सुन्दर बनाने व इसकी मान-मर्यादा की रक्षा करते हुए, इसकी सुख-शांति में वृद्धि करने हेतु यानि लोक-परलोक संवारने के लिए हमारा इस धरती पर प्रादुर्भाव हुआ है। इस तथ्य को याद रखते हुए इस जगत में निपुणता से अपना पात्र अदा करने वाले कुशल अभिनेता बनो, नेता नहीं।

इसके लिए ईश्वरीय आज्ञाओं/हुक्म को सुन-समझकर भली-भांति उनका समयबद्ध पालन करो और इस प्रकार सदा उसकी कृपा के योग्य पात्र बने रहो। इसी संदर्भ में अगर परोपकारी नाम कहाना चाहते हो तो शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर अपने इलाही स्वरूप को पहचान लो और अपने निकट सम्बन्धियों को भी उसकी नूरानी हस्ती से परिचित कराना अपना धर्म समझो।

मान लो कि इस रंगशाला में हम अकेले नहीं अपितु सब शक्तियों के स्रोत, ज्योतियों की ज्योति, आत्मा रूप में परमात्मा स्वयं हमारे अन्दर तथा हमारे सब ओर स्थित हैं यानि सर्वव्यापक हैं। इसी निष्ठा व आत्मविश्वास के साथ हमें अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान आत्म प्रकाश वल जोड़े रखते हुए, अपना अभिनय यानि जीवन का हर कारज निष्कामता व निर्भयता से सिद्ध करने के योग्य बनना है। ऐसा करने से हमारा ख़्याल, दृष्टिकोण व व्यवहार सदा सकारात्मक व समता से परिपूर्ण रहेगा व ब्रह्मांड की सब दिव्य शक्तियाँ तथा साधन स्वयंमेव हमारे पास आ जाएंगे। कहने का आशय यह है कि समभाव नज़रों में हो जाएगा और हम समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजनता का व्यवहार कर सकेंगे। सजनों जानों ऐसा अद्‌भुत होने पर ही हम परमार्थ के रास्ते पर स्थिर बने रह सहजता से परोपकार कमा अपना नाम रोशन कर पाएंगे।

इस संदर्भ में मत भूलना कि परमात्म तत्त्व को प्राप्त करना यानि आत्मप्रकाश के रूप में सर्वत्र अभिव्यक्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करना और अपना उद्धार करना हमारा स्वधर्म है। इसके विपरीत शरीर से अपना सम्बन्ध मानकर भोग और संग्रह में लगना हमारे लिए पर-धर्म के समान है यानि निज धर्म से च्युत होने की बात है। अतः निज मानव-धर्म के अनुसार मानवीय गुणों यथा संतोष, क्षमा, शील, प्रेम, अहिंसा, धैर्य, सत्य, सेवा, त्याग भाव आदि से युक्त होकर, अपने आचरण को उच्च तथा शिष्ट बनाते हुए पवित्र जीवन व्यतीत करना तथा अपनी शारीरिक, मानसिक/बौद्धिक व आत्मिक क्षमताओं को समुचित ढंग से विकसित करते हुए श्रेष्ठ व्यक्तित्व का प्रदर्शन करना हमारा परम कर्त्तव्य है। अतः इस कर्त्तव्य को धर्मसंगत निभाओ। निःसंदेह इस हेतु राग, द्वेष, घृणा, तेरी-मेरी, वैर-विरोध, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

आदि दुर्गुणों से रहित होकर व समभाव-समदृष्टि से युक्त होकर प्रकृति के सब भेदों की तथा सब पदार्थों के गुण-दोषों की जानकारी प्राप्त करनी होगी और आपसी सद्भावना व प्रेम से बिना किसी भेद-भाव/स्वार्थ-भाव के सर्व कल्याण हेतु उनका निष्कामता से प्रयोग करना व करवाना होगा ताकि हम प्रकृति के नियमों के अनुकूल सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से निर्दोष जीवन जी सकें व सबको भी इसी अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा दे सकें।

ऐसा करते समय सदा याद रखना कि मार्ग में आने वाली समस्याएँ, कठिनाईयाँ तथा असफलताएँ परीक्षा के रूप में हमारी दृढ़ता, धीरता व क्षमताओं का विकास करने के लिए अनिवार्य हैं। अतः इनसे घबराकर या निराश होकर, जीवन के प्रति नकारात्मक रवैया अपना कर हाथ पर हाथ रखकर मत बैठ जाना यानि अर्थहीन जीवन जीते हुए भाग्य/भगवान को दोष मत देना अपितु वीरों की भांति नियति के यानि अदृष्ट ईश्वरीय शक्ति के विधान पर सुदृढ़ विश्वास रखते हुए, प्रभु के हर हुक्म की पालना हँस कर सहज भाव से करना। इस तरह जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाली हर बाधा/परिस्थिति का सामना विचार शब्द को अंग-संग रखते हुए, साहस, शूरता व धीरता से करना और सच्ची लगन, एकाग्रता व शांति-शक्ति के बलबूते पर सत्य-धर्म पर डटे रहते हुए इन तमाम समस्याओं, कठिनाईयों तथा असफलताओं पर विजय प्राप्त कर लेना और ईश्वर के सपुत्र कहलाना। याद रखो यदि ऐसा कर लिया तो सुख-दुःख, जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी आदि में अपने चैतन्य स्वरूप में समरस स्थिर बने रह सकोगे साथ ही अमरता की प्रतीति कर मौत के भय से भी मुक्त हो जाओगे। यह होगा तमाम दुःखों, कष्टों, क्लेशों, तापों-संतापों व जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा अपने जीवन का अर्थ सिद्ध कर लेना यानि अमरपद प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लेना। इस अमरपद यानि मोक्ष को प्राप्त करने के बाद फिर कभी भी संसार में वापिस लौट कर नहीं आना पड़ेगा। इस तरह वेद-शास्त्र का यह कथन शत्-प्रतिशत् सही सिद्ध हो जाएगा कि 'वास्तव में मानव जन्म ही सब जन्मों का आदि तथा अन्तिम जन्म है। यदि मानव परमात्म प्राप्ति कर ले तो अन्तिम जन्म भी यही है और परमात्म प्राप्ति न करे तो अनन्त जन्मों का आदि जन्म भी यही है।'

यह सब जानने के पश्चात् सजनों सब मानेंगे कि हमारा यह मानव जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस मानव शरीर की महिमा विवेक को लेकर है, क्रिया को लेकर नहीं। इसलिए कहा गया है कि 'वास्तव में मनुष्य कर्मयोनि नहीं है वरन् साधन योनि है। जो साधक नहीं है, वह देवता या असुर तो हो सकता है पर मनुष्य नहीं हो सकता'। अतः बुद्धिहीनों की तरह विषय भोगों में रत हो, इसे नीचतापूर्ण दुराचारी कर्मों में मत गंवाओ अपितु इस जीवन की सफलता के लिए, मानव रूप में सबको एक समान समझते हुए, सबसे समरूप एकता का व्यवहार करने में ही अपनी शान समझो। कहने का आशय यह है कि अच्छे-बुरे, बड़े-छोटे, अपने-पराए के भेद-भाव से रहित होकर, विश्व के समस्त प्राणियों के हृदय में एक ही दिव्य तेज का अनुभव करो और समभाव-समदृष्टि अनुरूप परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करना सुनिश्चित करो। इस तरह हरदम सावधान रहते हुए, सुख-दुःख दोनों से ऊपर उठो व समभाव को अमल में लाने वाले सच्चे पुरुषार्थी व सदाचारी बनो।

याद रखो ऐसा पुरुषार्थी बनने हेतु शारीरिक और मानसिक दोषों को त्याग कर, सदा अपने मन-वचन-कर्म को आत्मा के समान निर्मल, कोमल और पवित्र बनाए रखना सुनिश्चित करना होगा। तभी इस अनमोल मानव जीवन को पाकर आत्मोद्धार कर सकोगे। इस संदर्भ में मत भूलना कि प्रत्येक मानव अपना उद्धारक आप ही है। न तो कोई किसी की अवनति के लिए उत्तरदायी है और न कोई किसी की उन्नति में अवरोध पैदा कर सकता है। अतः हममें से प्रत्येक "विचार ईश्वर आप नूं मान" परमात्मा के दिशानिर्देशन में अपनी बुद्धि द्वारा मन को नियंत्रण में रखकर अपना जीवन सफल बना सकता है। इस महत्त्वपूर्ण बात को याद रखते हुए हमें भी अपना जीवन सफल बनाने हेतु सर्वव्याप्त ब्रह्म तत्त्व का अनुभव करना है और अपने जीवन के प्रयोजन को समझते हुए, परोपकारिता की भावना से ओत-प्रोत हो, सबकी सेवार्थ अपना यह अनमोल मानव जीवन निष्काम भाव से समर्पित कर देना है।

इसी संदर्भ में आओ उपरोक्त बातचीत को दूसरे शब्दों में समझते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानते हैं कि हम सब इस दुनियां में क्या करने आए हैं:-

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

दुनियां ते आके एकता पकड़ो इन्सान।
फिर तुसां ईश्वर नूं पाओ महान।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख दी बोलियां)

ओ इन्सान इस दुनियां ते तूं की करन आया।
ओ ज़रा सानुं दस तो सही, ओ ज़रा सानुं दस तो सही,
तूं की करन आया।
ओ इन्सान तैनुं किस बनाया ओ इन्सान तैनुं किस बनाया।
ओ ज़रा सानुं दस तो सही, ओ ज़रा सानुं दस तो सही,
तूं की करन आया।।
ओ किसने कीता है तैनुं पैदा किसने तैनुं है उपजाया।
ओ ज़रा सानुं दस तो सही, ओ ज़रा सानुं दस तो सही, तूं की करन आया।।

(अब इन्सान उत्तर देता है)

जिवें सुनार गहना बनाये, नग पालश नाल सराफ़ सजाये।
हुण मैं दस्सां ही क्या, हुण मैं दस्सां ही क्या, मैं की करन आया।।
ईश्वर स्वरूप मैं आया, ईश्वर ने मैनुं है सजाया।
हुण मैं दस्सां ही क्या, हुण मैं दस्सां ही क्या, मैं की करन आया।।
कर्मानुसार माता दे गर्भ विच आया, कारियां दे कारीगर ने इन्सान बनाया।
उस ईश्वर ने अंग अंग मेरा है सजाया।
हुण मैं दस्सां ही क्या, हुण मैं दस्सां ही क्या, मैं की करन आया।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

ईश्वर सिर ताज जे खालस सोना, ईश्वर सिरताज जे खालस सोना।
गर तुम हो ईश्वर खालस सोना फिर खोट तेरे बदन में क्यों निगाह आया।
ओ ज़रा सानुं दस तो सही, ओ ज़रा सानुं दस तो सही, तूं की करन आया।।
है खोट तेरे बदन में तां पकड़ तू आप नूं।
शहनशाह हनुमान जी तैनुं पकड़ना सिखाया ऐहो तरीका तुहानुं समझाया।

ओ ज़रा सानुं दस तो सही, ओ ज़रा सानुं दस तो सही, तूं की करन आया।।

(अब इन्सान उत्तर देता है)

मैं खालस सोना आया ईश्वर नू भुला के आल्हा जन्म गंवाया।
खोट भर लिया इस बदन में, बेसमझी दे विच आके जीवन सफल न बनाया।
हुण मैं दस्सां ही क्या, हुण मैं दस्सां ही क्या, मैं की करन आया।।

(अब श्री साजन जी कह रहे हैं)

शब्दः-

हनुमान जी दे चरणों में आ, इन्सान बुद्धि अपनी ठिकाने ला।
उन्हां दे वचनां दी पालना करके, ईश्वर नूं रिझाई जा।।
इस जगत ते तूं इन्सान जो आया, उस ईश्वर नूं तैं क्यों नहीं पाया।
आल्हा जन्म तैनुं अनमोल मिलया, बृथा ऐवें गंवाया।।
उस ईश्वर दे मिलने दी तैनुं है चाह, इष्ट देव अपने नूं तूं मना।
समभाव समदृष्टि दा रस्ता देवन तैनुं बता, फिर तूं उस ईश्वर परम पिता नूं पा।
जद इन्सान नूं समझ है कि मैं वस्त हां पराई, फिर वी इन्सान नूं समझ न आई।
फिर वी करे अजब अजीब कमाई,
फिर वी ईश्वर उस परम पिता दे मिलने दी समझ न आई।।
ओ इन्सानों उस ईश्वर नूं तुसां मिलना चाहवो बुद्धि अपनी टिकाणे लावो।
उस परम पिता नूं पावो, उस परम पिता नूं पावो।।

सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह हम, आत्मपद को प्राप्त करने हेतु कैसे आत्मविजय प्राप्त करनी है इसके विषय में बातचीत करेंगे।

दिनाँक 27 मई 2018 का सबक़

आत्मविजय-1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात्
ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात्
ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इस संसार में सत् और असत् दोनों विद्यमान हैं। यहाँ सत् से तात्पर्य सर्वोच्च आत्मा, ब्रह्म से है जो धारण कर्त्ता को नित्य भाव में स्थिर रख व हृदय को पवित्र रख, उसे आत्मज्ञानी व सजन पुरुष बना, धीरता से श्रेष्ठ पद प्राप्त करने के योग्य बनाता है। इसी तरह असत् से आशय मिथ्यात्व व शरीर से है, जो सत्ताहीन होने के कारण इंसान की बुद्धि को भ्रमित कर, उसके मन को अस्थिर व चंचल कर, इस तरह खोटा बना देता है कि वह सदाचार के विरुद्ध दुराचरण करने के लिए बाध्य हो जाता है। इससे सजनों स्पष्ट हो जाता है कि इंसान के लिए सत् आत्मा के प्रति अपने ख़्याल को ध्यान स्थिर कर यानि मूलमंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा, सर्वव्याप्त ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर, ब्रह्म भाव को धारण करना व ब्रह्मवृत्ति होकर इस मिथ्या मायावी जगत में विचरना ही श्रेयस्कर है।

इसी तथ्य को यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो वर्तमान युग में सत् की तुलना में

असत् की मात्रा अधिक है। इसी कारण सजन पुरुष तो दो-चार ही हैं, पर दुर्जनों की भारी भीड़ चारों ओर जमा है। यही स्थिति सजनों मनोराज्य की भी है। इसमें सद्-वृत्तियाँ, सद्-इच्छाएँ, सत्-संकल्प और सद्-भावनाएँ कम हैं और दुष्प्रवृत्तियाँ, बुरी/नीच इच्छाएँ, विषय-वासनाएँ, दुर्जनता एवं दुर्भावनाएँ बहुत हैं। इनके बहुलांश अर्थात् अत्याधिक मात्रा में विद्यमान होने के कारण ही बुराईयों पर फतह पा, आत्मविजय प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है । आशय यह है कि ये आत्मविजय की साधना के पथ के तीखे और कठोर शूल हैं जिन्हें भेद कर आगे बढ़ना नामुमकिन सा प्रतीत होता है। इस संदर्भ में सजनों हम मानते हैं कि इन बाधाओं से घिरा साधना पथ दुर्गम अवश्य है परन्तु अगम यानि दुर्बोध नहीं। तात्पर्य यह है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के पास होने के बावजूद हमारे लिए पथ के इन तीखे और कठोर शूलों अर्थात् नकारात्मकता को भेद कर आत्मविजय प्राप्त करना कदाचित् असंभव नहीं। निःसंदेह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचार को धारण करने से व सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त समभाव-समदृष्टि की युक्ति को प्रवान करने से, हम अवश्य ही मन की इन तमाम दुष्प्रवृत्तियों पर एक-एक करके नियन्त्रण स्थापित करते हुए आत्मसुधार के पथ पर सहजता से सतत् रूप से अग्रसर हो सकते हैं और ऐसा सुनिश्चित कर अन्य इंसानियत के प्रतीक युग पुरुषों की तरह आत्मविजय पा सकते हैं। इसी संदर्भ में आओ आज जानते हैं कि आत्मविजय से क्या अभिप्राय है व यह कार्य हमने कैसे सिद्ध करना है:-

आत्मविजय

आत्मविजय शब्द का मुख्य अर्थ है अपने पर विजय अर्थात् अपने मन, अपनी इन्द्रियों, अपनी इच्छाओं-कामनाओं-संकल्पों, शारीरिक स्वभावों व मृतलोक पर फ़तह। आत्मविजय मन, इन्द्रिय, कर्म आदि समस्त विषयों में आत्मा की विजय दर्शाता है। इस तरह आत्मविजयी जितेन्द्रिय होने के कारण मन की तमाम विकारी स्थितियों यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ममता, संकल्पों, शारीरिक स्वभावों आदि पर तो फतह प्राप्त करता ही है, साथ ही वह समवृत्ति एक दर्शन में स्थित हो शांत भी हो जाता है। ऐसा होने पर उस इन्सान के अन्दर किसी प्रकार की कोई इच्छा ही नहीं रहती और न ही फिर

वह किसी से कोई अपेक्षा, गिला शिकवा या शिकायत करता है। इस तरह समस्त कामनाओं व संकल्पों पर फ़तह पा वह मृतलोक को जीत परमेश्वर नाम कहाता है।

सजनों व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक हित के दृष्टिगत मानव-मन की समस्त हानिप्रद दुष्प्रवृत्तियों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर, संकल्प कुसंगी पर विजय पाना अनिवार्य है। इसी अनिवार्यता की पूर्ति सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, सजन-भाव के वर्त-वर्ताव द्वारा, मृतलोक पर फ़तह पाने से सहज ही हो सकती है। जैसा कि कहा भी गया है:-

सजनों सजन शब्द चलाओ जित्तो मृतलोक नूं,
सजनों जित्तो मृतलोक नूं।

सबकी जानकारी हेतु यहाँ मृतलोक को जीतने से तात्पर्य सतयुगवासियों की भांति शारीरिक स्वभावों पर (संकल्प के स्वभावों पर) फतह पा, जन्म-मरण यानि आवागमन से निज़ात पाने से है। इस हेतु बस जिह्वा से सबको सजन बुलाते हुए, अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र, संकल्प को स्वच्छ व सबके प्रति एक निगाह एक दृष्टि रखते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह के कुसंग से बचे रहना होता है और स्वभावों में सजनता अपना, एक परिपूर्ण इंसान की तरह आपस में सजनता अनुरूप ही वर्त-वर्ताओ करना होता है। इस प्रकार अपने आपको पकड़ते हुए खालस सोना होते जाना होता है और अपने प्रकाश को पाना होता है। ऐसा करने से जीवन का हर कदम विचार से उठता है और बुद्धि विचार प्रबलता धारण करती है जिससे दिव्य दृष्टि हो जाती है। दिव्य दृष्टि होने पर सारा ब्रह्माण्ड एक निगाह आता है और मौत का भय भी नहीं रहता। इस तरह सजन शब्द बुलाने से बाकी कोई संकल्प नहीं रहता और जीव एक आत्मा होकर परमात्मा से मेल खाकर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है, उसकी पहचान कर, रौशन हो जाता है। यह होती है सजनों सर्वोत्तम आत्मविजय, जिसके परिणामस्वरूप इंसान नकारात्मक अथवा ध्वंसात्मक स्थितियों से बच, पापकर्मों में लिप्तता के प्रहार से बच पाता है और उसकी जीवन की दिशा सदैव सकारात्मक और रचनात्मक बनी रहती है, जिसके फलस्वरूप वह परोपकारी नाम कहाता है।

याद रखो सजनों ऐसा आत्मविजयी बनने हेतु मन में आत्मोद्धार की प्रबल इच्छा का होना अनिवार्य है। जब तक मन में आत्मकल्याण करने का तीव्र भाव उदय नहीं होगा तब तक न तो इस दिशा में चिन्तन यानि सोच-विचार व मनन कर पाओगे और न ही आत्मविजय की ओर प्रवृत्त हो पाओगे। सजनों यह अपने आप में जीवन व्यर्थ गँवाने की बात होगी। इसके विपरीत आत्मकल्याण की इच्छा जाग्रत होने पर जब नाना प्रकार की कामनाओं व उसके कारण हर पल-हर क्षण मन में उठने वाले संकल्प-विकल्पों व प्रलोभनों का प्रतिरोध कर, बुराईयों से बचने का भरसक प्रयत्न करोगे तो पाप कर्मों में लिप्त होने की सम्भावना क्षीण होती जाएगी। इस प्रकार क्षण-प्रतिक्षण इस प्रयत्न की पुष्टि के साथ-साथ प्रत्येक पल एक महान विजय हासिल करोगे और एक दिन आत्मविजय के अभियान में सफल हो, जन्म की बाज़ी जीत लोगे। याद रखो सजनों एक बार यह विजय हासिल करने के बाद फिर दोबारा आवागमन के चक्कर में फँस, जन्म-मरण की पीड़ा नहीं भुगतनी पड़ती। इस जीत के प्रति उत्साहित करते हुए ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

अपनी किस्मत जितनी जे, हिम्मत इंसानों हारो न,
अपनी किस्मत जितनी जे।
हनुमान जी दे वचनां दी पालना करो, दिलबर नूं दिलों विसारो न।।
दिलबर नूं दिलों विसारो न, अपनी किस्मत जितनी जे।
हिम्मत इंसानों हारो न, अपनी किस्मत जितनी जे।।
इक वारी बाज़ी जित लई अपनी, फिर जित सदा ही तुम्हारी है।
फिर जित सदा ही तुम्हारी है, फिर जित सदा ही तुम्हारी है।।
क्या दुनियां क्या नगर निवासी, क्या कर सके मौत विचारी है।
क्या कर सके मौत विचारी है, क्या कर सके मौत विचारी है।।

इस संदर्भ में सजनों यदि हम हकीकत में आत्मविजयी होना चाहते हैं तो हमें मानना होगा कि मनुष्य अपनी किस्मत बनाने व बिगाड़ने वाला ख़ुद है यानि अपने भले-बुरे का स्वामी आप है दूसरा कोई भी नहीं। आशय यह है कि मायावी पदार्थों के सम्पर्क में आने पर, उसके मन में उठने वाले भाव ही, उसके अच्छे/बुरे आचरण का मूल व

भाग्य निर्माता होते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि भाव ही भावना में, भावना ही संकल्प यानि निश्चित मत/विचार में, निश्चित मत/विचार ही करनी में, करनी ही प्रकृति यानि स्वभाव में, प्रकृति यानि स्वभाव ही चरित्र में और चरित्र ही उसकी किस्मत/प्रारब्ध में रूपांतरित होता है। भाव के रूप-स्वरूप के आधार पर ही मनुष्य चरित्रवान या दुश्चरित्र बनता है।

इस संदर्भ में यदि मानव का भाव, विशुद्ध व सात्विक होता है तो उसका ख़्याल व ध्यान निरन्तर आत्मा की चेतनाशक्ति के सम्पर्क में बना रहता है। फलतः उसके मन का आशय यानि नीयत, नेक व स्पष्ट बनी रहती है व उसके विचार उच्च व उदार होते हैं। उसका संकल्प स्वच्छ व दृष्टिकोण सकारात्मक बना रहता है तथा हृदय संतोष व धैर्य जैसे महान सद्गुणों से भरपूर रहता है। तभी तो ऐसे मानव की बुद्धि उच्च, स्वतन्त्र, प्रकाशित व स्थिर हो जाती है और धीरे-धीरे वह समबुद्धि जगत के पदार्थों की आकर्षण शक्ति से कदाचित् विचलित नहीं होता और सुख-दुःख, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी आदि में समभाव से रहते हुए अपने यथार्थ स्वरूप में स्थित रहता है। जानो यह अपने आप में ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल रखते हुए, सच्चाई-धर्म पर एकरसता से सुदृढ़ बने रह, यथार्थता अनुरूप जीवन जीने की बात होती है। यहाँ यथार्थता अनुरूप जीवन जीने से अभिप्राय, शरीर के स्वामित्व यानि अहं भाव से मुक्त हो सदा संकल्प रहित अवस्था में स्थिर बने रहने से है। जान लो इस संकल्प रहित अवस्था में स्थिर बने रहने वाला भाव विकार के चक्रव्यूह से स्वतंत्र हो रूप, रंग, रेखा से आज़ाद हो जाता है यानि अपनी किस्मत आप जीत आवागमन से मुक्त हो सकता है। यह होती है सजनों पूर्ण आत्मविजय जिसके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

किस्मत मुकी किस्मत झुकी, किस्मत दा विस्तार गया,
किस्मत दा विस्तार गया।
ओ उदर विच न आवे किस्मत लिखी न जावे,
किस्मत दा भान्डा फोड़ दिया।
किस्मत दा भान्डा फोड़ दिया, किस्मत दा भान्डा फोड़ दिया।।

सजनों यह जानने के पश्चात् क्या आप भी किस्मत का भान्डा फोड़ जगत से आज़ाद हो पूर्ण आत्मविजय प्राप्त करना चाहते हो?

हाँ जी।

तो याद रखो विषयों में कोई सुख निहित नहीं है अपितु विषय ही हमारे मन में नाना प्रकार की कामनाओं व संकल्पों-विकल्पों को उपजाने का व तदुपरांत भोग इच्छा के कारण जन्म-जन्मांतरों तक इस मृतलोक में फँसे रह, दुःखों को प्राप्त होने का व संसार सागर में गोते खाने का कारण हैं। अतः विषयों के प्रति आसक्ति त्याग कर, विषयों की प्राप्ति के लिए तरह-तरह से छल-कपट, झूठ-चोरी-ठगियाँ, रिश्वतखोरियाँ, प्रतिद्वन्द्वता, प्रतिस्पर्धा आदि करना छोड़ दो। इस तरह दुराचरण और दुश्चिंतन के प्रभावी होने के लिए उपयुक्त कुअवसर आने पर भी मन और भावनाओं को वश में रखते हुए, मन-वचन-कर्म से उसमें प्रवृत्त न होवो। तात्पर्य यह है कि जो विषय-विकार, जगत के माध्यम से आपके मन के अन्दर घर कर गए हैं और वासनाओं के रूप में बार-बार उपज कर आपको परेशान कर रहे हैं, उनके साथ युद्ध करो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार सम, सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, अपनी समस्त पाँचों शक्तियाँ लगाकर, उन्हें मार मुकाओ। मत भूलो किसी दुर्भाव विशेष को आवेशित करने वाली स्थिति ही आत्मविजय की कसौटी है, अतः किसी भी परिस्थिति को अपने विवेक पर हावी मत होने दो अन्यथा आप की प्रगति रुक जाएगी और आप अपना घर कभी भी सतयुग नहीं बना पाओगे।

इस सन्दर्भ में यह भी जानो कि कुसंग और कुमति विजय पथ की बड़ी बाधाएँ हैं। अतः संकल्प कुसंगी और बुरे दोस्तों से सदा दूर रहो और समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, ब्रह्म भाव अपना कर भावों को निरंतर विशुद्ध रखने की कला सीखो और आत्मविजयी होने की तरफ अपना कदम बढ़ाओ। घबराओ नहीं अपितु आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने दोषों को पहचान कर, खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए उन पर विजय पाने का युक्तिसंगत भरसक प्रयास करो। याद रखो जो इस तरह कदम-कदम पर अपने आप को यानि अपने स्वभावों को विचार से पकड़ते हुए, उन्हें जीत

लेता है वही सच्चा विजेता कहलाता है। अतः आपको-हमको भी नित्य अपने अंतर में अपने आपको जीतने का प्रयास तब तक करते रहना है जब तक पूर्ण विजय यानि दुर्लभ अमर पद प्राप्त नहीं हो जाता।

सबकी जानकारी हेतु आत्मविजय के विषय में इससे आगे बातचीत अगले सप्ताह होगी।

दिनाँक 3 जून 2018 का सबक़

आत्मविजय-2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों मनुष्य में जीने की इच्छा बड़ी प्रबल है। इसी इच्छा की प्रबलता के कारण उसमें जयेषणा जागती है यानि वह दूसरों पर विजय पाना चाहता है। उन्हें अपना वशवर्ती बनाना चाहता है। दूसरों पर जयेषणा की सिद्धि के दो पथ हैं - भौतिक और आत्मिक। भौतिक पथ पर मनुष्य दैहिक-बल से, सैन्य-बल से, शस्त्र-बल आदि से दूसरों को अपनी बात मानने पर विवश कर देता है और आत्मिक-पथ पर अपने सद्गुणों के प्रभाव से, प्यार से उन्हें अपना वशवर्ती बना लेता है। इस संदर्भ में चयन हर इंसान का व्यक्तिगत स्तर पर अपना होता है।

कहने का आशय यह है कि जहाँ स्वार्थपरता के सिद्धान्त अनुसार युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों पर जीत प्राप्त कर उन्हें अपने अधिकार में लिया जाता है और उनकी यह जय उनकी विजय का द्योतक बन, जीतने वाले के मन में हर्ष व अहं भाव उत्पन्न करती है, वहीं परमार्थ में जब कोई स्थिर बुद्धि इंसान अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, मित्रवत् भाव से उन का यथोचित उपयोग करते हुए, अपने जीवन के कर्त्तव्य परस्पर समभाव व सजन भाव से सही ढंग से निभा पाने में समर्थ हो जाता है तो उसका

निर्भयता व अखंडता से सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर निर्बाध बने रहना उसकी विजय प्राप्ति का यानि ब्रह्ममय हो जाने का द्योतक होता है।

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि भौतिक-पथ से आत्मिक-पथ श्रेष्ठ है, क्योंकि यह रचनात्मक है। इस पर ध्वंस नहीं, सृजन है, संघर्ष नहीं समर्पण है, किन्तु इस पथ का निर्माण समर्पण भाव से विचार को धारण कर व वर्ताव में ला आत्मविजय प्राप्ति से होता है, बारूदी धूल से नहीं। अतः अपनी जीने की इच्छा की पुष्टि और जयेषणा की तृप्ति के लिए आत्मविजय प्राप्त करना अति आवश्यक है। इसे प्राप्त किए बिना किसी पर विजय नहीं पाई जा सकती। तभी तो वेद-शास्त्रों में कहा गया है कि 'जो एक को (स्वयं को) जीत लेता है वह समग्र संसार को जीत लेता है। यहाँ स्वयं से तात्पर्य इन्द्रियों व मन को जीतने से है। याद रखो जो इनको जीत लेता है वह जगत को जीत लेता है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

'पंज ज्ञान इन्द्रियाँ पंज कर्म इन्द्रियाँ जित के ते,
मन जितियां जग जितिया जान सजनों।
जित लिया उस कुल जहान सारा उन्हां दा दुनियां ते हो गया नाम सजनों।।

जानो ऐसा अक्लमंद व ताकतवर इंसान ही परमेश्वर के पास रहने के योग्य होता है और उनके पार्षद अथवा सेवक के नाम से जाना जाता है। ऐसे समर्पित उपासक का ही ख़्याल अर्थात् सुरत जगत में विचरते समय दुःख-सुख सम कर जान, स्थाई रूप से अपने पवित्र सच्चे घर में निवास करती है और बराबर परमेश्वर संग बने रह नियमित रूप से उन द्वारा प्रदत्त शब्द ब्रह्म विचारों अनुसार व्यवहार करते हुए, अटलता से सेवारत रहती है। इस तरह वह दासी भाव से अपने घर में स्थित बने रह, इस जगत का हर कार्य परमेश्वर/स्वामी को सुख पहुँचाने के निमित्त निष्कामता से करने हेतु सदा तत्पर रहती है और दाता भाव से इस जगत में विचरती है। सजनों ऐसा सुनिश्चित करने के कारण ही उसके लिए ध्यान स्थिर होकर परमार्थ मार्ग पर उन्नति करना सहज हो पाता है। इसीलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

ख़्याल जदों अपने घर विच राहवे, इंसान ध्यान इस्थर हो जावे।

अर्थात् जब ख़्याल अपने घर में स्थिर रहता है तो इंसान ध्यान स्थिर हो जाता है। जानों कि ध्यान स्थिर होना अपने आप में मस्तक की ताकी खुलने की बात होती है यानि आत्मबोध द्वारा आत्मतुष्ट होकर जगत में सदा संकल्प रहित अवस्था में बने रहने की बात होती है। इस उत्तम अवस्था में जीव स्वतः ही प्रभु के संरक्षण में रहते हुए, सरलता व सहजता से अपने यथार्थ गुणों व ज्ञान से परिचित हो, स्वतन्त्र रूप से उन विचारों को यथा व्यवहार में लाने में दक्ष हो जाता है और इस तरह श्रेष्ठता को प्राप्त हो, बेख़ौफा-बेख़तरा वहाँ की व्यवस्था यहाँ पर कायम करने के योग्य बन जाता है। ऐसा होने पर उसे जगत नहीं भरमा पाता। तभी तो वह सेवा वृत्ति से परमेश्वर की आराधना करते हुए, उन द्वारा प्रदत्त सेवा का एक कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र की तरह भार सहजता से उठा, धर्मज्ञ पुरुष कहलाता है और जितेन्द्रिय बन आत्मविजयी हो आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। इस तथ्य से सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित दासी/दास भाव में बने रहने की महत्ता स्पष्टतया समझ में आती है।

इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी ख़ुद को सही तरीके से स्पष्टतः जानने के लिए अपने अन्दर जगत विजयी होने की अभिलाषा उत्पन्न करें ताकि हमें यह कोई न कह सके कि हम अपने जीवन का लक्ष्य परमपद पाने में असमर्थ हैं। यहाँ जानो कि इसके प्रति जरा सी भी कमजोरी या लापरवाही हमें मानवीय चलन के विपरीत, सांसारिक चलन अपनाने हेतु मजबूर कर सकती है और हमें दोगलेपन, तरह-तरह के ऊट-पटांग, द्वैष-पूर्ण, निंदनीय वार्तालाप व व्यवहार में फँसा, जरजरी भूत बना सकती है। सजनों जानो हमारे साथ ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण होना, संसार के साथ ख़्याल का योग होने की व परमेश्वर से वियोग होने की यानि दुःखमय अवस्था को प्राप्त हो जीवन हारने की बात होगी।

सजनों हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम सहर्ष समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना, परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव, निष्काम-भाव से करते हुए कामनामुक्त अवस्था में स्थिरता से बने रहें और जीवन विजयी होने के आनन्द की अनुभूति करते हुए, विजय सूचक धर्म की विजय पताका जगत में बुलंद रखने के योग्य बनें। यकीन मानो सजनों अगर ऐसा कमाल कर दिखाया तो आप विचारयुक्त अर्थपूर्ण जीवन जीने का पुरुषार्थ दिखा, अपना जीवन चरित्र सुंदर एवं परम पवित्र बनाने में अवश्यमेव कामयाब हो जाओगे।

इस संदर्भ में जानो कि जैसे सौन्दर्य अपनी ओर सबको सहज ही आकर्षित कर लेता है वैसे ही सद्गुण से भरपूर सुन्दर जीवन चरित्र भी सब पर सकारात्मक स्थायी प्रभाव डालता है। अतः इस उपलब्धि के दृष्टिगत दुर्गुणों से मुक्त और सद्गुणों से समृद्ध होकर, आदर्श जीवन चरित्र दर्शाने का पुरुषार्थ दिखाओ। ऐसा करने पर ही पूर्णतया आत्मविजयी कहलाओगे और आप सबके व सब आपके सजन व प्रिय बन एकता के प्रतीक बन जाएंगे। इस विषय में वेद-शास्त्रों में भी कहा गया है:-

'जिसने अपने आप को जीत लिया, वह स्वयं अपना व सबका बन्धु है। परन्तु जिसने स्वयं को नहीं जीता वह स्वयं अपने शत्रुत्व में सबसे शत्रुवत् व्यवहार करता है'।

अतः याद रखो सजनों मनुष्य युद्ध में सहस्रों पर विजय पा सकता है परन्तु जो समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन द्वारा हर्ष-विषाद, राग-द्वैष, सुख-दुःख, जय-पराजय आदि समस्त द्वन्द्वों से ऊपर उठ स्वयं पर विजय पा लेता है, वही सबसे बड़ा विजयी है। इसलिए आत्मविजय को अनेक आत्मोत्सर्गों से श्रेष्ठ माना गया है और कहा गया है ऐसे आत्मविजयी की ही आत्मा का वरण स्वयं आप परमात्मा करते हैं।

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के उदात्तीकरण का सीधा सम्बन्ध उसकी आत्मा से होता है न कि भौतिक शरीर से। आत्मविजय के लिए सत्-शास्त्र में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर, अभ्यास द्वारा व्यवहार में उतारना व इस तरह आत्मानुशासन द्वारा आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त कर तत्त्वज्ञानी बनना अति आवश्यक है। यही सब प्रकार से अपने को वश में रखते हुए, सरलता व सहजता से स्वयं पर विजय पाने यानि आत्मविजय प्राप्त करने का द्योतक है और अमृत-जीवन का द्वार है।

सबकी जानकारी हेतु आत्मविजय के विषय में अब पुरुषार्थ कैसे करना है, उसके विषय में अगले सप्ताह जानकारी प्राप्त करेंगे।

दिनाँक 10 जून 2018 का सबक़

आत्मविजय-3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताहों में सजनों हमने जाना कि पूर्ण आत्मविजय ही सबसे बड़ी विजय है जो इंसान को तभी प्राप्त होती है जब वह प्रत्येक कार्य अपने निजी अहं व कर्त्ता भाव को त्याग कर, ईश्वर के निमित्त, उसके हुक्मानुसार करता है। अन्य शब्दों में जो सब काम ईश्वर को हाज़िर नाज़िर जान कर, निष्काम व समर्पित भाव से शास्त्रविहित युक्ति अनुसार करता है, वह कभी नहीं हारता क्योंकि उसका सारा ध्यान विजय लक्ष्य पर केन्द्रित होता है व उसका शारीरिक-मानसिक व आत्मिक बल अथाह होता है। इस संदर्भ में सजनों आत्मविजय एक श्रेष्ठ सद्गुण है व साधना की चरम और दुर्लभ अवस्था है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए उद्देश्य की स्पष्टता, दृढ़ इच्छा शक्ति, लगन, निष्ठा, साहस, युक्तिसंगत परिश्रम तो आवश्यक है ही साथ ही नैतिक बल, आत्मसंयम व एकाग्रचित्तता का होना भी अपरिहार्य है। इन साधनों के विकास हेतु ही सुसंगति, नियमित रूप से सत्-शास्त्र का अध्ययन, चिंतन, मनन, विचार, चारों पहर नाम-अक्षर का सिमरन, ध्यान व निरंतर एक गुणी इंसान की तरह निष्काम भाव से प्रयासरत रहने की महिमा है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों विजयी होने के लिए सदैव अपने मनोबल को ऊँचा रखो। मन-मस्तिष्क में विजय प्राप्ति के अतिरिक्त किसी विपरीत विचार के लिए कोई स्थान न हो। याद रखो मन यदि दृढ़ है तो सफलता सुनिश्चित है। इसके विपरीत इन्द्रियाँ व मन यदि चलायमान है तो व्यक्ति शीघ्र ही तन-मन-धन व सम्बन्धों के प्रभाव में आ उनसे हार जाता है, फलतः विजय प्राप्ति असंभव हो जाती है। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि चंचल इन्द्रियाँ किसी को भी अपने वश में करने के लिए सदा उद्यत रहती हैं। अनेक तो सहज रूप में विषय रसों के गुलाम हो उनके वश में हो जाते हैं किंतु कुछ दृढ़ निश्चयी ऐसे भी होते हैं जो हर प्रकार के रसास्वादन से मुक्त हो उन इन्द्रियों की दिशा ही मोड़ देते हैं। समयबद्ध यत्न कर उन्हें बहिर्मुखी से अंतर्मुखी बना देते हैं और इन्द्रियजीत कहलाते हैं। आत्मविजय प्राप्त करने हेतु आप भी ऐसे ही इन्द्रियजीत बनो। याद रखो इन्द्रियों की ही भांति मन पर विजय पाना भी अति आवश्यक है। मन को जीत कर ही मनुष्य इस संसार में निःस्वार्थ व अकर्त्ता भाव से कर्म करते हुए, धर्म के मार्ग पर प्रशस्त हो सकता है और सदाचारितापूर्ण सत्कर्म कर सकता है। इसके विपरीत यदि वह ऐसा नहीं करता तो बुरे कामों में फँस कुकर्म-अधर्म करने लग जाता है। अतः अपने मन और इन्द्रियों दोनों को जीतने वाले जितेन्द्रिय बनो और बड़े बड़े प्रलोभनों के माया जाल से मुक्त हो असीम संतोष को पाओ। इससे व्यक्तित्व शील (जिसमें मनुष्यत्व के सभी आवश्यक गुण सम्मिलित होते हैं) और शक्ति का संगम स्थल बन जाएगा। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि शीलवान ही होश में रहते हुए अंतर्निहित आत्मिक शक्ति का सही तरह से प्रयोग कर सकता है। ऐसा होने पर आपकी जय आपके आचार-विचार व व्यवहार से प्रतिबिम्बित होती है और ईश्वर स्वयं आगे होकर आपका अभिवादन करते हैं और आप दुर्लभ अमर पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हो।

स्पष्ट है सजनों चित्त की भीतरी दुष्प्रवृत्तियों पर निरन्तर आत्मसंयम रखने का अभ्यास करने से ही आत्मविजय प्राप्त हो सकती है। निःसंदेह यह अभ्यास एक दिन की बात नहीं, इसके लिए लक्ष्य का निर्धारण कर, अपनी बिखरी शक्ति को उसी निश्चित दिशा में प्रवृत्त रखने का सतत् प्रयास करना होता है। तब जाकर व्यक्ति की सोच और स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन आता है और ऐसे पदार्थ और व्यक्ति निरर्थक लगने

लगते हैं जो लक्ष्य प्राप्ति में सहायक नहीं होते, बल्कि बाधक होते हैं। इस संदर्भ में की जाने वाली सतत् विचार प्रक्रिया ही लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होती है और आत्मविजय प्राप्त करने का हेतु बनती है।

ऐसा आत्मविजयी बनने हेतु सजनों सही तरीके से अपना आत्मविश्लेषण करना सीखो। इस हेतु अपने अच्छे-बुरे दोनों ही पहलुओं को देखो और आप अभी जैसे हैं वैसे कैसे बने, इसका भली-भांति मूल्यांकन करो। कहने का आशय यह है कि मानसिक/बौद्धिक रूप से निश्चेष्ट/सुन्न होकर मत बैठो अपितु आपके वर्तमान भाव/स्वभावों का स्वरूप बुरा क्यों बना, मानसिक रूप से उन कारणों को जानने/समझने की क्रिया करो। फिर कह रहे हैं सजनों कि बुरे से अच्छा इन्सान बनने हेतु सही तरीके से इस आत्मविश्लेषण की क्रिया को करो। जानो इस क्रिया को ठीक तरीके से न करने के कारण ही, खुद को नहीं संभाल पा रहे हो और अंदर घर कर गए विकार दीमक की तरह आपके शरीर व मानस को खोखला करते जा रहे हैं। सजनों इसी खोखलेपन के कारण शास्त्र को सुनने/पढ़ने के बावजूद भी कोई भी अच्छी बात/विचार आपके हृदय तक पहुँचता नहीं और स्मृति में ठहरता नहीं। अतः यदि चाहते हो कि ऐसा न हो तो ध्यान से देखो कि आपके अच्छे और बुरे गुण कौन से हैं और उन्हें आपने कैसे प्राप्त किया?

अब अंतर्निहित इन बुरे गुणों को नष्ट करने की प्रक्रिया शुरु करो। याद रखो यह दुर्गुण/बुरे स्वभाव भारी बोझे के समान हैं। इसी के कारण आपकी शक्ति का अपव्यय होता है और आपका मन-मस्तिष्क हमेशा दुविधा युक्त व तनावग्रस्त रहता है। इस द्वन्द्वात्मक वातावरण में फिर बुद्धि सही निर्णय लेने में धोखा खा जाती है यानि अंतर्निहित विवेकशक्ति का इस्तेमाल कर सही-गलत, भले-बुरे की परख ठीक से नहीं कर पाती। इस हानि के दृष्टिगत सजनों अपने स्वभाव से दुर्गुणों को निकाल फेंको और आत्मिक गुणों को एक-एक करके आत्मसात् करना शुरु करो। ऐसा करने से आपकी सहज स्वाभाविक सुंदरता अपने आप निखर कर सामने आएगी।

इस तरह फिर आप जैसे-जैसे एक-एक करके अपनी समस्त बुराईयों को पहचान कर उन्हें युक्तिसंगत उखाड़ कर फेंकते जाओगे वैसे-वैसे यह विश्वास अन्दर जाग्रत होगा कि

मैं आत्मविजयी हो सकता हूँ। इस तरह आप अधिकाधिक बलवान बनते जाओगे।

इस संदर्भ में अपनी कमजोरियों से कभी भी हतोत्साहित न होना क्योंकि ऐसा करने का अर्थ होगा कि आपने अपनी हार स्वीकार कर ली है। अतः ऐसा मत होने दो अपितु विश्लेषात्मक आत्मविश्लेषण द्वारा यानि अंतर्निहित विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा अपनी सहायता स्वयं करने में सक्षम बनो। याद रखो जो लोग अपनी विश्लेषात्मक बुद्धि का उपयोग नहीं करते वे हकीकत में सही से देख ही नहीं पाते। उनमें आत्मा का सहजात ज्ञान, अज्ञान से ढँक जाता है और वह अपने यथार्थ दिव्य गुणों, ज्ञान, शक्ति व स्वरूप को भूल जाते हैं। जानो इसी आत्मविस्मृति के कारण वे दुःख में पड़ते हैं। इस संदर्भ में मत भूलो कि जैसे ईश्वर ने हमें अपनी पलकें खोलकर प्रकाश के माध्यम से संसार को देखने की शक्ति दी है, ठीक उसी प्रकार आत्मप्रकाश द्वारा अज्ञान आवरण को हटा कर, अपने वास्तविक अलौकिक स्वरूप को प्रकट करने की शक्ति दी है। इस बात को भली-भांति समझने हेतु आँखें बंद करो। अब देखो कि क्या आपको कुछ निगाह आ रहा है?

निःसंदेह आप कुछ भी नहीं देख पा रहे क्योंकि प्रकाश का अभाव है।

अब पलकें खोलो और देखो क्या सब निगाह आ रहा है?

जानो ख़्याल व ध्यान दोनों के ही प्रकाश वल होने के कारण व्याप्त प्रकाश तथा प्रकाश में पड़ी हुई समस्त वस्तुएँ ठीक से नज़र आती हैं और उनका यथार्थ बोध हो पाता है।

इसी तरह अन्दरुनी वृत्ति में होता है। अन्दरुनी वृत्ति में भी ख़्याल व ध्यान दोनों जब आत्मप्रकाश की तरफ हो जाता है तो उस आत्मा में व्याप्त परमात्मा निगाह आ जाता है।

अतः सजनों यदि चाहते हो कि मस्तक की यह ताकी खुले और आत्मस्वरूप प्रकट हो तो प्रतिदिन नियम से रात्रि में सोने से पूर्व सही तरीके से अपना आत्मनिरीक्षण करो और पाई मानसिक कमजोरियों को युक्तिसंगत दूर करने का प्रयास करो।

पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए केवल रात्रि में ही नहीं अपितु दिनचर्या के दौरान भी यदा-कदा एक मिनट के लिए स्थिर होकर क्या कर रहे हो, क्या सोच रहे हो इसका विश्लेषण करो यानि ख़्याल, वाणी व कर्म तीनों पर निगाहबानी रखो।

याद रखो जो अपना आत्मविश्लेषण नहीं करते वह कभी नहीं बदलते। वे न बढ़ते हैं, न घटते हैं। बस जहाँ हैं उन्हीं स्वभावों में अटक कर रह जाते हैं और जीवन हार जाते हैं। यह अस्तित्व की अत्यन्त कठिन व ख़तरनाक अवस्था है। इस ख़तरनाक अवस्था से शीघ्रतातिशीघ्र उबरो।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों दिन-रात, चारों पहर सदैव सचेत रहो और देखो कि हमारे अन्तस्तल/हृदयपटल पर क्या घट रहा है। इस तरह जो मानव धर्म के विरुद्ध हो व जिसे नहीं करना चाहिए उस ओर जब मन आकृष्ट होता प्रतीत हो तो उसे प्रयासपूर्वक रोको यानि वैसा न करने दो। ऐसा करने से आकर्षणों की ओर जाने के लिए मन सहज रूप से रुक जाएगा। इसके विपरीत यदि ऐसा न किया तो समुचित नैतिक अंकुश के अभाव में समस्त इन्द्रियाँ विद्रोही हो जाएँगी और मन बुद्धि पर हावी हो सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देगा। ऐसा न हो इस हेतु सजनों कदम-कदम पर विचार को पकड़ने की आदत डालो। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार याद रखो कि विचार पर चलने वालों की ही सदा जीत जीत और फतह फतह होती है। ऐसा मानव ही आत्मविजय प्राप्त कर सकता है।

मत भूलो कि आप इस जगत में अपने आप को खोने नहीं अपितु अपने सच्चे स्वरूप को ढूँढने के लिए आए हैं। ईश्वर ने आपको अपने जीवन पर विजय प्राप्त करने के लिए अपना एक सैनिक बना कर यहाँ भेजा है। अतः आपका सर्वोच्च कर्त्तव्य है अपने अहं पर विजय प्राप्त करके, अपने घर लौट जाना। कदाचित् आप अपने इस सर्वोच्च कर्त्तव्य को भूलने की या उसके निर्वहन में लापरवाही वर्त कर टालमटोल करने की पाप समान भूल नहीं कर सकते। इस भूल से बचने हेतु समय रहते ही अपने आप को संभालो और अंतर्निहित अपने सच्चे स्वरूप को ढूँढ निकालो। इस हेतु ईश्वर को एक क्षण भी न भूलो। स्मरण रखो ईश्वर को भूलकर समय व्यर्थ गँवाना बहुत आसान है। इससे निरर्थक तुच्छ बातों में ही समय व्यतीत हो जाता है और भगवान के बारे में सोचने हेतु कोई समय ही नहीं बचता। अतः जीवन बनाने हेतु व्यर्थ की बातों की कचहरी बंद कर दो और सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की कचहरी लगा सदा आत्मस्वरूप के विषय में ही सकारात्मक चिंतन व मनन करो।

ऐसा करते समय रास्ते में आनेवाली परेशानियों व परिस्थितियों से घबराओ नहीं अपितु याद रखो कि जितनी अधिक यह समस्याएँ आपके सामने आएँगी, उतना ही अधिक अवसर प्रभु को यह दिखाने के लिए आपको प्राप्त होगा कि आप भी एक सच्चे आध्यात्मिक आत्मविजेता हो। अंततः याद रखो प्रत्येक मनुष्य को अपनी विजय आप प्राप्त करनी है। अतः यदि आप भी अपने मन में ठान लो कि आप सर्वोच्च आत्मविजय को प्राप्त करके ही रहोगे तो आप उसे प्राप्त भी कर सकते हो। इस हेतु न आपको किसी तीर-तलवार की और न ही किसी सेना की आवश्यकता है। जरूरत है तो केवल दृढ़ संकल्प की, यह ही आपको जीवन संग्राम में जिता सकता है। अतैव इस उपलब्धि के दृष्टिगत अपने मन को उपशम कर, ख़्याल प्रभु संग जोड़ लो और ध्यान इस्थर हो जाओ। इस प्रकार जीवन बनाने हेतु सफलता अपने आप प्राप्त हो जाएगी।

दिनाँक 17 जून 2018 का सबक़

आत्मविजय-4

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

कहते हैं सजनों मन ही बंधन का कारण है और मन ही मुक्ति का कारण है यानि यह मन नियन्त्रित रहने पर आपको अच्छा भी बना सकता है और अनियन्त्रित होने पर बुरा भी बना सकता है। यह बुद्धि को सचेत रहने में सहयोग भी दे सकता है और मनमानी का स्वभाव अपना अचेत भी बना सकता है। इस तरह इस को वश में रखने पर आप अपने स्वतन्त्र स्वरूप में स्थित भी रह सकते हो और इसके बेकाबू हो जाने पर मोह-बन्धन में भी फँस सकते हो। इस संदर्भ में सजनों जानो कि जिस इंसान के ख़्याल में ब्रह्म शब्द रम जाता है और उसके मन को शब्द ब्रह्म विचार प्राप्त रहते हैं, वह निश्चित रूप से बुद्धि द्वारा उनका इस्तेमाल कर मुक्ति को प्राप्त कर लेता है क्योंकि उसका मन शान्त हो जाता है। इसके विपरीत जिस इंसान का ख़्याल काल्पनिक जगत के विषयों में रम यथार्थता से भटक जाता है उसका अशान्त मन उसके लिए बंधन का हेतु बन जाता है। इस तरह मुक्ति या बन्धन प्राप्ति, यह इन्सान के व्यक्तिगत चयन पर निर्भर करता है। निःसन्देह यदि वह जगतीय ज्ञान अनुसार भ्रमित बुद्धि हो मन में नकारात्मक भावों को धारण कर इस जगत में विचरता है तो वह बन्धनमान हो जाता है और यदि

वह ब्रह्म-ज्ञान अनुसार जीवनयापन करता है तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत सजनों आज जगत में बंधनमान मनुष्यों के मनों में चंचलता के भाव के बढ़ने के कारण, मन द्वारा जनित तमाम कामनायुक्त बंधनों से मुक्त होकर, ख़ुद को निष्कामता से आत्मोन्नति के मार्ग पर प्रशस्त करना परम पुरुषार्थ का विषय बन गया है। आशय यह है कि मन से ऐक्य भाव के छूटने के कारण मानव मन में नाना प्रकार की इच्छाएँ, कुप्रवृत्तियाँ, द्वि-द्वेष, उन्मत्तता, खिन्नता, दुराव, वैर-विरोध, आसक्ति, अनुराग, घृणा, दुःख, उदासी, अप्रसन्नता, असंतुष्टि, तिरस्कार आदि जैसे विकार पनप चुके हैं जिसके परिणामस्वरूप मानव को आधि-व्याधि के रूप में अनेकानेक दुःखों व कष्टों का सामना करना पड़ रहा है।

स्पष्ट है सजनों मन जब प्रभु में लीन रहने के स्वभाव में स्थिर बने रहने के स्थान पर, ख़्याल को मनमत अनुसार जगत में इधर-उधर भटकाता है तो इंसान बुराई को धारण कर बौद्धिक रूप से अधम अवस्था को प्राप्त हो जाता है और खुद पर नियन्त्रण रखने में कमजोर पड़ जाता है। इसी कारणवश मनमत का अनुसरण करने वाला इंसान इन्द्रिय सुखों की ज्वलन्त विषयाग्नि में निरंतर जलता है यानि विषयों को भोग कर भी कभी तृप्त नहीं हो पाता। कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ और पाने या करने की अनुचित कामना उसे सदा सताती रहती है जिससे उसके मन में मिथ्या विचार धारण करने के प्रति रुचि पनपती है। ऐसा होने पर इन्सान को किसी की बात सुनना, किसी से बात करना अच्छा नहीं लगता। यहाँ तक कि कोई उसे समझाये तो भी उसे खलता है। इस तरह इंसान का कमजोर मन व इन्द्रियाँ उसे घसीटकर उस अधोपतन के मार्ग पर ले जाती हैं, जहाँ सारे कुल की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाती है। हम कह सकते हैं कि यह अविचार धारणा इंसान के ख़्याल व दृष्टि को अस्वच्छ बना वासनाओं के दुष्चक्रव्यूह में फँसा देती है। परिणामतः वह कामनायुक्त इंसान शारीरिक-मानसिक रूप से सुख-दुःख भोगता हुआ सदा व्याकुल रहता है व इधर-उधर भटकता हुआ विषयों को प्राप्त करने के लिए आतुर रहता है। इस प्रकार उसके लिए जीवन की किसी भी परिस्थिति में सम अवस्था में बने रहना असंभव हो जाता है। इस तथ्य के ही दृष्टिगत सजनों सच्चेपातशाह जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा है -

ख़बरदार अक्ल ते राहवीं बुरा संग कर अक्ल अपनी न गवाँवीं।

याद रखो सजनों यदि ऐसा सुनिश्चित न किया तो यह स्थिति इंसान की विवेकशक्ति के कमजोर होने का सूचक होती है जिसके फलस्वरूप इंसान के लिए भले-बुरे, सत्य-असत्य की परख कर, यथोचित ढंग से कुछ भी धारण करना सहज नहीं रहता। इसी अज्ञान के कारण मन, मस्त हाथी की तरह इंसान की सुरत को चारों दिशाओं में घुमाता है और जन्म-जन्मांतरों के प्रभाव से उत्पन्न संस्कार उसकी स्मृति में घर कर उसे इस तरह मोह-माया की नींद में सुला देते हैं कि सारी उमर उसके मन में आत्मबोध करने की उमंग ही नहीं उठती यानि आत्मज्ञान प्राप्ति के प्रति रुचि ही नहीं पनपती। यह अपने आप में उस इंसान के मोक्ष प्राप्त करने के स्थान पर नारकीय दुःखों को प्राप्त करने की बात होती है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

'मन मस्त हाथी चारों पासे फिराया, वाशना इस नूं घियो पिलाया
इसी संदर्भ में फिर आगे भी कहा गया है
मोह माया दी निद्रा विच सोई, सारी उमर बिना नाम दे खोई'

सजनों अब तो आप अच्छी तरह समझ गए होंगे कि यथार्थ से भटके हुए इंसान का मन, तृष्णाग्नि को कदाचित् शांत नहीं होने देता और जीव को परमार्थ का रास्ता भुला संसार की तरफ ले जाता है यानि स्वार्थपर रास्ते पर चढ़ा उसका सब सुख-चैन छीन लेता है। ऐसा इंसान फिर किसी और को भी सुख-शांति से नहीं जीने देता। इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस मन को मद मस्त हाथी की संज्ञा दी गई है जो अनियन्त्रित होकर कुमार्ग पर दौड़ता हुआ स्वयं की और सवार की हानि करता है और प्राणों को संकट में डाल देता है। अतः अपने चंचल मन को विचार शब्द द्वारा नियन्त्रित कर शांत रखना अनिवार्य है। इसका सजनों एक ही तरीका है कि मन से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का नियमबद्ध अध्ययन करते हुए, उसमें विदित विचारों के मनन के प्रति रुचि पैदा कर, उसकी दिशा ही बदल दी जाए अर्थात् जिस मन ने विषयों में आसक्ति द्वारा विकार अपना कर, इंसान को अधर्म के रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर दिया है, उसे सद्-विचारों द्वारा परमपद की ओर मोड़ने का पुरुषार्थ दिखा,

धर्मसंगत जीवन जीने का मार्ग सुगम बना लिया जाए। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों घबराओ नहीं क्योंकि यह कार्य सिद्ध हो सकता है। ईश्वर ने हर मानव को ऐसा करने की सक्षमता प्रदान की है। इस हेतु आवश्यकता केवल सद्ज्ञान प्राप्ति की है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में सजनों वह ज्ञान भी आपको प्राप्त है। अतैव यदि आप मन से न हारो तो आप इस द्वारा दर्शाए मार्ग का अनुसरण कर अवश्य ही परमपद प्राप्त कर सकते हो। इस हेतु सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह भी रहा है:-

मन मजूर किस ने बनाया, किसने इस नूं रथ ते बिठाया
किस ने इस नूं राज दिवाया, किस ने इस नूं राज दिवाया
जैं मन बनाया ओ नादान मालका, तेरी जोति हिम कुल जहान मालका
रथ उत्ते तेरी जोत नज़र आई, जैंदी त्रिलोकी दे विच रौशनाई
मन मिटया ते होया है आनंद मालका, तेरी जोति हिम कुल जहान मालका

अर्थात्
इससे स्पष्ट होता है कि जो प्रकाश है मन मन्दिर,
वही प्रकाश है जग अन्दर।
इस विचार पर खड़े होने से मन मिट सकता है और प्राणी आनन्द का अनुभव कर सकता है।
इसलिए हमें सावधान रहना है कि किसी कारण भी हमारा:-

मन शहर पर शहर न जावे, सांवले चरणां दे विच राहवे
उमरां चरणां विच बितावे, चरणां नाल चरण हो जावे
अर्थात् परमात्मा के संग रहते-रहते व उनकी चालें पकड़ते हुए परमात्म स्वरूप हो जाओ।

उपरोक्त तरीके के अनुसार सजनों मन को सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव द्वारा, ईश्वर में अनुरक्त करके अधिकाधिक शुद्ध किया जा सकता है और आसानी से सब कुछ सेवा भाव से प्रभु के निमित्त अकर्त्ता भाव से करने के स्वभाव में ढाल सफलता प्राप्त की जा सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जब मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा,

विश्वास, विशुद्ध प्रेम व अनुराग पैदा होता है और वह पूर्ण सत्यनिष्ठा से उसी पर केन्द्रित रहते हुए उसी में रमे रह चारों पहर आनन्दित रहना पसंद करता है तो फिर उसे संसारी तुच्छ भोगों में कोई सुखानन्द प्रतीत नहीं होता। चूंकि सजनों उस आनन्द को हमने कभी अनुभव नहीं किया इसलिए हम तुच्छ संसारी सुख-भोगों में उलझ जाते है। कहने का आशय यह है कि सत्त्व के प्रकाश से जब इन्सान सत्-वादी बन जाता है तो रजोगुण और तमोगुण से उत्पन्न हुए मन के तमाम खोट स्वरूप दोष यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, भय, राग, द्वैष, निकृष्ट वृत्तियाँ, स्मृतियाँ व वासनाएँ आदि क्षय होते-होते स्वतः नष्ट हो जाते हैं और प्रशान्त मन सात्विकता से भरपूर हो मन्दिर की भांति पवित्र व निर्मल हो जाता है। ऐसे उज्ज्वल और प्रकाशित वातावरण में ही इन्सान को अपने सत्यमेव आत्मस्वरूप व स्वधर्म की प्रतीति होती है और वह भीतरी समता का बोध कर 'मैं' और 'मेरा' के मिथ्या ज्ञान/धारणा से ऊपर उठ, आत्मा में व्याप्त परमात्म तत्त्व से एकत्व की अनुभूति करता हुआ उसी में लय हो जाता है। याद रखो सजनों जब मन विषयों से हट नियन्त्रित व स्थिर हो जाता है तो इन्द्रियाँ भी मन की नकल कर विषयों से हट नियन्त्रित व अपने धर्म में स्थिर हो जाती हैं। फिर मन व इन्द्रियों को स्थिर करने के लिए किसी बाह्य नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं रहती। हम सब ऐसा करने में कामयाब हों इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

इन्सानां विच वसदा दिसदा हां, खावां पीवां खिड़ खिड़ के पिया हसदा हां
एहो मन विच करो विश्वास सजनो मेरी सुन लो बात, सजनो मेरी सुन लो बात
जीव जन्तु में भासदा जापदा एह मेरा समझो इतिहास जड़ चेतन में मेरा प्रकाश
सजनो मेरी सुन लो बात, सजनो मेरी सुन लो बात

स्पष्ट है सजनों मन एक स्याही सोखने वाले कागज की तरह होता है, जिस रंग से भी उसे छुआया जाये उसी रंग का वह हो जाता है। अधिकांश लोगों के मन अपने परिवेश के रंग में रंगे जाते हैं इसलिए मैले हो जाते हैं। पर आवश्यकता तो मीरा बाई, ध्रुव प्रह्लाद, हनुमान जी, धन्ने जट आदि की तरह अपने मन को उस परम तत्त्व पर केन्द्रित कर ब्रह्म विचारों में रंगने की होती है जो न केवल अपने आप में विशुद्ध हो अपितु अपनी शक्ति से मन को भी शुद्ध कर दे। इस उपलब्धि के दृष्टिगत नियमित अभ्यास

द्वारा धीरे धीरे मन को ईश्वर पर केन्द्रित करो। उस पर ध्यान का तीक्ष्ण पहरा रखो ताकि उसमें कोई फुरना यानि अवांछनीय विचार आकर विक्षेप या अवरोध न उत्पन्न करे। जब भी ऐसा हो तो नाम-अक्षर चलाने की गति तेज कर, मन को पुनः ईश्वर की ओर फेर दो और हृदय से भावपूर्ण होकर उनकी कृपा प्राप्ति व सहायता प्रदान करने की याचना/प्रार्थना आकुल भाव से करो ताकि कोई भी प्रलोभन आपके मन को हर के न ले जाए। इस तरह प्रलोभनों की माँगों को अस्वीकारते हुए ख़्याल व दृष्टि प्रभु पर सतत् रूप से टिकाए रखो। याद रखो इस तरह जब पूर्ण निष्ठा और प्रेम से यानि सच्चे दिल से प्रभु को पुकारोगे तो प्रत्येक श्वास ही पुकार बन जाएगी और एक पुकार दूसरी पुकार को जन्म देगी। इस प्रकार बीच में कोई छिद्र नहीं रह जाएगा जिसमें से होकर विरोधी विचार या फुरना मन में उठ आपको अपने अधिकार में ले सके। अतः यह थोड़ी सी सावधानी रखना आवश्यक मानो और मन को अफुरता से एकरस प्रभु में लीन रखते हुए अपने यथार्थ स्वरूप में बने रहने हेतु सफलता प्राप्त करो।

इस संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी ने अपने मन को उपशम करने हेतु किस प्रकार अपने चंचल, बली व हठी मन को निग्रहित कर उस पर पूर्ण विजय प्राप्त की उसके बारे में आगामी सप्ताह आपको बताया जाएगा। तब तक सजनों 'कल्पना छोड़ जगत दी सारी', अपने ख़्याल को परमेश्वर संग जोड़, मन को शांत कर लेना। आओ अब अपने मन को शांत रखने हेतु अभ्यास करते हैं:-

1. सर्वप्रथम सब सजन आत्म मंगल हेतु अपने मन को शांत रखने की आवश्यकता को समझो और इस हेतु आँखें बंद करके अपने शरीर व मन को स्थिर कर लो और ख़्याल ध्यान स्थिर हो जाए।

2. अगर यहाँ बैठे हुए भी अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर पाने के प्रति किसी प्रकार का भय, चिंता या दुःख-सुख का उद्वेग सता रहा हो तो संकल्प-विकल्पों के हो-हल्ले में, भ्रम अवस्था में बने रहने के स्थान पर, एकाग्रचित्त होकर ओ३म् आद् अक्षर का अंतर्मन में युक्तिसंगत जाप करना आरम्भ का दो।

3. ए विध् एक कुशल इंसान की तरह अपनी सुरत के तार अपने अन्दर ग्रहण की हुई

ब्रह्म सत्ता में ध्वनित ब्रह्म शब्द के तार के साथ जोड़, अजपा जाप में परिणत करो।

4. इस तरह अपने अन्दर स्वयं ब्रह्म होने का अनुभव करो और उसका अनुमोदन/समर्थन करते हुए 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव को आत्मसात् करने के प्रति तत्पर हो जाओ।

5. जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर मन स्वतः ही राग आदि से रहित होकर स्वस्थता को प्राप्त होगा और ऐसा अद्‌भुत होने पर आपको अवश्यमेव ही मन में शांति का अनुभव होने लगेगा।

6. मन में शांति का अनुभव करने से आपको जो प्रसन्नता प्राप्त होगी उसके परिणामस्वरूप आपके अन्दर भक्तिभाव से शांत अवस्था में बने रहने की प्रबल रुचि पैदा होगी और ऐसा आत्मबल जाग्रत होगा कि आप अपने विस्मृत वास्तविक स्वरूप को पुनः स्मृति में ले लोगे।

7. फिर ज्यों-ज्यों इस क्रिया के अभ्यस्त होते जाओगे त्यों-त्यों मन में शांति स्थापित होती जाएगी।

8. याद रखो कि मन में शांति स्थापित होते ही सतत् रूप से शांति पथ पर बने रहना सहज हो जाएगा और अंतर्निहित अलौकिक शक्तियाँ जाग्रत हो जाएँगी।

9. यकीन मानो इस प्रकार जब आपका मन अर्थात् शांति का पात्र पूर्ण शांति से भर जाएगा तो चित्त सुनिश्चित रूप से स्वस्थ व स्थिर हो जाएगा।

10. ऐसा शुभ होने पर आत्मिक ज्ञान की अनुभूति स्वयंमेव आरम्भ हो जाएगी और आप आत्मज्ञानी बन ब्रह्म, जीव और जगत के खेल की रमज को जान परमार्थ अर्थात् स्वधर्म पर सत्यता से स्थिर बने रहने के लिए सहजता से, त्याग भावना से उस पर अपना तन-मन-धन न्योछावर कर पाओगे और इस तरह सदा सम अवस्था में बने रहोगे।

11. मानो सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही आप इस जगत में निर्भयता से निषंग सत्य-धर्म के रास्ते पर स्थिर बने रह सकोगे और निष्काम कर्म करते हुए परोपकार कमा सकोगे।

अंततः सजनों अपने मन को शांत रखने के प्रति आप के अन्दर वांछित उत्साह बना रहे और आप इस मकसद में सुनिश्चित रूप से कामयाब हो श्रेष्ठ मानव बन सकें, इस हेतु सजनों अब जो बुलेगा, सारे भावयुक्त होकर वह बोलना और विवेकबुद्धि द्वारा सत्य को धारण कर, एक संतोषी व धीर इंसान की तरह, निर्विकारता से सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए व निर्भयता से इस जीवन में सत्-कर्म करते हुए, परउपकार कमा अपने जीवन का उद्धार करने का दृढ़ संकल्प लेना।

मन अपना सब शांत रखो ।
मस्तिष्क भी सब शांत रखो ।।
सोचने समझने की शक्ति को ।
बुद्धि बल से बलवान रखो।।

बुद्धि निश्चय करने की शक्ति है।
भले-बुरे का ज्ञान कराती है ।।
सत्य है क्या असत्य है क्या।
विवेक द्वारा यह जनाती है ।।
मन अपना सब शांत रखो।
मस्तिष्क भी सब शांत रखो ।।

धैर्य स्थिर रखता है चित्त को।
हर कामना रुकती संतोष द्वारा।।
निर्विकार चित्त प्रसन्न है रहता।
धैर्य संतोष के गुणों द्वारा।।
मन अपना सब शांत रखो।
मस्तिष्क भी सब शांत रखो।।

आचार-विचार सत्य आधारित हैं होते।
व्यवहार में पनपती है समता।।
सच्चिदानंद का अनुभव है होता।
सुख-शांति में होती है वृद्धि।।
मन अपना सब शांत रखो।
मस्तिष्क भी सब शांत रखो।।

भाव-स्वभाव धर्म-परायण है होता।
सजन परउपकार में है जुटता।।
तभी जीव सत् कर्म है करता।
निर्भय हो है जग में विचरता।।
मन अपना सब शांत रखो।
मस्तिष्क भी सब शांत रखो।

दिनॉक 24 जून 2018 का सबक़

आत्मविजय-5

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह के संदर्भ में सजनों आओ आज सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत इस भजन के माध्यम से जानते हैं कि किस प्रकार सच्चेपातशाह जी ने अपने चंचल, बली व हठी मन को उपशम कर, उस पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का अदम्य साहस दिखाया। सब अत्यन्त ध्यान से सुनना:-

मैं बलिहार बलिहार बलिहार महाबीर जी,
तुआडे चरणां तों जावां बलिहार महाबीर जी।
मन मेरा बुरा बुरा कोई नहीं, इस मन नूं समझाओ बलधार महाबीर जी।।
मन मस्त हाथी जिधर चाहवंदा ए, उधर सब भैणां नूं लै जावंदा ए।
इस मन ते रहो रखवाल महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।
रस्ता छोड़ सिधा पुठे जांवदा ए, ऐह भैणां नूं पिया घबरांवदा ए।

इस मन ते रहो हुशियार महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।
मन उपशम कर देओ मेरा महाबीर, इस ने अन्दर जमा लिया डेरा महाबीर।
इस मन नूं आप समझावो महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

रघुनाथ जी दे चरण भुलावंदा ए, संसार दे वल जल्दी जांवदा ए।
इस मन नूं आप समझाओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

मन भुलनहारा भुल जांवदा ए, सानू शहर पर शहर फिरावंदा ए।
इस मन नूं मार मुकाओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

रघुनाथ महाबीर जी दे चरणां विच राहवे, ऐह मन किसे पासे न जावे।
ऐन्हु गदा दे नाल डराओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दिने राती ए अर्ज गुजारदी ए।
सुन लौ बेनती मेरे बलधार महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

सजनों उपरोक्त भजन को सुनने के पश्चात् किस सजन के अन्दर अपने मन को उपशम कर, स्वधर्म की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व निछावर करने की हिम्मत उत्पन्न हुई है?

सभी ने हाथ खड़े किए।

सजनों हाथ वो खड़ा करो जो सत्य का प्रतीक हो। तभी सत्य-धर्म का रास्ता

अपनाकर उस पर निष्कामता से आगे बढ़ सकोगे। क्या सब चाहते हो कि हम ऐसा ही करें?

हाँ जी।

तो फिर सत्यता से बिना किसी तर्क-वितर्क के अपनी एक-एक गलती/कमी को स्वीकारो। फिर आत्मनियन्त्रण रखते हुए उन गलतियों/कमियों का सुधार करते जाओ। याद रखो ऐसा करने पर ही कथनी-करनी एक हो पाएगी और मन-वचन-कर्म से सत्यता अनुरूप चलते हुए, पहले निष्कामी व फिर ब्रह्मज्ञानी बन पाओगे। आओ सजनों अब इसी संदर्भ में इस कीर्तन का भावार्थ समझते हैं:-

मैं बलिहार बलिहार बलिहार महाबीर जी।
तुआडे चरणां तों जावां बलिहार महाबीर जी।

सजनों उक्त पंक्तियों के माध्यम से सच्चेपातशाह जी ने सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति असीम प्रेम प्रकट करते हुए, उन्हें अति श्रद्धा के साथ भक्तिभाव से कहा कि मैं आप पर बारम्बार बलिहारी जाती हूँ और मैं आपकी समीपता प्राप्त कर एक दासी की तरह आपके मूल स्वभावों अनुरूप आचार-व्यवहार अपनाने के लिए अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

मन मेरा बुरा बुरा कोई नहीं, इस मन नूं समझाओ बलधार महाबीर जी।।

इस संदर्भ में वह अपने मन अर्थात् अंतःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है व इच्छा या विचार पनपते हैं, उसकी वर्तमान अवस्था को स्वीकारते हुए कहते हैं कि यह मन अज्ञान के कारण अपनी उत्तमता खो मंद अवस्था को प्राप्त हो चुका है। इसलिए मैं अपने प्रति अन्य लोगों की बातचीत व व्यवहार को बुरा मानने के स्वभाव में उलझ, उनके प्रति द्वैष-भाव अपना उनको बुरा भला कहने व उनकी निंदा-चुगली करने पर अपने आप को विवश पाती हूँ। इस दोष से मुक्ति पाने हेतु मुझे आत्मनिरीक्षण द्वारा

समझ आया है कि सब बुराई की जड़ मेरा जगत में भटका हुआ मन ही है, अन्य कोई नहीं। इसलिए हे सामर्थ्यवान बलधारी, महाबीर जी ! मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करती हूँ कि मेरे मन में यह बात अच्छी तरह से बिठाओ कि वह जगत में गलतान रहने के स्थान पर परमेश्वर में लीन रहने हेतु प्रवृत्त हो जाए और महत्त्व आदि के विचार से सबको सम कर जाने ताकि मुझे मेरे वास्तविक अस्तित्व व शक्ति का अनुभव हो और मैं इसे निष्कामता के भाव से शांत रख, आपके वचनों पर स्थिरता से यथा बने रहने में, समर्थ हो जाऊँ।

मन मस्त हाथी जिधर चाहवंदा ए, उधर सब भैणां नूं लै जावंदा ए।
इस मन ते रहो रखवाल महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

आगे सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि आज के समय काल में सब इन्सानों के मन-मस्तिष्क पर काम भाव के प्रभावी होने के कारण यह मन निकृष्ट अवस्था को प्राप्त हो गया है। परिणामस्वरूप, केवल मैं ही नहीं अपितु हर मानव अपने मन को वश में रखते हुए अपने वास्तविक स्वरूप में स्थिर बने रहने में स्वयं को कमज़ोर पा रहा है क्योंकि यह चंचल मन, मदमस्त हाथी की तरह जिधर चाहता है उधर ही हम सबके ख़्याल को मोड़ देता है। अतः हे महाबीर जी ! आप ही मेरे संग बने रह, इस मन के भटकाव पर नियन्त्रण रखने हेतु मुझे उचित युक्ति प्रदान करो ताकि मैं इस मन रूपी मदमस्त हाथी का सामना कर इसे साधने में समर्थ हो जाऊँ व आप द्वारा प्रदत्त विचारयुक्त रास्ता अपना, जगतीय विषय-विकारों से निर्लिप्त रह, मिथ्या अभिमान में फँसने से बच जाऊँ और इस तरह आत्मोद्धार के साथ-साथ, जगत का कल्याण करते हुए परोपकार कमा सकूँ। आगे वह कहते हैं कि इस युक्ति को प्रवान करने के लिए मैं अपना सब कुछ अर्थात् जो भी अज्ञानमय धारण किया है वह निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

रस्ता छोड़ सिधा पुठे जांवदा ए, ऐह भैणां नूं पिया घबरांवदा ए।
इस मन ते रहो हुशियार महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

इसी परिप्रेक्ष्य में वह आगे अपने सहित प्रत्येक मानव के मन की विकृत दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे महाबीर जी ! मूर्खतावश संसारी स्वभाव अपनाने के कारण यह मन निरंकुश हो गया है और विचारयुक्त सीधा व सरल सुमार्ग छोड़, अविचार से भरे कामनायुक्त कवलड़े कुमार्ग पर अग्रसर हो गया है। मनमत का अनुसरण करने वाले कलुकालवासी इसी कारण भय व दुःख से अधीर होकर अशान्ति का अनुभव कर रहे हैं और उनके अन्दर परमार्थ के प्रति रुचि उत्पन्न नहीं हो पा रही। अतः हे परमपिता महाबीर जी ! आप ही इस मन पर होशियार रहो व मुझे इस पर सावधान रहने का युक्तिसंगत कौशल बक्शो। आशय यह है कि आप ही मेरे अन्दर इसकी चाल चालाकी को समझ-बूझ कर उससे उबरने का सशक्त विचार पैदा करो ताकि मैं सन्मार्ग पर अग्रसर हो, इस संसार के प्रपंचों में उलझने से बच दुःखद अवस्था को प्राप्त होने से बच जाऊँ। वह कहते हैं कि मैं आपके विचारों को युक्तिसंगत अमल में लाने हेतु अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

मन उपशम कर देओ मेरा महाबीर, इस ने अन्दर जमा लिया डेरा महाबीर।
इस मन नूं आप समझावो महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

आगे दासी भाव में आ वह महाबीर जी के आगे प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे महाबीर जी ! इस मन ने मेरे अन्दर डेरा यानि स्थाई रूप से घर बना लिया है। यही कारण है कि मेरे अन्दर नाना प्रकार की संकल्प-विकल्प की तरंगें उठती रहती हैं और इनके होते मैं सत्य का अनुभव नहीं कर पा रही हूँ। इस तरह मेरे लिए स्वधर्म पर स्थिर बने रहना कठिन हो गया है। अतः हे परमश्रेष्ठ महाबीर जी ! मेरे मन को उपशम कर दो अर्थात् तृष्णा का नाश कर मुझे इन्द्रियनिग्रही बना दो। इस तरह सभी क्लेशों व विपत्तियों का नाश करने हेतु उचित उपाय बता मुझे परम शांति प्रदान करो जी, परम शांति प्रदान करो जी, परम शांति प्रदान करो जी। इस अक्षय शांति को प्राप्त करने हेतु ही वह शांति-शक्ति के दाता हनुमान जी से कहते हैं कि हे महाबीर जी ! मेरे मन को संकल्प रहित होकर इस जगत में विचरने का समझौता दो ताकि मैं कभी भी वाद-

विवाद, तर्क-वितर्क में न उलझूँ और सदा परमेश्वर संग जुड़ी रह विचारयुक्त निष्काम रास्ते पर बनी रहूँ। वह कहते हैं कि जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर चलने हेतु मैं अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

रघुनाथ जी दे चरण भुलावंदा ए, संसार दे वल जल्दी जांवदा ए।
इस मन नूं आप समझाओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

आगे अपने मन की वस्तुतः स्थिति से परिचित कराते हुए फिर से कहते हैं कि हे महाबीर जी ! स्वभाववश मेरा यह मन ईश्वर संग जुड़ने के स्थान पर, निकृष्ट संसारी विषयों की ओर शीघ्र आकृष्ट हो, उनमें आसक्त हो गया है। इस तरह मोक्ष के हेतु मेरे ही इस मन ने मुझे संसारी विषयों में भ्रमित कर, मेरे ध्यान को इस तरह अस्थिर कर दिया है कि मैं अपना ख़्याल परमेश्वर संग जोड़े रखने में असमर्थ हो अपने यथार्थ स्वरूप को भूल चुकी हूँ। अतः हे बलवान! अब आप ही मेरे इस मन को शारीरिक स्वभावों की इस कठिन अवस्था से उबर कर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का उपदेश/प्रबोधन दो ताकि मेरा ख़्याल निरंतर ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जुड़ा रहे और ए विध् आत्मबोध द्वारा मेरी बुद्धि सदा सुचेत बनी रहे। वह कहते हैं कि अपने मूल यथार्थ स्वरूप में बने रहने हेतु मैं अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

मन भुलनहारा भुल जांवदा ए, सानू शहर पर शहर फिरावंदा ए।
इस मन नूं मार मुकाओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे महाबीर जी ! मेरा मन भुलनहारा है जो हठी बार-बार समझाने के बावजूद भी कामनाओं व जन्म-जन्मांतरों की वासनाओं के अधीन हो संसार में अनुरक्त होने की गलती कर बैठता है। इस तरह यह अपने मिथ्या अस्तित्व पर इतराता है व ख़्याल को शहर पर शहर अर्थात् मृतलोक में इधर-उधर घुमा, जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँसाए रखता है। परिणामस्वरूप यत्न करने के बावजूद भी जब

मन में अफुरता का वातावरण नहीं पनप पाता तो मैं अपने जीवन के परम पुरुषार्थ को सिद्ध करने के प्रति कमजोर पड़ जाती हूँ। यह कमज़ोरी आगे विकराल रूप न ले ले इसलिए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे ज्ञानवान महाबीर जी! काम में उलझाए रखने वाले व आत्मोद्धार में बाधक इस मन रूपी शैतान का मेरे अन्दर से वजूद मिटा दो ताकि मैं भी आत्मोत्थान के पथ पर अग्रसर होते हुए अंत विश्राम को पा सकूँ। वह कहते हैं कि इस विश्राम अवस्था में आने हेतु, मैं अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

रघुनाथ महाबीर जी दे चरणां विच राहवे, ऐह मन किसे पासे न जावे।
ऐन्हु गदा दे नाल डराओ महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

इसी संदर्भ में वह आगे कहते हैं कि हे महाबीर जी इस मन को ऐसा विचारयुक्त बना परिपूर्ण कर दो कि यह सदा परमेश्वर के संग बना रहे और आपसे अलग होकर किसी और तरफ जाने की भूल न करे। इस हेतु इसे अपनी गदा यानि शांति-शक्ति के हथियार का डर दिखाओ ताकि भयवश यह सेवक निष्काम भाव से सदा प्रभु की आज्ञा पालन करता हुआ सदा उनमें लीन रहे और सिर उठाने की गलती न करे। वह कहते हैं अपने मन को परमेश्वर में लीन रखने हेतु मैं सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दिने रातीं ए अर्ज गुजारदी ए।
सुन लौ बेनती मेरे बलधार महाबीर जी,
तुहाडे चरणां तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।

अंत में सच्चेपातशाह जी दासी भाव में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी को हाथ जोड़कर दिन-रात पुकारते हुए यही अर्ज करते हैं कि हे मेरे बलधार महाबीर जी ! मेरी यह बिनती सुन लो और इसे स्वीकार कर मेरा उचित मार्गदर्शन करो ताकि मैं कुमार्ग से हट सन्मार्ग पर बनी रह जगत हितकारी बन सकूँ।

इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों भक्ति भाव में आकर ईश्वर से प्रेम बढ़ाओ। जैसे-जैसे ईश्वर में निष्काम व विशुद्ध प्रेम बढ़ेगा वैसे-वैसे दुनियावी दैहिक सुख फीके मालूम होंगे और सारा पाप कल्मष धुल जाएगा। फलतः मन पर विजय पा आत्मविजयी होना सहज हो जाएगा। अब सब मन को प्रभु चरणों में लीन रखते हुए मिल कर बोलोः-

ओ३म् शांति शांति ओ३म्। ओ३म् शांति शांति ओ३म्।
ओ३म् शांति शांति ओ३म्।
ओ३म् शांति शांति ओ३म्। ओ३म् शांति शांति ओ३म्।
ओ३म् शांति शांति ओ३म्।
ओ३म् शांति शांति ओ३म्।

अंततः सजनों याद रखो कि एक आत्मविजयी ही आत्मप्रकाश को पा सकता है। अतैव पुरुषार्थ ऐसा दिखाओ कि पूरी तरह से अपने मन व इन्द्रियों पर विजय पा, अपने प्रकाश को पा लो। ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखते हुए सजनों यह कार्य कैसे सिद्ध करना है इस हेतु सजनों आगामी सप्ताह से प्रकाश के विषय में बात करेंगे ताकि हमारा मन-चित्त शांत हो जाए और हम अपने जीवन के यथार्थ को आत्मसात् कर, अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाएँ।

दिनाँक 1 जुलाई 2018 का सबक़

प्रकाश-1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन परमेश्वर कह रहे हैंः-

परमधाम है घर हमारा, असां परमधाम में रैहंदे हां।
परमधाम है चानणा, ज्यों सूरज चढ़े हज़ार।
एहो ही हम बतलाते हैं, एहो ही हम कहते हैं, एहो ही हम कहते हैं।।
परमधाम है हमारी रौशनाई, है ओ सर्व सबाई।
सर्व सर्व प्रकाश हमारा, प्रकाशित ही कहलाते हैं।
प्रकाश ही हम दिखलाते हैं, प्रकाश ही हम दिखलाते हैं।।

श्री साजन जी के मुख के इन शब्दों से सजनों स्पष्टतः ज्ञात होता है कि परमधाम अपने में बिन सूरजों प्रकाशमान है जैसे असंख्य सूरज चढ़े हुए हों। यही इलाही प्रकाश ही आद् अंत, अनंत व बेअन्त है जिसकी रोशनी सर्व-सबाई है। निःसंदेह सजनों यह जानने के पश्चात् आपके अन्दर भी इस प्रकाश को देखने की उमंग जाग्रत हो रही होगी। क्या ऐसा ही है जी?

हाँ जी।

तो जानो यह प्रकाश स्थूल दृष्टि से नहीं दिखता। इसके लिए तो अपना ख़्याल ध्यान वल रखते हुए, हृदय में आत्मप्रकाश का अनुभव करना होता है। फिर सजनों ज्यों-ज्यों यह अनुभूति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों अपने हृदय सहित, रोम-रोम, रग-रग में इसी प्रकाश के व्याप्त होने का एहसास होने लगता है। इस तरह इस प्रयास द्वारा जब ख़्याल परमधाम में ध्यान स्थित हो जाता है तो इंसान के अंदर यह भाव उत्पन्न होता है कि 'मैं आत्मा' अपने घर में हूँ। तब वह आत्मा रूप में अन्य आत्माओं से भी बात कर पाता है। यह स्थिति जीव की आत्मतुष्ट अवस्था कहलाती है। इसके अंतर्गत उसे मन-मन्दिर में व्याप्त अपने असलीयत ज्योति स्वरूप प्रकाश के सारे जग में व्याप्त होने का एहसास होने लगता है अर्थात् उसे लगने लगता है कि जो प्रकाश है मन मन्दिर, वही प्रकाश है जग अन्दर। इस तरह वह सर्व-सर्व अपने ही प्रकाश का अनुभव कर जान जाता है कि यही प्रकाश चारों तरफ फैला हुआ है। यहाँ उसे समझ आ जाती है कि यह जो सारा संसार है यानि आप, हम जो सब हैं उनका आधार यह प्रकाश ही है। इसलिए इस प्रकाश के मूल स्रोत अर्थात् जगत के रचनाकार परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व सर्वव्यापक कहलाते हैं।

ऐसा होने पर सजनों जीव को यह समझ आ जाती है कि अगर यह प्रकाश नहीं तो शून्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। इसलिए वह इस प्रकाश को ग्रहण करने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाते हुए वहीं से ज्ञान, गुण व शक्ति धारण कर शांति से जगत के सारे कार्यव्यवहार करते हुए अर्थात् अपने समस्त कर्त्तव्य धर्मसंगत कुशलता से निभाते हुए अपने प्रकाशित स्वरूप में बना रहता है और बुद्धिमान कहलाता है। कहने का आशय यह है कि आत्मिक ज्ञान, गुण व शक्ति के प्राप्त होने के पश्चात् वह किसी विध् भी जगतीय पदार्थों के साथ नहीं जुड़ता और न ही किसी कारण जगतीय परिस्थितियों के आगे कमजोर पड़ता है यानि वह सदा एक अवस्था में स्थिर बना रहता है।

स्पष्ट है सजनों वह स्थिर बुद्धि एकाग्र होकर इस जगत में निर्लिप्तता से विचरने हेतु जब इस लाईट से प्राप्त होने वाले ज्ञान व शक्ति को पहचान जाता है तो उसके अन्दर अपना ख़्याल ध्यान स्थिरता से आत्मप्रकाश वल जोड़े रखने की प्रबल उमंग पैदा होती

है और वह इस हेतु तड़फ उठता है। तभी तो वह अंतर्मुखी हो अपने गुण व शक्ति का वर्धन करते हुए सबसे ज्ञानवान, गुणवान व शक्तिवान बनने हेतु, हृदयगत प्रकाश का अनुभव कर, अक्षर के अजपा जाप की क्रिया को आनन्ददायक व हितकारी समझते हुए और बढ़ाता है व अन्यों को भी वैसा करने के लिए प्रेरित करता है। तात्पर्य यह है कि ज्ञान, गुण व शक्ति ग्रहण करने की क्रिया में खुद आगे बढ़ने के साथ-साथ वह अन्य संगी-साथियों को भी यह सत्य जनाने का यत्न करता है कि आत्मप्रकाश ही सारे जगत में व्याप्त है और इसी अदृश्य व अव्यक्त शक्ति से ही जगत के सारे कार्यव्यवहार चल रहे हैं।

सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखाने के पश्चात् उस इंसान की बुद्धि तेजोमय हो जाती है और वह दिव्य गुणों के हीरे रत्न जड़ित स्वाभाविक श्रृंगार को पहन कर, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार अकर्त्ता भाव से परस्पर सजनता का वर्त-वर्ताव करने में निपुण हो जाता है। इस संदर्भ में सजनों जानो कि तेजोमय बुद्धि ही निश्चयात्मक बुद्धि होती है जिसके उचित प्रयोग द्वारा इंसान के मन से समस्त विकार यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि नष्ट हो जाते हैं और मन स्वतः ही उपशम व शांत हो शीतल हो जाता है। यह शीतलता इंसान को वास्तविक आनन्द का अर्थात् उसके सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का बोध कराती है और ऐसा प्रत्येक कार्य सर्वहित के निमित्त निष्काम भाव से करने में सक्षम हो जाता है।

इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों हमें मानना है कि ब्रह्म सत्ता को ग्रहण किए बगैर हम अपने वर्तमान कलुषित स्वभावों में कदापि परिवर्तन नहीं ला सकते यानि सतवस्तु में आने के लिए जिस प्रकार के श्रेष्ठ स्वभाव अपनाने की आवश्यकता है, तमाम कोशिशों के बावजूद भी उन्हें नहीं अपना सकते। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि जब तक ख़्याल (जगत से हट) ध्यान स्थिर हो प्रकाश वल नहीं रहता तब तक हमारे अंतर्मन में मिथ्या ज्ञान, गुण व शक्तियों को अपनाने के कारण छाया हुआ अज्ञानमय अंधकार नहीं छँट सकता और हम अपने जीवन का परम पुरुषार्थ सिद्ध करने में सफल नहीं हो सकते। अतः इस तथ्य को मानो कि आत्मप्रकाश ही हमें परमात्म स्वरूप ज्ञान, गुण व शक्तियों से भरपूर कर इतना शक्तिशाली बना सकता है कि उस अपरम्पार प्राप्ति से सम्पन्न हो हम मौत के भय से भी आज़ाद हो सकते हैं और इस

जगत का हर प्रकार से कल्याण करने में समर्थ हो परमात्मा नाम कहा सकते हैं। इसलिए सदा श्रेष्ठता में बने रहने की खातिर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित विचारों के अध्ययन व मनन द्वारा अपने आत्मस्वरूप को पहचानो व शक्तिशाली होकर एक आत्मज्ञानी की तरह इस जगत में निर्विकारता से विचरो व ए विध् जगत से आज़ाद हो जाओ।

अंततः सजनों जानो कि ए विध् परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ने से ही हम इस नीरस जगत में विचरते समय उससे किसी प्रकार से भी बंधनमान नहीं हो सकते और नीरव यानि गहन मौन की अवस्था को धारण कर शब्दातीत हो सकते हैं यानि अपने वास्तविक स्थान परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकते हैं। तो क्या सजनों आप भी अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम पाना चाहते हो?

हाँ जी।

तो आओ इस हेतु अभ्यास करते हैं:-

1. सभी सजन आँखें बंद कर लो और अपने प्रकाशमय रूप, रंग, रेखा, रहित ब्रह्म स्वरूप का एकाग्रचित्त होकर अनुभव करो।

2. अब अपने मन में अफुरता से अक्षर चलाना आरम्भ कर दो ताकि आपके लिए अपने ब्रह्म स्वरूप का अनुभव करना सहज हो जाए।

3. तत्पश्चात् सुनिश्चित रूप से अपने ब्रह्म स्वरूप का अनुभव करने हेतु, परमेश्वर की इस सत्य बात को कि 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप' सहृदयता से स्वीकारते हुए, अक्षर चलाने की क्रिया में ऐसी समरसता लाओ कि इस मिथ्या जगत का कोई भी फुरना आपको न सताए यानि सफलता प्राप्ति में बाधक साबित न हो।

4. अब इसी अवस्था में यथा बने रह ख़्याल ध्यान वल और ध्यान हृदयगत प्रकाश वल साधो और उसे उस प्रकाश की गहराई में तब तक उतारते जाओ जब तक आपको यह बोध नहीं हो जाता कि **हम तो हैं ओही प्रकाश**।

5. अब पहले मानो कि 'जेहड़ा प्रकाश है मन मन्दिर' और फिर देखो व जानो कि 'ओही प्रकाश है जग अन्दर'।

6. इस अवस्था में आने के पश्चात् जो प्रकाश मन मन्दिर व जग अन्दर देखा है उसी प्रकाश का प्रत्यक्ष अपने रग-रग में यानि सारे शरीर में करो।

7. ऐसा प्रत्यक्ष होने पर यह सत्य स्वीकारो कि हर जनचर, बनचर व जड़-चेतन उसी प्रकाश से अस्तित्व में है।

8. अब समझदारी से काम लेते हुए यह मानो कि इसी प्रकाश का विस्तार हद-हद में भी है यानि इस ब्रह्मांड के पहले छोर से लेकर आखिरी छोर तक है। फिर प्रकाश के इसी मर्यादित नियम को दृष्टिगत रखते हुए और यह सत्य तहे-दिल से स्वीकारते हुए कि 'यही प्रकाश है सारे जग में', अपने हृदय को एकरस प्रकाशमय अवस्था मे साधे रखने के व्यावहारिक नियम को सदाचारिता से निभाना सुनिश्चित करो।

9. ऐसा अनुभव करने पर इस सत्य से परिचित हो जाओगे कि जो प्रकाश मन मन्दिर में है वही प्रकाश सारे जग में अर्थात् सप्तद्वीप, गगनमंडल और भूमंडल में भी विद्यमान है। वही पग-पग पर अर्थात् हर स्थान पर है इसलिए मानो यही प्रकाश आद-अंत अर्थात् कालातीत है और इसी प्रकाश से आकाश में चमकने वाले सूरज चाँद देदीप्यमान हैं और प्रकाश के धर्म अनुसार प्रकाश के योग से जगत की हर वस्तु को सब जीवों के दृष्टिगोचर कर उसका विकास करते हैं।

10. अब यह सत्य मानो कि जो मन मन्दिर प्रकाश है, वही सर्व-सर्वत्र है। इसलिए कोई भी जीव उस प्रकाश के धर्म अनुसार या धर्मविरुद्ध आचार-व्यवहार अपना कर, अपने जीवन काल में जो कुछ भी चाहे लुक के करे चाहे छुप के करे, वह सब उन समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमेश्वर को ज्ञात रहता है। पर इस बात का पता तब चलता है जब इंसान के जीवन की करनी का अंतिम परिणाम अच्छे या बुरे रूप में सामने आता है। इस संदर्भ में जान लो कि वह सर्वव्यापक भगवान अच्छा परिणाम प्राप्त करने वाले जीवों के लिए स्वतः ही मोक्ष का द्वार खोल देते हैं और बुरा परिणाम प्राप्त करने वाले अपराधियों को जन्म-मरण के चक्रव्यूह में डाल बंधनमान कर देते हैं।

11. अंततः सजनों जो प्रकाश निर्वाण के अन्दर है, उस को अपने हृदय में धारण कर, शांत शून्य अवस्था में एकरस बने रहो। इस तरह उस प्रकाश के भाव पर अर्थात् ब्रह्म भाव पर स्थिर बने रह जगत जितेन्द्र बन जाओ और समवृत्ति हो रौशन नाम कहाओ। याद रखो सजनों ऐसा पराक्रम दिखाने हेतु ही तो बार-बार कहा जाता है कि हर शरीरधारी जीव का घट उसी प्रकाश से प्रकाशित है जिस प्रकाश से यह समस्त संसार/जगत प्रकाशित है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमें यह मानने में कदाचित् संकोच नहीं करना चाहिए:-

हम एक हैं, हम एक हैं, सजनों हम एक हैं,
एक दा है प्रवेश सजनों हम एक हैं, हम एक हैं,
एक ही है विशेष सजनों हम एक हैं।
इस सत्य को स्वीकार सजनों सदा एकता,
एक अवस्था में प्रसन्नता से बने रहो।

सबकी जानकारी हेतु इसके आगे हम आगामी सप्ताह जानेंगे।
तब तक इसी अवस्था में स्थिर बने रहना।

दिनाँक 8 जुलाई 2018 का सबक़

प्रकाश-2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों ईश्वर क्या है?

ईश्वर केवल प्रकाश ही प्रकाश है और कुछ भी नहीं। उसी प्रकाश को अंतः व बाह्य दृष्टि द्वारा ग्रहण कर व उसी में अपने ख़्याल व ध्यान को स्थिर कर हम अन्दरुनी व बैहरुनी जगत को देख-समझ कर उसमें कुशलता से विचरते हुए परोपकार कमा सकते हैं। याद रखो जब सजन इस क्रिया को निपुणता से करने में सक्षम हो जाता है तो फिर किसी भी वस्तु/तत्त्व का यथार्थ गुप्ट नहीं रहता यानि सब प्रत्यक्ष प्रकाशित हो जाता है और उसकी वास्तविकता समझ आ जाती है। आपने भी सजनों ऐसा ही योग्य सजन बनना है ताकि सहजता से समभाव नज़रों में कर समदृष्टि हो जाओ और अपने प्रकाश को पाओ ।

सजनों गत सप्ताह हमने जाना कि जो प्रकाश या स्वरूप मैंने अपने मन-मन्दिर में देखा है यानि जिस स्वरूप के साथ मेरा प्यार है (श्री राम, रहीम, श्री कृष्ण करीम या दस पातशाह जी के साथ) वही स्वरूप मेरा बाहर हर एक में है और वही मेरी असलियत है। यह सारा प्रतिबिम्ब मेरा ही है। इसी प्रतिबिम्ब को हर एक में देखना है, जनचर-

बनचर में वही है, जड़-चेतन में उसी का प्रकाश है। यही असलियत मेरा ब्रह्म स्वरूप है।

इस संदर्भ में सजनों हम आशा करते हैं कि आपने पिछली कक्षा में हुई इस बात को यथा अपनी वृत्ति-स्मृति में उतार कर धारण कर लिया होगा। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

'वृत्ति है जे एहो कमाल वृत्ति है जे एहो विशाल
एहो कोई मुश्किल फड़दा विरला कोई धारण करदा।
जेहड़ा देखो सजनों मन मन्दिर प्रकाश ओही ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।

सजनों हम मान सकते हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत इन विचारों को अमल में ला इनका अभ्यास करने पर आपके मन में अब वास्तविक रूप से ज्ञानवान, गुणवान व शक्तिवान बन यथार्थता से जीवन जी पाने की उमंग व उत्साह भी अवश्यमेव पैदा हो गया होगा। सजनों अगर ऐसा ही है तो आओ फिर अपने वास्तविक स्वरूप को जानने के प्रति अपने उत्साह व उमंग को और प्रबलता देने के लिए पूरी दिलचस्पी में आकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत कीर्तन 'जेहड़ा प्रकाश देखो मन मन्दिर, ओही प्रकाश देखो जग अन्दर' को अनुभव करते हुए बोलते हैं व इस तरह इस कीर्तन में विदित विचारों को धारण कर आत्म प्रकाश की सर्वव्यापता के सत्य को समझते हुए समभाव-समदृष्टि को नज़रों में करने का समझदारी से प्रयास करते हैं। सजनों यही एक विचारशील इन्सान की तरह परिपूर्ण जीवन जीते हुए श्रेष्ठ पद को प्राप्त करने की बात है। आओ अब पूरे प्रेम से बोलें:-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

जेहड़ा प्रकाश देखो मन मन्दिर, ओही प्रकाश देखो जग अन्दर।
ओही ओही, आहा आहा आहा, आहा आहा आहा आहा हा हा।।
ओही प्रकाश देखो रग रग में, ओही प्रकाश देखो सारे जग में।
ओही ओही ओही ओही ओही।
ओही प्रकाश देखो रग रग में, ओही प्रकाश देखो सारे जग में।।

ओही प्रकाश जनचर बनचर, ओही प्रकाश हुआ जड़ चेतन।
ओही ओही, आहा आहा आहा, आहा आहा आहा आहा हा हा।।
ओही प्रकाश है हद हद में, ओही प्रकाश है सारे जग में।
ओही ओही ओही ओही ओही।
ओही प्रकाश है हद हद में, ओही प्रकाश है सारे जग में।।

ओही प्रकाश सप्तद्वीप गगन मण्डल, ओही प्रकाश हुआ भू मण्डल।
ओही ओही, आहा आहा आहा, आहा आहा आहा आहा हा हा।।
ओही प्रकाश है पग पग में, ओही प्रकाश है सारे जग में।
ओही ओही ओही ओही ओही।
ओही प्रकाश है पग पग में, ओही प्रकाश है सारे जग में।।

ओही प्रकाश हुआ आद अन्त, ओही प्रकाश हुआ सूरज चन्द।
ओही ओही, आहा आहा आहा, आहा आहा आहा आहा हा हा।।
ओही प्रकाश है सर्व सर्वज्ञ में, ओही प्रकाश है सारे जग में।
ओही ओही ओही ओही ओही।
ओही प्रकाश है सर्व सर्वज्ञ में, ओही प्रकाश है सारे जग में।।

ओही प्रकाश हुआ निर्वाण दे अन्दर, ओही प्रकाश हुआ जगत जितेन्द्र।
ओही ओही, आहा आहा आहा, आहा आहा आहा आहा हा हा।।
ओही प्रकाश है घट घट में, ओही प्रकाश है सारे जग में।
ओही ओही ओही ओही ओही।
ओही प्रकाश है घट घट में, ओही प्रकाश है सारे जग में।।

सजनों यह अपने आप में परिपूर्ण यथार्थ का बोध रखते हुए अर्थात् सदा चेतनता से अपने अविनाशी नित्य स्वरूप में बने रहते हुए, एक आत्मतुष्ट इंसान की तरह जगत में बेखौफा-बेखतरा होकर निष्काम भाव से विचरने की व कर्मफलों से मुक्त रहने की बात है। इसी अवस्था में एकरस स्थिर बने रहने पर जीवन जीने का वास्तविक आनन्द प्राप्त हो सकता है। सजनों यदि हम चाहते हैं कि हम भी इस आनन्द प्राप्ति के योग्य

अधिकारी बनें तो इस हेतु हमें अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल स्थिर रखना होगा ताकि हम किसी विध् भी इस जगत रूपी मायाजाल में भ्रमित न हो सकें।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि सर्व कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हो, जब किसी भी शरीरधारी जीवात्मा का अपने जीवन का परम प्रयोजन सिद्ध करने हेतु परमात्मा से मिलन बना रहता है तो उसके ललाट के मध्य प्रकाशित, उस ज्योति स्वरूप परमात्मा के प्रकाशमय बिन्दु के प्रकाश से, जीव व जगत का रहस्य हृदय में प्रकाशित रहता है। इस दिव्य अवस्था में उस विवेकबुद्धि इंसान के लिए ख़्याल को ध्यान स्थिर कर, आत्मानुभूति करना यानि अपना यथार्थ जानना सहज हो जाता है। इस आत्मानुभूति के पश्चात् उसे लगने लगता है कि जो स्वरूप मैंने अपने मन-मन्दिर में देखा है, वही स्वरूप मेरा बाहर हर एक में है और वही मेरी असलियत भी है। अतः वह समस्त द्वि-द्वेष मिटाकर इस सकल ब्रह्मांड को ब्रह्ममय जानने लगता है। धीरे-धीरे यह विश्वास उसके मन में अटलता धारण करने लगता है और उसकी सुरत जगत के समस्त कार्यव्यवहार प्रभु के निमित्त करते हुए भी निःसंकोच होकर समर्पित भाव से उसी एकरस अवस्था में समभाव से स्थिर सधी रहती है। फलतः उस इंसान ने संसार में आने के पश्चात् जितने भी शारीरिक स्वभाव अपनाए होते हैं वह उस तेजोमय प्रकाश बिन्दु के प्रभाव से भस्म होने लगते हैं और धीरे-धीरे स्वतः ही उसका वास्तविक दिव्य स्वरूप प्रकट हो जाता है अर्थात् आत्मदर्शन हो जाता है। सजनों इस परिणाम के दृष्टिगत आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का परम पुरुषार्थ करो और यथार्थ अवस्था में बने रहने हेतु अपने अन्दर ऐसा मजबूत मादा उत्पन्न करो कि इस प्राप्ति हेतु अपना तन-मन-धन, सम्बन्ध व समय सहित कुछ भी वारने से न सकुचाओ। इस तरह अलौकिक धन प्राप्त कर मालोमाल हो जाओ यानि अमीरों के भी अमीर कहलाओ।

इस संदर्भ में जानो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमें उन कलुकालवासियों की तरह बनना शोभा नहीं देता जो संकल्पों-विकल्पों, विघ्नों और कर्मों के चक्रव्यूह में उलझ ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं या फिर जिन मनमत पर चलने वालों के मन में नित्यप्रति सत्संग में आने-जाने व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को पढ़ने-सुनने के पश्चात् भी जगतीय विषयों के प्रति वैराग्य तथा त्याग भावना जाग्रत नहीं होती। सजनों जानो इस

कष्टप्रद अवस्था से न उबर पाने के कारण ही उन्हें जन्म-मरण के चक्रव्यूह में पड़, दुःख-सुख भोगना पड़ता है।

आप-हम सबके साथ ऐसा न हो इस हेतु सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपने आप को दुनियां के समस्त अन्य इंसानों से विलग व सौभाग्यशाली समझें और किसी के भी प्रभाव में आकर, हम अपनी किसी भी मत को पारमार्थिक उन्नति के पथ की बाधा न बनने दें। इस तरह निर्विघ्न व निर्भय होकर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते जाएं। इस हेतु सजनों हम ऐसे समझदार इन्सान बनें कि हमारा निःस्वार्थ होकर सत्य-धर्म की राह पर यथा बने रहने के तप का परिणाम आत्मा और परमात्मा का मिलन यानि संगम हो और हमारी सुरत परमेश्वर की पटरानी बन अटल सुहागन हो परमेश्वर के साथ एक रूप हो जाए और अटल राज का परमानन्द प्राप्त कर परमधाम में विश्राम पाए।

प्रकाश के विषय में आगे बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे। तब तक प्रकाश के विषय में अब तक पढ़ाए गए दोनों सबक़ों के विषय में मजबूती ले लेना ताकि अंत परिणाम सुखकारी निकले।

दिनाँक 15 जुलाई 2018 का सबक़

प्रकाश-3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब सजन परमानन्द प्राप्त कर परमधाम में विश्राम पाएं उसके लिए श्री साजन परमेश्वर हम कलुकालवासियों पर अपनी विशेष कृपा दृष्टि रखते हुए अपने यथार्थ से व जीव, जगत व ब्रह्म के खेल से परिचित कराने हेतु क्या कहते हैं, अति ध्यानपूर्वक सतर्कता से सुनोः-

1. सब सजन आँखें बंद कर लो और ख़्याल द्वारा आद् अक्षर का अफुरता से युक्तिसंगत जाप करते हुए हृदय में आत्मप्रकाश का अनुभव करते हुए ए विध् ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करो कि आपका ख़्याल ध्यान स्थिर हो अजपा जाप अवस्था को प्राप्त कर शांत और मौन हो जाए और हृदय स्थित सत्य प्रकाशित हो उठे। इस हेतु अपने मन पर अंकुश रखते हुए सचेतन बने रहो।

2. सजनों हृदय स्थित सत्य के प्रकाशित होने का अर्थ होगा कि ब्रह्मसत्ता ग्रहण करने की क्रिया आरम्भ हो गई। सजनों जब यह क्रिया आरम्भ हो जाए तो इस

प्रकार अपने ध्यान को स्थिर कर लो कि किसी प्रकार का कोई फुरना या सोच आपके मार्ग में अवरोध उत्पन्न न कर सके। अब ख़्याल को शब्द ब्रह्म के साथ जोड़ो और उसे जानने का प्रयास करो।

3. तत्पश्चात् नाम का अफुरता से विधिवत् जाप करते हुए आत्मप्रकाश में निहित निज परमात्म स्वरूप का अनुभव करो। इस संदर्भ में याद रखो कि श्री साजन परमेश्वर कहते हैं कि हम ही बिन सूरजों प्रकाशित, ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर सिरजनहारा हैं और हमारा कोई रूप, रंग, रेखा नहीं है। सजनों इस सत्य का बोध कर सब भ्रमों से आज़ाद हो जाओ।

4. अब परमेश्वर का जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है, जग अन्दर उसी प्रकाश के होने का अनुभव करो और इस अनुभव द्वारा ईश्वर के विराट् दर्शन यानि सर्वव्यापकता को समझो।

5. इस तरह बोध करो किः-

जनचर, बनचर, जड़-चेतन सब में ज्योति स्वरूप एक वही प्रकाश है।
कोना-कोना, डाली-डाली, अन्दर-बाहर, घट-घट में, हद-हद में पब-पब में, आद्-अन्त, अनंत-बेअन्त, आदि-अनादि-प्रमादि, विराट् नगरी, कुल दुनियां अन्दर वही प्रकाश ही प्रकाश है।
सर्व-सर्व यानि धरती-आकाश, सूरज-चाँद, सितारे, जल-थल, पवन और पानी सप्तद्वीप, भूमंडल,
गगनमंडल, नौखंड सारा ब्रह्मांड, सब उसी प्रकाश से प्रकाशित है।

अर्थात्

सर्गुण, निर्गुण, निर्वाण, परमधाम बिन सूरजों उसी का चमत्कार है।

इस सत्य को सजनों स्वीकारो। ऐसा करने से सजनों स्वतः ही 'जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है, उसी प्रकाश के जग अन्दर व्याप्त होने का यथार्थ समझ में आ जाएगा यानि

सत्य बोध हो जाएगा। जब ऐसा हो जाए तो इस सत्य को धारण करो और समभाव समदृष्टि के सबक़ अनुसार सबसे सजनता का व्यवहार करते हुए विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता एक अवस्था में स्थित हो जाओ। याद रखो ऐसा करने से ही परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकोगे।

6. इतनी उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों मानो कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है अपितु अभ्यास द्वारा इस कार्य की सहजता से सिद्धि हो सकती है यानि यह आपके स्वभाव के अंतर्गत हो सकता है। स्वभाव के अंतर्गत होने का अर्थ है कि फिर दैनिक कार्य व्यवहार करते हुए आप अपने स्वरूप में स्थित बने रह सकते हो। अतः मजबूती में आओ, मजबूती में आओ, मजबूती में आओ।

7. आप सब ऐसा करने में कामयाब हो सको इस हेतु जानो कि, जैसे सूर्य के प्रकाश के ग्रहण द्वारा यह प्राणी जगत दृष्टिगोचर हो जाता है, ठीक वैसे ही बिन सूरजों प्रकाशित, प्रकाश के उस परम स्रोत यानि परमेश्वर के प्रकाश को ग्रहण करने पर ही हम अंतर्जगत की वास्तविकता से परिचित हो सकते हैं अर्थात् आत्मिक सत्ता, आत्मिक गुणों व आत्मिक बल/शक्ति को पहचान 'विचार ईश्वर है अपना आप' इस तथ्य का सत्य बोध कर सकते हैं। इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है:-

मूल मंत्र है शब्द गुरु, मूल मंत्र है शब्द गुरु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने मूल मंत्र शब्द को गुरु बताया और कहा कि हे इन्सान यह तेरी ही ब्रह्म सत्ता है। अगर तूं इस महान सत्ता को ग्रहण कर ले तो तू खुद ही भगवान है और साथ यह वर्ताव बताया कि शब्द में जुड़कर सजन भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व हो, फिर जो प्रकाश तुम ने मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा। उस प्रकाश में अटल होकर हर हालत में एक रस रहो क्योंकि तू अजन्मा है, तेरी आत्मा अमर है। एक आत्मा होकर तूं देखेगा कि सर्व सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है। फिर ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है और रूप रंग रेखा से बाहर है।'

इस तथ्य को समझते हुए सजनों मूलमंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करने के स्वभाव में ढलो और ए विध् अपने हृदय को सदा एकरस प्रकाशित रखो।

8. इस संदर्भ में यह भी जानो कि, उस परमेश्वर के प्रकाश को ग्रहण कर जैसे यह सूरज, अपनी प्रकाशित किरणों के तेज व बल से, इस धरती की ऊसरता/बंजरता को नष्ट कर इसे उपजाऊ बनाना अपना धर्म समझता है, जैसे उस सूरज के प्रकाश को ग्रहण कर, यह धरती जगत कल्याण हेतु, आहार रूप में प्राणी जगत का समुचित पालन-पोषण करने के लिए, अनेक प्रकार के रसीले फल, फूल, शाक, अन्न आदि उपजाना निज धर्म समझती है, ठीक वैसे ही हमें भी मूलमंत्र आद्-अक्षर के रूप में सर्वव्याप्त अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण कर, अपना व कुल समाज का समुचित ढंग से पालन पोषण करना निज धर्म समझना है। यह निष्कामता से परोपकार कमाने की बात है।

9. इस हेतु अपने मन में विचार करो कि जब सूरज, धरती यानि ईश्वर की सारी बनत परमेश्वर के प्रकाश से प्रकाशित हो, उसी के हुक्म अनुसार, सर्वहित हेतु अपने कर्त्तव्यों का पालन, धर्मसंगत निष्कामता से निभाने में ही अपना गौरव व कल्याण समझती है तो हम मानव, परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति क्यों कर, तन-मन-धन के प्रभाव में आकर, ईश्वरीय हुक्म की अवेहलना कर निज धर्म हार बैठते हैं और अधर्म का रास्ता अपनाने जैसा विनाशकारी कृत्य करने की भूल कर बैठते हैं? जानो सजनों यही कारण है कि फिर अमरधर्मा मानव होने के बावजूद हम आवागमन के चक्रव्यूह में फँस, बारम्बार जन्म-मरण की पीड़ा भोगते हैं। सजनों हमारे साथ अब फिर से ऐसा न हो इस हेतु इस तथ्य को गहनता से समझो और ईश्वर की अन्य कल्याणकारी बनत यथा सूरज, चाँद, तारे, धरती आदि के समरूप ही, निष्काम भाव से सत्य धर्म पर डटे रह अपने कर्त्तव्य समयबद्ध पूरा करने में ही अपनी शान समझो।

अंततः सजनों मानो कि प्रकाश ही जीवन है। अतः जगत के समस्त कार्यव्यवहार करते हुए इसी प्रकाश में ही अपने ख़्याल को ध्यान स्थिर रखो ताकि आप अपने

यथार्थ में बने रह व यथार्थता से जीवन जीते हुए अपना जीवन चरित्र सुन्दर व परम पवित्र बना सको।

इस परिप्रेक्ष्य में मत भूलना कि प्रकाश का निरर्थक क्रियाओं में प्रयोग करना नुकसानदायक है। इससे शारीरिक, मानसिक बल तो दुर्बल होता ही है साथ ही आत्मिक शक्ति भी क्षीण हो जाती है। फलतः मानव अपने ज्ञान व गुणों दोनों से ही अपरिचित हो, जगतीय ज्ञान व गुणों को अपनाकर मिथ्याचारी बन जाता है। ऐसा न हो इसलिए आप अपने ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल रखने वाले, अलौकिक शक्ति के प्रतीक बनो और अपने हृदय को सदा प्रकाशित रखते हुए आत्मिक ज्ञान का युक्तिसंगत प्रयोग करते हुए गुणवान व बुद्धिमान कहलाओ।

याद रखो आत्मिक ज्ञान एवं बुद्धि दोनों ही सुषुम्ना नाड़ी के बीचों-बीच दोनों भौंहों के मध्य दो दल के कमल के आकार के माने हुए पदम्-कार चक्र के रूप में स्थित हैं। इस केन्द्र बिन्दु पर स्थित रहने से ही आत्मिक ज्ञान के रूप में ईश्वर की आज्ञाएँ/उपदेश बुद्धि को प्राप्त होती हैं। तदुपरांत इन आज्ञाओं को अमल में लाने वाला इंसान ईश्वर के निमित्त ही समर्पित भाव से निष्कामता से सब कुछ करता हुआ परमेश्वर का कर्त्तव्यपरायण भक्त/सपुत्र कहलाता है और ए विध् कर्म फल से मुक्त बना रहता है और ब्रह्म नाल ब्रह्म हो अपना जीवन सफ़ल बनाता है।

सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह इसी प्रकाश की सर्व सर्व फैली हुई रोशनी/लाईट के चमत्कार के विषय में जानेंगे।

दिनाँक 22 जुलाई 2018 का सबक़

प्रकाश-4

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों कैसी विडम्बना है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताए हुए नीति-नियमों से परिचित होते हुए भी, हम सब स्वभाववश या परिस्थितियों के वशीभूत हो उन पर स्थिरता/परिपक्वता से बने रहने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं। हमारी यही असमर्थता ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल रख, अपने हृदय को निरंतर प्रकाशवान रखते हुए, अपने ख़्याल में वास्तविकता ग्रहण कर सदा यथार्थता में बने रहने के स्थान पर, अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो, इस मिथ्या जगत संग नाता जोड़ने का प्रतीक होती है और इसी कारणवश हम जगत के ही होकर रह जाते हैं और हमारे स्वभावों का टैम्प्रेचर जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में घटता-बढ़ता रहता है।

इस संदर्भ में सजनों याद रखो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा निर्धारित नीतियों पर अटलता से बने रहने पर ही यानि समयबद्ध उनकी युक्ति अनुसार सब कुछ करने पर ही हम उनके इष्ट का संग प्राप्त करने के उचित पात्र बन सकते हैं और अपने प्रकाश को पा सकते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि यह कार्य कोई कठिन कार्य नहीं है। सच्चेपातशाह जी ने उन परमपिता की नीतियों की पालना द्वारा, जगत के

समस्त कार्य व्यवहार अकर्त्ता भाव से करते हुए ऐसा सहजता से सिद्ध कर दिखलाया और परम पुरुषार्थ द्वारा अपने हृदय को प्रकाशित कर भरपूर व आत्मतुष्ट हो गए। इस प्रकार 'जो प्रकाश है मन मन्दिर, ओही प्रकाश है जग अन्दर' का अनुभव कर वह प्रकाश नाल प्रकाश हो गए।

सजनों कलियुग में उन द्वारा ऐसा अद्भुत पराक्रम कर दिखाने पर सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी महाराज हर्षित हो उठे और उनकी इस अपार महिमा का तीनों लोकों में प्रचार करने हेतु दरबार लगाया गया। जब दरबार पूरी तरह से सज गया पर दरबार में जाने के लिए सच्चेपातशाह जी किसी कारणवश वक्त से नहीं पहुँचे तो सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी उनसे इस देरी का कारण यह कहकर पूछने लगे कि

'मुश्किल नाल पहुंचे हो देरी क्यों लगाई साजन जी देरी क्यों लगाई है।
ओ देरी क्यों लगाई साजन जी देरी क्यों लगाई है।।'

कोई उत्तर न आने पर वह आगे फिर उन्हें कहने लगे कि शीघ्र ही दरबार जाना है क्योंकि वहाँ दूर-दूर से यानि तीनों लोकों से ऐसी मंडलियाँ आई हुई हैं जिनका आपस में प्रेम-प्यार देखते ही बनता है। अपने इन शब्दों को उन्होंने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के माध्यम से कुछ ऐसे व्यक्त किया:-

जल्दी जाना है दरबार ओथे हो रिहा प्रचार।
देरी क्यों लगाई साजन जी देरी क्यों लगाई है।।
दूरों दूरों मण्डलियाँ आवन कैसा आपस विच प्रेम प्यार।
देरी क्यों लगाई साजन जी देरी क्यों लगाई है।।

सजनों इस कीर्तन को आगे समझने से पहले 'देरी' से सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी का क्या अभिप्राय है, इस तथ्य को समझना अनिवार्य है। इस संदर्भ में जानो सच्चेपातशाह जी इस द्वारे की नीति-नियम अनुसार नियम से अनुशासनबद्ध होकर तीन वक्त का अखंड पाठ करते व हथ कार वल व चित्त यार वल रखते हुए निष्कामता से सदा अपना ख़्याल व ध्यान प्रभु चरणों में जोड़े रखते। इस अनुशासनबद्धता द्वारा सजनों न केवल उनका ख़्याल अंतर्मुखी होकर ध्यान स्थिर हो गया अपितु वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व

भाव-स्वभाव रूपी बाणा भी निर्मल हो कंचन हो गया और वह अन्दरूनी वृत्ति में सर्गुण-निर्गुण के नजारे देखते हुए, निर्वाण-परमधाम की मौजें मानणे लगे और दुनियां में चानणा लाने के लिए आपस में (सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी व सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के साथ) बातचीत करके, (जिसका वर्णन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित भजनों/कीर्तनों में किया गया है), भूले हुए जीवों को अपने घर की राह दिखाने लगे। निःसंदेह सजनों इस हेतु उन्हें दैनिक क्रियाक्लाप ठीक से करते हुए अपनी व्यस्त दिनचर्या में से आवश्यक समय भी निकालना पड़ता परन्तु संसार व परमार्थ दोनों में समुचित तादात्म्य बनाए रखने हेतु वह प्रत्येक कार्य निर्धारित समय में उचित नीति व रीति से ही करते। आशय यह है कि जिस तरह सांसारिक समस्त कार्यों का समय था उसी तरह परमार्थ में भी वह निश्चित समय पर अन्दरूनी वृत्ति में हो जाते और दरबार लगा कर, रचनाएँ रचा कर व कुदरती साईन्स के तजरबे कर करके दुनियां वालों को आत्मपद प्राप्त करने की युक्ति व उसको वर्ताव में लाकर विचार पर खड़े होने के तरीके बताते।

इसी संदर्भ में सजनों जब एक दिन किसी कारणवश वह विलम्ब से पाठ पर बैठे यानि , अन्दरुनी वृत्ति में सही समय पर दरबार में हाजिर होने के लिए सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के पास न पहुँच पाए तो रामचन्द्र जी ने यह कहकर 'मुश्किल नाल पहुंचे हो देरी क्यों लगाई साजन जी देरी क्यों लगाई है' एक तो उन्हें समय पर दरबार में आने के प्रति सतर्क किया दूसरा यह कहकर कि 'दूर-दूर से यानि तीनों लोकों से प्रेम से भरपूर मंडलियाँ आकर आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं'। आगे से कदाचित् किसी भी कारणवश परमार्थ/परोपकार के लिए निर्धारित अपने समय को अन्य किसी कार्यों में व्यतीत न करने का संदेश भी दिया।

इस तथ्य से हमें समझना है कि जिस तरह समयानुसार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम अक्षर आदि द्वारा अफुरता से ख़्याल को ध्यानपूर्वक अपने इष्ट की ओर नीतिसंगत साधे रख आत्मबोध करने की रीति है, उसे दिलचस्पी में आकर बिलकुल ठीक वैसे ही अपना कर, अपने स्वभाव के अंतर्गत करने पर ही हम अपना अभिप्राय समय पर सिद्ध कर परोपकार कमाने के योग्य बन सकते हैं। अतः सजनों मानो कि ए विध् परमात्मा के हुक्म व नीतियों की पालना द्वारा भक्ति भाव पर स्थिरता

से बने रहने वाला सजन ही इस क्रिया द्वारा अपने वास्तविक ज्ञान, गुण व शक्ति का एहसास कर निपुणता व निर्भयता से परमात्म स्वरूप होकर इस जगत में विचरते हुए भी इस जगत से आज़ाद रह सकता है। हम भी ऐसा कर सकें उसके लिए हमें मानना होगा कि समय अनुसार नीतियों का पालन करना अपने आप में आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर मिथ्या ज्ञान से छुटकारा पा उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल होने व अपने सुन्दर स्वरूप को पाने की बात है।

आओ सजनों अब इस प्रसंग से शिक्षा ले आगे जानते हैं कि जब परम पुरुषार्थ को सिद्ध कर सच्चेपातशाह जी लोक कल्याणार्थ निष्कामता से परोपकार के कार्यों में जुट गए तो सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी ने सबके सामने सच्चेपातशाह जी को सम्बोधित करते हुए यानि तीनों लोकों में उनकी सामर्थ्य व यश-कीर्ति की महिमा गाते हुए क्या कहा, ध्यान से सुनोः-

- कवित्त -

आप दी लाईट जावे कुल संसार अन्दर,
लाईट आप दा है प्रकाश साजन।
आप दी लाईट सूरज चांद देवे,
ते रोशनी लाईट दा है चमत्कार साजन।।
आप दी लाईट सप्तद्वीप गगन मण्डल,
लाईट आप दी सारा विस्तार साजन।
आप दी लाईट आद जुगाद दिस्से,
लाईट आप दी अपर अपार साजन।।
ब्रह्मा जी कच्चे भाण्डे घड़े,
लाईट आप दी नाल भाण्डा खड़ खड़ करे।
लाईट आप दी करे कार विहार साजन,
लाईट आप दी नाल करे, ओ विहार साजन।।
आप दी लाईट जगे ओ आद अन्त साजन,
लाईट आप दी ओ आकाश पाताल साजन।

आप दी लाईट विशाल जगे मन मन्दिर,
ते लाईट आप दी करे ओ सिंगार साजन।।
आप दी लाईट संख चक्र गदा पद्यम् धारे,
लाईट आप दी है मालो माल साजन।
आप दी लाईट जगत निर्लेप दिस्से,
लाईट आप दी ओंकार इक ओंकार साजन।।
आप दी लाईट सर्व सर्वत्र दिस्से,
लाईट आप दी हर प्रकार साजन।
आप दी लाईट त्रिलोकी विच डिस्से चानणा,
लाईट आप दी बिन सूरजों चमत्कार साजन।।

भावार्थ

इस कीर्तन के अंतर्गत सजनों सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी समस्त सभा के समक्ष ब्रह्मांड अर्थात् सम्पूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनंत लोक हैं, की ओर इंगित करते हुए श्री साजन जी को कह रहे हैं कि हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! देखो आपकी लाईट समग्र संसार में रमण कर रही है। यह लाईट और कुछ नहीं अपितु आपका ही प्रकाश है अर्थात् वह शक्ति अथवा तत्त्व है जिसके योग से वस्तुओं का रूप आँखों को दिखाई देता है और इंसान उन वस्तुओं का बोध कर स्पष्टता से उनका ज्ञान प्राप्त करता है। यही नहीं सूरज यानि इस ब्रह्मांड का सबसे बड़ा और ज्वलन्त पिंड व चाँद यानि चन्द्रमा भी आप की ही इसी लाईट को ग्रहण कर आगे इस सौर जगत के समस्त ग्रहों को गर्मी, प्रकाश और शीतलता प्रदान कर रहे हैं। इस तरह सर्व आपकी ही इस लाईट अर्थात् आश्चर्यजनक रोशनी का चमत्कार यानि करामात परलक्षित हो रही है।

सजनों आगे वह दयालु कलाधारी श्री साजन जी को कहते हैं कि हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! सप्तद्वीप व गगनमंडल भी आपकी लाईट से ही प्रकाशित हो रहे हैं। चारों दिशाओं, सर्व मण्डलों, द्वीपों आदि में इसी का विस्तार नज़र आ रहा है यानि आपकी लाईट से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड के विस्तारण की क्रिया चल रही है। इस प्रकार आद्-जुगाद, अपर-अपार आपकी ही लाईट नज़र आ रही है। आशय यह है कि आपकी लाईट ही इस

ब्रह्मांड का मूल कारण है व युग-युगान्तरों तक फैली होने के नाते दर्शनीय है। निःसंदेह इसका पारावार कोई नहीं पा सकता।

फिर सजनों सृष्टि चक्र का अद्भुत खेल बताते हुए श्री रामचन्द्र जी कहते हैं कि हे लीलाधारी साजन ! सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा जी, जो विद्याता के नाम से जाने जाते हैं वह तो केवल अपरिपुष्ट यानि माटी के बिना पके कमजोर भांडे अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्तुओं/शरीर के रूप ही बना सकते हैं। हकीकत में तो वह वस्तु/भांडा आपकी लाईट प्राप्त होने पर ही पकता है और खड़-खड़ करने लगता है यानि चेतनायुक्त हो क्रियाशील हो उठता है और आपकी लाईट का उपयोग कर जगत के सब कार्यव्यवहार करने लगता है। स्पष्ट है सजनों, श्री साजन जी की ही लाईट से चेतन शरीर के समस्त व्यापार होते हैं।

इसी संदर्भ में सजनों सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी सर्वशक्तिमान श्री साजन जी को यह भी कहते हैं कि हे परमेश्वर ! आपकी लाईट ही आद्-अंत से सृष्टि में जग रही है यानि आरम्भ से लेकर समाप्ति तक और आकाश से लेकर पाताल तक चमक रही है। आपकी सुन्दर व भव्य लाईट ही विस्तृत हो हर किसी के मन-मन्दिर में जग रही है और वही आपकी लाईट ही हर वस्तु का सिंगार है अर्थात् हर वस्तु उसी लाईट से ही शोभायमान है।

आगे सजनों वह श्री साजन जी की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आप की लाईट ही शंख, चक्र, गदा, पदम् धारती है और आपकी लाईट ही मालो माल है अर्थात् अपने आप में इस सृष्टि की पालना हेतु परिपूर्ण है। इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों स्पष्ट कर दें कि चूंकि सच्चेपातशाह जी प्रकाशमय अवस्था को प्राप्त हो प्रकाश आत्मा हुए इसलिए उन्हें शंख, चक्र, गदा, पद्मधार श्री विष्णु भगवान के नाम से सम्बोधित किया गया और उन्हें ही प्रकाश के धर्म अनुसार इस सृष्टि को प्रकाशित रखने की कला में परिपूर्णता पारंगत माना गया।

आगे यह अद्भुत बात बताते हुए श्री रामचन्द्र जी कहते हैं कि हे मेरे साजन ! आपकी लाईट प्रकाश का धर्म निभाते हुए भी जगतीय विषयों आदि से निर्लेप दिखती है।

इसलिए मानो कि आपकी लाईट ही इक ओंकार यानि परमात्मा का सूचक ओ३म् शब्द अर्थात् प्रणव मंत्र है और आप वह अनुपम व परमात्मा सम हस्ती हो जिसे परब्रह्म परमेश्वर कहते हैं। वह कहते हैं कि इस महिमावान पद को पाने के कारण ही आप की लाईट सर्व-सर्वत्र अर्थात् सब जगह दिख रही है और सभी दिशाओं में एक समान भासित हो रही है। अंत में वह कहते हैं कि हे श्री साजन, आपकी लाईट का ही कुल त्रिलोकी में चानणा दृश्यमान है और यह आपकी अद्भुत लाईट ही बिन सूरजों यानि बिना किसी स्रोत के अपने आप चमक रही है।

निःसंदेह सजनों यह सब सुनने-समझने के पश्चात् आपके अन्दर भी अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखने के प्रति कुछ मजबूती अवश्य आई होगी। यदि ऐसा ही है तो सजनों जान लो कि जो इस सर्वश्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त कर लेता है वह ही विश्वपति कहलाता है। कहने का आशय यह है कि वह आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जानने वाला जितेन्द्रिय मानव, आत्मस्वरूप में स्थित रह, स्वतन्त्र बुद्धि होकर, हर परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का यानि निष्काम भाव से सत्य-धर्म पर सुदृढ़, बना रहता है व अद्वितीय कहलाता है। तभी तो उसके मन को संतोष व आनन्द प्राप्त रहता है। जानो एक संतोषी व्यक्ति ही परोपकार के निमित्त अपने हित का विचार छोड़ सबका मंगल कर सकता है व सबसे ऊँचे आध्यात्मिक लक्ष्य को पाने के लिए अपनी इच्छाओं और सांसारिक स्वार्थों का त्याग सहजता से कर सकता है। अंततः जानो कि वह ब्रह्मज्ञानी आत्मा का अस्तित्व या उसे सर्वत्र व्याप्त मानने का सिद्धान्त अपना विचार, सत्-जबान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था में सुदृढ़ बना रह अपने जन्म की बाजी जीत लेता है। सजनों अगर हम भी आत्मविजयी होना चाहते हैं तो हमें भी आत्मविद्या अनुरूप आत्मविचारों पर हर हाल में समर्पित भाव से डटे रहना होगा। तभी हम प्रकाश नाल प्रकाश हो रोशन नाम कहा सकेंगे।

सजनों आज के समय काल में क्योंकर हम अपने प्रकाशित स्वरूप को भूल अंधकारमय वातावरण में भटक विवेकहीन हो चुके हैं, उसके कारण व उनसे उबर कर हमें किस प्रकार विवेकशीलता से अपने बुद्धिबल द्वारा इस जगत रूपी विराट् दर्शन का यथार्थ समझना है और अपने प्रकाश को पा परमेश्वर नाम कहाना है, इसके विषय में हम आगामी सप्ताह बात करेंगे।

दिनाँक 28 जुलाई 2018 का सबक़

प्रकाश-5

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ सजनों आज समझते हैं कि हमने परमधाम पहुँच और अपने प्रकाश को पा किस तरह परमेश्वर नाम कहाना है। इस संदर्भ में इस महान प्राप्ति के लिए जो युक्ति सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है आओ उसको अब हर पहलू से समझते हैं। सब सजनों से प्रार्थना है कि उचित परिणाम प्राप्त करने हेतु, ध्यान स्थिर होकर सुनना व समझना। इस संदर्भ में याद रखना कि जो ध्यान स्थिर होता है वह एकाग्रचित्त होता है और उसी का ख़्याल सत्य को धारण कर पाता हैः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

भगवान, भगवान कुर्सी ते जब बैठ गये कृपानिधान।
संस्था हथ जोड़ करे चरण बन्दना, कोटि कोटि प्रणाम।।

परमधाम परमेश्वर राहवे, ईश्वर परमात्मा नाम कहावे।
है ओ प्रकाश कैसा उजियाला,

प्रकाश ही प्रकाश हर समय ओ सुहावे समय ओ सुहावे।।

जब अन्दर बाहर परमेश्वर राहवे,
ओ बाहर जंगलों में ढूँढन किस तरह जावे।
जब पता है ओ वस्तु है घर में, हीरे जैसा जन्म अमोलक मिलया।
फिर उस जन्म नूं क्यों वृथा गंवावे, वृथा गंवावे।।

कुटिया बना के लाये जंगलों में डेरे,
असली राज नूं छड के कच दा राज खरीदे।
कोई लिटां वधा के भस्मां रमा के।
धूनियां लाके ओ फुरना उठावे, ओ फुरना उठावे।।

जेहड़ा सजन ईश्वर नूं मिलना चाहवे,
अलफ़ है अक्षर ओ ठीक चलावे।
ख़्याल महाबीर जी नाल जुड़या ओ राहवे।
ओ प्रकाश दी पहचान करदा राहवे, प्रकाश नूं पावे।।

एहो तरीका वर्ताव में लियाओ, फिर परमेश्वर नाल मेल ओ खाओ।
ज्योति नाल मेल ओ खाके, परमधाम दा नज़ारा ओ पावे।
प्रकाश नाल प्रकाश होके रौशन नाम कहावे, रौशन नाम कहावे।।

शब्दः-

जेहड़ा परमधाम और अपने प्रकाश नूं पावे।
ओ परमेश्वर नाम कहावे, ओ परमेश्वर नाम कहावे।।

सजनों इस कीर्तन के माध्यम से भक्त वत्सल श्री साजन परमेश्वर उन भटके हुए कलुकालवासियों को, जो भगवान व भक्त के वास्तविक सम्बन्ध से अपरिचित हो, विभिन्न प्रकार के प्रचलित आडम्बर युक्त भक्ति-भाव अपना कर, अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं, उन्हें यथार्थ रूप से भगवान के उपासक बनने के प्रति सचेत करते हुए व भक्त-भगवान की अभेदता से परिचित करा, एक रूप मानने व जानने के प्रति

सुदृढ़ता से बने रहने हेतु कह रहे हैं कि समस्त पूर्व अवधारणाओं को त्याग कर, इस यथार्थ को स्वीकारो कि आप और कुछ नहीं अपितु परमात्मा की वह आत्मा हो, जो जीव रूप में शरीर धार कर आई है। अतः इस जगत में उन्हीं पर विश्वास रखते हुए, उन्हीं के निर्देशन अनुसार, उन्हीं के निमित्त सेवा करना आपका सर्वोच्च कर्त्तव्य अर्थात् धर्म है। वह कहते हैं कि अगर आप इसी भाव से अंतर्जगत को उसी प्रभु की पाठशाला समझ कर, अनुशासनबद्धता से, उन्हीं के मुख से धर्म उपदेश अर्थात् शब्द ब्रह्म विचार सुनते हो व उसका अनुशीलन करने को महत्ता दे, अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेते हो यानि अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताना-बाणा निर्मल कर, कुशलता से उचित परिणाम प्राप्त करने के योग्य बन जाते हो तो ही आप यथार्थतः भक्त कहलाने के योग्य हो सकते हो और यथार्थता से जीवन जीते हुए अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हो। यह उसी के साम्राज्य में बने रह उसी के हुक्म अनुसार सृष्टि चक्र को चलायमान रखने के लिए आवश्यक है। जानो जगत में रहते हुए भी अपने मन को जगतीय माया जाल से निर्लिप्त व अप्रभावित रख, सदा प्रभु में लीन रखने वाला, व अपने इरादों पर मजबूत बने रहने वाला, ऐसा निष्काम भक्त ही हकीकत में सच्चा भक्त कहलाता है। वह ही प्रकाशमय अवस्था में स्थिर बने रहते हुए, परमेश्वर के हुक्म अनुसार अकर्त्ता भाव से ब्रह्मा जी द्वारा रचित जड़ भांडों को क्रियाशील करने की सामर्थ्य प्राप्त कर पाता है।

आगे श्री साजन परमेश्वर कलुकालवासियों को अविचारयुक्त रास्ता छोड़, विचार में आने के लिए कहते हैं कि जब हर घट के अंदर यानि अंतःकरण/हृदय में और बाहर, परम इष्ट, प्रियवर परमेश्वर यानि संसार तथा जगत के कर्त्ता तथा परिचालक सर्गुण ब्रह्म, श्री विष्णु भगवान रहते हैं और अंतर्ध्यान होकर जिन्हें जाना जा सकता है तो फिर इंसान किस प्रभाव में आकर उसे बेगाना समझ कर या उससे अपरिचित होकर, बाहर-जंगलों में अर्थात् किसी दूसरी जगह उसे ढूँढने/खोजने जाता है? कहने का आशय यह है कि इस सर्वविदित सत्य को जानने के पश्चात् भी कि 'परमात्मा का हर हृदय में निवास है', इंसान क्योंकर अपने मन को भटकाता है? क्यों नहीं हर परिस्थिति में उस हृदय स्थित परमेश्वर पर अटल विश्वास रख व ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल की युक्ति द्वारा अपने अंतःकरण को सदा विशुद्ध रख उस सर्वव्याप्त दर्शन का

साक्षात्कार करता?

इसी बात को और स्पष्टता से समझाते हुए सजनों श्री साजन जी कहते हैं कि जब हम इस रहस्य से परिचित हैं कि 'वह परमात्मा हृदय में सुशोभित है और हमारी सुरत उन तक पहुँच, उनका परिचय व संग प्राप्त कर, अपने मन-वचन-कर्म द्वारा उन्हें अभिव्यक्त करने में समर्थ है', तो फिर क्यों कर हमें उस सत्-वस्तु अर्थात् जगत के मूल कारण को इस घट से बाहर ढूँढने की आवश्यकता अनुभव होती है।

वह कहते हैं कि यह बात समझ में नहीं आती कि क्योंकर हीरे अर्थात् सर्वोत्कृष्ट बहुमूल्य मानव रूप, (जिसको शब्द ब्रह्म विचारों से तराशने पर इंसान सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण बने रह, वज्र अवस्था को प्राप्त हो, जन्म की बाजी जीतने की सामर्थ्य रखता है) को पाने के पश्चात् मानव, परमेश्वर को अपने से विलग समझ, एक अज्ञानी इंसान की तरह उसकी खोज कहीं बाहर करते हुए, अनमोल मानव जीवन व्यर्थ गँवाना, गवारा समझता है?

सजनों श्री साजन परमेश्वर कहते हैं कि इसी अज्ञानतावश जीव, परमात्मा का अंश होते हुए भी, अपनी अलौकिक शहनशाही से अपरिचित हो, अपने कुटम्ब-कबीले के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन की तरफ से पलायन कर, कुटिया बना कर जंगलों में डेरा जमाने को उचित मानता है। वह कहते हैं कि यह असली/ विशुद्ध राज अर्थात् परमात्मा का प्रभुत्व अस्वीकार, अपना मनगढ़ंत मिथ्या साम्राज्य स्थापित कर, अपना अलग अस्तित्व स्थापित करने जैसी कुटिलता भरी बात है। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि यह अपनी अजर-अमर अवस्था त्याग अचेतन अवस्था को प्राप्त हो, उत्साह और दृढ़ता के अभाव में, दुःखमय जीवन व्यतीत करना है क्योंकि यह अपने आप में बुद्धिबल से, अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखकर इस जगत में निर्लिप्तता से विचरने के स्थान पर मनुराज का आधिपत्य स्वीकारने जैसी आश्चर्यजनक बात है।

इसी संदर्भ में सजनों आगे परमेश्वर कहते हैं कि इस अव्यवस्थित परिस्थिति में फँसे होने के कारण ही कोई लिट्टें बढ़ाने व मुख पर भस्में रमाने में ही अपना झूठा गौरव समझते हैं जबकि यह अपने आप में कुदरत प्रदत्त यथार्थ ओजस्वी व तेजस्वी शारीरिक सुन्दरता के स्थान पर कुरूप होकर व इसे जप-तप का नाम देकर इस जगत में अविचारपूर्ण

रमण करने जैसी धर्मविरुद्ध बात है। इसलिए तो कहा गया है कि इस प्रकार की मन में उठने वाली तरंग के बहकावे में आकर इंसान क्यों कर धूनियाँ लगा, मन की बात को महत्त्व देते हुए खुद भटकते हुए, समस्त मानव जाति को भटकाने के अर्थ कष्ट सहना उचित समझते हैं।

सजनों ऐसे अज्ञानियों को सही अर्थों में पुनः परमार्थ के रास्ते पर लाने के लिए श्री साजन परमेश्वर कहते हैं कि जो भी सजन ईश्वर से मेल खाना चाहता है उसके लिए बनता है कि वह मूलमंत्र आद् अक्षर को युक्तिसंगत चलाना सुनिश्चित करे व उस दौरान उसकी सुरत अर्थात् ख़्याल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी संग संयुक्त रहे और वह आत्मप्रकाश के प्रभाव से अपने ज्ञान, गुण व शक्ति स्वरूप को पहचान अपनी प्रकाशमय अवस्था को प्राप्त कर ले। अंत में वह सभी कलुकालवासियों को यही युक्ति वर्त-वर्ताव में लाकर परमेश्वर से मेल खाने का आवाहन देते हुए कह रहे हैं कि ज्योति नाल मेल खाकर अर्थात् परमात्मा नाम कहा के परमधाम का नजारा देख लो और प्रकाश नाल प्रकाश हो रोशन नाम कहाओ। इसलिए जानो और मानो कि जो भी इंसानियत में बने रह परमधाम और अपने प्रकाश को पा लेता है वह ही परमेश्वर नाम कहाता है।

हम सब भी इस महान पद को प्राप्त कर सकें उसके लिए वह हमें इस सत्य से परिचित कराते हैं कि हम सर्व-सर्व प्रकाशित हैं पर हमारी सर्वव्यापकता का अनुभव कोई वह विरला ही कर सकता है जिसके अन्दर दर्शन की चाह होती है। वही हमारे इलाही दर्शन पा उस दर्शन के साथ दर्शन हो वास्तविक आनन्द को प्राप्त कर सकता है। इसके आगे और स्पष्ट करते हुए वह कहते हैं कि मैं सर्वव्यापक सर्वज्ञ भी हूँ इसलिए सर्वशक्तिमान कहलाता हूँ पर जगतवासियों में से कोई विरला ही मुझे देख व समझ कर मुझ जैसा शक्तिमान बन सकता है। इसलिए श्री साजन परमेश्वर कहते हैं कि यह मानो व जानो कि जो भी परमार्थ के रास्ते से भटका हुआ स्वार्थपर इंसान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में दृढ़ता से बना रह उन्हीं की युक्ति अनुसार 'मैं' परमेश्वर का संग प्राप्त करना चाहता है उसके लिए ऐसा कर पाना कोई कठिन कार्य नहीं है। इसलिए सजनों इस सत्य कथन को समझो और पराक्रमी बन प्रकाश नाल प्रकाश हो रूप रंग रेखा से आजाद हो जाओ।

आपकी जानकारी हेतु प्रकाश के विषय में इससे आगे बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे। तब तक उस अनडिठी चीज को देख परमपद पाने के प्रति अपने अन्दर भरपूर तड़फ पैदा करो। इस में एक दूसरे से आगे निकलने का यत्न करो और विजयी हो जाओ।

दिनाँक 5 अगस्त 2018 का सबक़

प्रकाश

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों विस्तारपूर्वक प्रकाश की महिमा समझने के पश्चात् अब जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित वीरवार के बोर्डों के माध्यम से श्री साजन परमेश्वर कामयाब होने की युक्ति हमें बता रहे हैं अर्थात् आत्मप्रकाश द्वारा मन में छाया अज्ञान का अंधेरा हटा व अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना बाणा निर्मल रखते हुए, उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो परमधाम का नज़ारा देखने का तरीका यानि अपने आप की पहचान करने की युक्ति समझा रहे हैं उसे ध्यानपूर्वक सुनो, धारण करो व व्यवहार में लाने का पुरुषार्थ दिखा अपने जीवन का अर्थ सिद्ध करो। आपकी पुनरावृत्ति के लिए यह सारी क्रिया सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार युक्तिसंगत कैसे करनी है आओ प्रश्नोत्तर के माध्यम से उसे एक बार फिर से जान व समझ लेते हैंः-

प्रश्न- परमधाम का नज़ारा यानि बिन सूरजों प्रकाश चमत्कार का बोध करने के लिए क्या करना होगा?

उत्तर- यत्न करना होगा कि सारा दिन हमारा संकल्प प्रभु को लोचे।

प्रश्न- जब संकल्प प्रभु को लोचेगा तब क्या होगा?

उत्तर- दृष्टि प्रभु की तरफ हो जाएगी।

प्रश्न- इस हेतु क्या करना होगा?

उत्तर- अलफ़ को ठीक से चलाना होगा।

प्रश्न- अलफ़ क्या है?

उत्तर- अक्षर।

प्रश्न- अक्षर को पकड़ कर फिर किस को पाना है?

उत्तर- अक्षर को पकड़ कर फिर 'ये' को पाना है।

प्रश्न- 'ये' को पाकर एक रस होने पर हम क्या जानने वाले हो जाएँगे?

उत्तर- सर्व सर्व की जानने वाले हो जाएँगे।

प्रश्न- अलफ की रटन लगाने से क्या होता है?

उत्तर- प्रकाश हो जाता है।

प्रश्न- जब प्रकाश हो जावे तो क्या करना है ?

उत्तर- जब प्रकाश हो जावे तो उस प्रकाश को खड़ा कर लेना है यानि उसमें मज़बूत हो जाना है।

प्रश्न- उस प्रकाश पर मज़बूती से खड़े होने के लिए क्या करना है?

उत्तर- विचार करना है कि जो प्रकाश हमने देखा है वही प्रकाश या चमत्कार असलियत मेरा अपना आप है। इस तरह अपनी भूल को सुधारना है और कार व्यवहार करते हुए निगाह उस चमत्कार के साथ हमेशा के लिए जोड़ लेनी है। इस तरह जुड़ कर उस असलियत को पूरी तरह स्थिर कर लेना है।

प्रश्न- इंसान अपनी असलियत प्रकाश में कितने समय के अन्दर स्थिर हो जाता है?

उत्तर- दो साल उस चमत्कार को पूरी तरह देखते रहने से इन्सान पूरी तरह स्थिर हो जाता है।

प्रश्न- अलफ में खड़े होकर परिपक्क होने पर किस की प्राप्ति हो जाती है?

उत्तर- अनादि जोत की प्राप्ति हो जाती है।

प्रश्न- जिन सजनों को प्रकाश नहीं होता वे क्या करें?

उत्तर- जिन सजनों को प्रकाश नहीं होता वह यत्न करें उनका संकल्प महाराज जी को लोचे। हर समय महाराज जी का ध्यान लगाने से उनको भी प्रकाश हो जाएगा और उसके बाद वह भी उस चमत्कार में खड़े हो जाएँगे।

प्रश्न- अलफ पक्का हो जाने पर कौन सी अवस्था आ जाती है?

उत्तर- युवा-अवस्था ।

प्रश्न- युवा-अवस्था आ जाने पर किसकी प्राप्ति होती है?

उत्तर- युवा-अवस्था आ जाने पर बल की प्राप्ति होती है और शक्ति ताकतवर हो जाती है।

प्रश्न- शक्ति ताकतवर होने से जो सजन अपने असली स्वरूप पर खड़ा हो गया फिर उससे किसकी प्राप्ति होती है?

उत्तर- शक्ति ताकतवर होने से जो सजन अपने असली स्वरूप पर खड़ा हो गया फिर उससे 'ये' की प्राप्ति होती है।

प्रश्न- 'ये' की प्राप्ति होने पर क्या होता है ?

उत्तर- अलफ छूट जाता है और इंसान 'ये' के एक फुरने में खड़ा हो जाता है। दूसरे ख्यालों का नामोनिशान नहीं रहता।

प्रश्न- अलफ जब छूट गया और 'ये' मिल गया फिर इन्सान कहाँ स्थिर हो जाता है?

उत्तर- अलफ जब छूट गया और 'ये' मिल गया फिर इन्सान आकाशों-आकाश, पातालों-पाताल, सप्तद्वीप-भूमण्डल में प्रवेश करता हुआ गगन मण्डल में स्थिर हो जाता है।

प्रश्न- जब इन्सान गगन मण्डल में स्थिर हो गया तो फिर वह सजन किस अवस्था को प्राप्त कर लेता है?

उत्तर- फिर वह सजन प्रमादि सर्व-सर्व की जानने वाला हो जाता है यानि उसकी किरणें सब संसार में फैलती हैं तो वह तीनों कालों की जानने वाला हो जाता है यानि जो गुज़र गई जो इस वक्त जेहड़ी आने वाली तीनों कालों की पहचान कर लेता है। फिर वह कर्त्ता भी है और अकर्त्ता भी। संसार में विचरता भी है और नहीं भी विचरता।

प्रश्न- सर्गुण-निर्गुण के खेल कौन देख व खेल सकता है?

उत्तर- जिन की जोत निर्वाण में जगती है।

प्रश्न- निर्वाण में क्या है?

उत्तर- चमत्कार ।

प्रश्न- वह चमत्कार क्या है?

उत्तर- बिन सूरजों प्रकाश, हर जगह अपना आप।

प्रश्न- इस चमत्कार को सजन हर जगह कैसे देखता है?

उत्तर- कभी सर्गुण के खेल में तो कभी निर्गुण के खेल में।

प्रश्न- निर्गुण में क्या है?

उत्तर- जोत-बिन सूरजों रोशनाई।

प्रश्न- वह रोशनी कहाँ कहाँ फैली हुई है?

उत्तर- सर्व-सबाई।

प्रश्न- इस चमत्कार की अर्थात् बिन सूरजों प्रकाश की हर जगह पहचान कर सजन कहाँ पहुँच जाता है?

उत्तर- परमधाम।

प्रश्न- परमधाम में क्या है?

उत्तर- बिन सूरजों प्रकाश ही प्रकाश।

प्रश्न- परमधाम में पहुँच कर क्या समाप्त हो जाता है?

उत्तर- रूप रंग रेखा ।

प्रश्न- रूप रंग रेखा मिट जाने से किस की समाप्ति हो जाती है?

उत्तर- तीनों तापों के टैम्परेचर की।

प्रश्न- अलफ के मिलने से पहले इन्सान क्या होता है?

उत्तर- कठिन यानि उसको संसारी कन रस होता है।

प्रश्न- अलफ के मिलने के बाद वह क्या हो जाता है?

उत्तर- नर्म यानि उसको शास्त्र का कन रस पड़ जाता है।

प्रश्न- फिर 'ये' के मिलने पर उसकी क्या अवस्था आ जाती है?

उत्तर- वज्र यानि उस पर ईंट रोड़ा कोई प्रहार नहीं कर सकता।

प्रश्न- जब न अलफ़ रहता है न 'ये' तो कौन सी अवस्था आ जाती है?

उत्तर- अफुर अवस्था।

प्रश्न- अफुर अवस्था आने पर क्या होता है?

उत्तर- अफुर अवस्था आने पर सजन, गगन मण्डल में जहां रूप रंग रेखा नहीं महाराज जी के साथ मेल खा जाता है।

प्रश्न- महाराज जी से मेल खाने का क्या अर्थ है?

उत्तर- बिन औखियाइयों बिन खेचलों, बिन तकलीफों जन्म की बाज़ी को जीत लेना। इस अवस्था में तीनों तापों का टैम्परेचर जो घटता बढ़ता रहता है वह समाप्त हो जाता है।

प्रश्न- तीनों तापों के टैम्परेचर के घटने-बढ़ने से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जैसे बुखार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह हमारे स्वभावों का टैम्परेचर भी घटता बढ़ता रहता है। अगर हम संतोष पर काबू पाते हैं तो धैर्य छूट जाता है। धैर्य पर काबू पाते हैं तो सच्चाई-धर्म छूट जाता है। इसे ही तीनों तापों का घटता-बढ़ता टैम्परेचर कहते हैं।

प्रश्न- किस युक्ति पर चलने से तीनों तापों का रोग मिट जाता है और हमारे सब सवाल हल हो जाते हैं?

उत्तर- उपरोक्त बताई गई समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर चलने से तीनों तापों का रोग मिट जाता है और हमारे सब सवाल हल हो जाते हैं।

प्रश्न- जब तीनों तापों का रोग मिट गया और हमारे सब सवाल हो गए तो किसकी प्राप्ति हो जाएगी?

उत्तर- फिर समभाव जो एक निगाह एक दृष्टि देखनी होती है बिना यत्न के उसकी प्राप्ति हो जाएगी।

प्रश्न- एक निगाह एक दृष्टि होने का क्या अर्थ है?

उत्तर- जन्म की बाजी को जीत लेना।

प्रश्न- इस युक्ति की प्रवानगी द्वारा सजन अर्जुन ने संसारी व परमार्थी दोनों राज्य कैसे प्राप्त कर लिए?

उत्तर- इस संदर्भ में जब अर्जुन ने सजन कृष्ण महाराज जी को बताया कि मैंने आज चतुर्भुजधार का चमत्कार देखा है तो महाराज जी ने कहा कि अर्जुन यह प्रकाश तेरी असलियत अपना आप प्रकाश है। यही प्रकाश कुल दुनियां है। इस पर खड़े हो जाओ। सजन अर्जुन ने वचन प्रवान किए उस चमत्कार के साथ निगाह जोड़ ली और संसारी व परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर लिए।

उपरोक्त तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी पर दृढ़ विश्वास रखते हुए व उनकी नीतियों पर स्थिरता से चलते हुए, युक्ति को प्रवान कर, सजन अर्जुन जैसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाएं। ए विध् सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त करना सुनिश्चित करें और परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाएँ। इस हेतु सजनों अब जब भी वीरवार के बोर्ड पढ़ो तो इसी तरह से समझते हुए पढ़ना और संभल-संभल के विचारपूर्वक सब जानते समझते हुए आगे कदम बढ़ाना। ऐसा करने से मजबूती आएगी और आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। यदि चाहते हो सजनों ऐसा ही तो इस हेतु आओ अब प्रभु के आगे सच्चे दिल से बल, बुद्धि और ज्ञान प्राप्ति की याचना करते हैं:-

हे प्रभु बल बुद्धि और हमको ऐसा ज्ञान दो।
जो भी जीवन में करें , वह हर कर्म निष्काम हो।।

धैर्य धर कर धीर हों, निर्भय बन हम वीर हों।
ख्याल निर्विकार हो और स्वस्थ अपने शरीर हों।।
हे प्रभु बल बुद्धि और .....

जो भी सोचें सत्य हो, सत्य निहित हर बात हो।
जो कर्म भी हम करें, वह सत्य के प्रतीक हों।।
हे प्रभु बल बुद्धि और .....

मन में हो न लोभ मोह, इतना सुदृढ संतोष हो।
प्रसन्नता हो हर हाल में, दुःख-सुख में चिंता मुक्त हो।।
हे प्रभु बल बुद्धि और .....

धर्म में निष्ठा हमारी, ईश्वरीय गुण अनुकूल हों।
सदाचारी ऐसे बने कि भूल कर भी न भूल हो।।
हे प्रभु बल बुद्धि और .....

पढ़ लिख जो भी बनें, मन में न अभिमान हो।
त्याग और दया का भाव, हम में सदा प्रधान हो।।
हे प्रभु बल बुद्धि और .....

इस सदंर्भ में सजनों जानो कि जब मन में भी सत्य होता है, वचन में भी सत्य होता है और कर्म में भी सत्य होता है तो इंसान सत्य स्वरूप होकर परमात्म स्वरूप हो जाता है। अतः मन-वचन व कर्म में एकमतता व एकरसता चाहिए होती है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि इनकी पारस्परिक एकमतता व एकरसता भंग कैसे हो जाती है यानि ऐसा क्यों कर होता है कि मन कुछ बोलता है, वचन से कुछ बोलते हैं और कर्म द्वारा कुछ होता है? क्योंकर इनकी एकमत रहने की महत्ता को समझते हुए भी पढ़ा-लिखा इंसान भी इनकी एकरसता साधे रखने के प्रति कमजोर हो जाता है?

मौन।

याद रखो स्वार्थपरता के अन्दर घर कर जाने पर ही इनकी एकमतता व एकरसता भंग हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि स्वार्थपरता के कारण इंसान की विवेकशक्ति कमज़ोर हो जाती है और इंसान सत्य-असत्य, भले-बुरे की परख करने में कमज़ोर पड़ जाता है। परिणामस्वरूप शरीर की सारी संचालन प्रक्रिया ही बिगड़ जाती है और

पढ़ा-लिखा इंसान भी हार जाता है। ऐसा न हो इसलिए सजनों सच्चेपातशाह जी ने निष्काम रास्ता पकड़ने का आवाहन दिया है। याद रखो निष्काम रास्ता पकड़ने वाला ही मानवता के सिद्धान्त पर डटा रह सकता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों ईश्वर के हुक्म अनुसार, सृष्टि को सँवारने के कार्य में, निष्कामता व सेवा भाव से अपना भरपूर सहयोग दो और बदले में किसी चीज़ की इच्छा या अपेक्षा न रखो। याद रखो कि इस नेक कार्य की सिद्धि हेतु आत्मा रूप में अंतर्विद्यमान शक्ति स्वरूप परमात्मा स्वयं हमारे सहायक हैं। वह कहते हैं कि मेरी शक्ति को धारण कर सहजता से अपना कारज सिद्ध करो। इस प्रकार 'मैं-भाव' से रहित हो कर, ईश्वर के निमित्त समस्त कार्य अकर्त्ता भाव से करने पर ही, परमेश्वर के आज्ञाकारी सुपुत्र कहला सकोगे और ब्रह्मज्ञानी नाम कहाओगे।

दिनाँक 12 अगस्त 2018 का सबक़

प्रकाश (त्रिकालदर्शी-1)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ सजनों आज गत सप्ताह बताई गई बात की पुनरावृत्ति करते हैं और आगे त्रिकालदर्शी के विषय में समझते हैं।

प्रश्न- मूलमन्त्र क्या है?

उत्तर- ओ३म् आद् अक्षर।

प्रश्न- जो सजन मूलमंत्र को इक रस हो के चलावेगा उसे किस की प्राप्ति हो जाएगी?

उत्तर- युवा-अवस्था, बल व शक्ति की।

प्रश्न- इस प्राप्ति से उसे किस सत्य की पहचान हो जाएगी?

उत्तर- यही कि जेहड़ा मन मन्दिर है जे ओ चमत्कार, ओही असलियत है जे ओ अपना

आप।

प्रश्न- इस असलियत की पहचान करने पर क्या होगा?

उत्तर- इस असलियत को पहचान कर वह प्रकाश नाल प्रकाश हो जावेगा।

प्रश्न- जो सजन अपने असलियत प्रकाश नाल दोनों नैन मिला के दो साल परिपक्क हो जावेगा वह सजन क्या पावेगा?

उत्तर- वह विराट नगरी कुल दुनियां अन्दर अपना प्रकाश ही ओ पावेगा अपना प्रकाश ही ओ पावेगा।

प्रश्न- इस अवस्था को प्राप्त होने पर क्या होगा?

उत्तर- फिर उस सजन का अक्षर छूट जाएगा और वह 'ये' को पाएगा।

प्रश्न- जिस सजन का 'ये' इक रस चल पड़ेगा वह कहाँ स्थिर हो जाएगा?

उत्तर- वह आकाशों-आकाश, पातालों-पाताल और सप्तद्वीप भूमण्डल गगन मंडल में स्थिर हो जावेगा।

प्रश्न- गगनमंडल में स्थिर होने के पश्चात् सजन का कहाँ प्रवेश होगा और वह क्या जानने वाला हो जाएगा?

उत्तर- उस अन्दर प्रकाशी बाहिर प्रकाशी, बाहिर प्रकाशी मन मन्दिर प्रकाशी अर्थात् सब में समाए हुए का प्रवेश कुल दुनियां में होगा और वह अकर्त्ता होकर सब के दिलों की जानने वाला हो जावेगा। इस तरह वह जेहड़ी गुज़र गई जेहड़ी इस वक्त जेहड़ी आने वाली तीनों कालों की जान, त्रिकालदर्शी नाम कहावेगा।

प्रश्न- त्रिकालदर्शी होने पर क्या होगा?

उत्तर- फिर रूप, रंग न रेखा कोई, सजनों बिन सूरजों चानणा हो जावेगा।

फिर ज्योति स्वरूप पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा ओ पारब्रह्म परमेश्वर नाम कहावेगा।।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार यह सीढ़ी-दर-सीढ़ी यानि क्रमवार जीवन-पथ पर उन्नति करते हुए त्रिकालदर्शी होने व अपने घर परमधाम पहुँचने की युक्ति है। इस युक्ति को प्रवान करने पर ही जीव आत्म प्रतीति कर रूप, रंग रेखा से रहित हो जाता है और सर्व-व्यापक, सर्व-शक्तिमान व सर्वज्ञ नाम कहाता है। यहाँ प्रतीति का अर्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि प्रतीति निश्चित विश्वास/धारणा/दृढ़-निश्चय को जनाती है। प्रतीति और बोध में अन्तर होता है। बोध ज्ञान या जानकारी प्राप्त होने का सूचक है। इस अर्थ से सजनों आत्मबोध और आत्मप्रतीति में भी अन्तर होता है। आत्म-बोध करने वाला आत्मज्ञानी होता है। आत्मप्रतीति के अभाव में ऐसे आत्मज्ञानी को अहंकार यानि 'हौं-मैं' घेर लेती है और वह निष्काम पद से गिर जाता है। पर जो आत्मबोधी यह आत्म-प्रतीति कर लेता है कि 'जिससे मैं जग रहा हूँ उसी से सब जग रहे हैं' और यह निश्चित धारणा, विश्वास के रूप में उसके अन्दर घर कर जाती है तो वह इन्सान सर्व कार्य ईश्वर के निमित्त सेवा व निष्काम भाव से करता है यानि उस आत्मतुष्ट इन्सान में झुकाव आ जाता है और वह 'हौं-मैं' से रहित हो, अकर्त्ता भाव में स्थिर हो, अफुर हो जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आत्म-प्रतीति करने हेतु सर्व प्रथम आत्मबोध करो और आत्मबोध करने के पश्चात मौन हो जाओ। दो साल इसी वृत्ति में ठहरे रहो। ऐसा करने से समवृत्ति हो जाओगे और त्रिकालदर्शी नाम कहाओगे।

अब तक सजनों हमने जाना कि जीव, ईश्वर जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्याप्त व सर्वज्ञ हैं, उन सम बन कैसे त्रिकालदर्शी बनता है। यहाँ आगे बढ़ने से पहले त्रिकालदर्शी का अर्थ जानना आवश्यक है। त्रिकालदर्शी शब्द तीन शब्दों के योग से बना है यथा त्रि + काल + दर्शी। यहाँ 'त्रि' का अर्थ है 'तीन'। 'काल' का अर्थ है 'वह सम्बन्ध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान आदि की काल क्रम अर्थात् समय के प्रवाह अनुसार

प्रतीति होती है' । तथा 'दर्शी' का अर्थ है देखने या विचार करने वाला।

इस अर्थ से सजनों 'त्रिकालदर्शी' तीनों कालों यथा भूत, वर्तमान और भविष्य की बातों को देखने या जानने की सामर्थ्य रखता है। इसी कारण उसे हर जीव के सम्बन्ध में उसके भूत, वर्तमान और भविष्य की बातों का स्पष्टतः ज्ञान होता है अर्थात् उस जीवात्मा ने पहले क्या किया और अब क्या कर रहा है और आगे उसका क्या बनेगा, उसका नाम, रूप, देश, काल यहाँ तक कि सम्बन्धों के विषयों में भी उसे उसकी सारी जन्मपत्री की प्रतीति होती है। इस प्रतीति द्वारा सजनों त्रिकालदर्शी की बुद्धि व स्मृति में काल ज्ञान व्याप्त रहता है और वह समय और परिस्थिति अनुसार उसका प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार जब उसे समय की पहचान अर्थात् स्थिति अथवा अवस्था की जानकारी यथार्थतया प्राप्त रहती है तो वह जीवन की हर परिस्थिति अर्थात् सुख-दुःख में यह विचार कर कि 'जब समय आएगा तब स्वयं ही सब कुछ ठीक हो जाएगा' , परम पुरुषार्थ करते हुए सदा एक अवस्था में समरस बना रहता है और समबुद्धि कहलाता है।

इसी बात को स्पष्ट करते हुए सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

समय बीत गया, समय आ रिहा,
समय दे मुताबिक समय आसी ओ आसी।
बातचीत इन्सानां नूं समझन विच तां ओ आसी, ओ आसी।।
समय मुताबिक समय अनुसार विचार शब्द जो पासी, ओ पासी।
जीवन उसने बना ही लिया, ओ रौशन नाम कहासी, ओ कहासी।।
समय अनुसार है सम सन्तोष, धैर्य दा सिंगार है ओ साथी, ओ साथी।
आद अन्त ओही जोत प्रकाशे, प्रकाश रही दिन राती ओ राती।।
समय वसीला समय ओ रसीला, समय दयालु दे राहवे ओ साथ।
सर्गुण है ओ सेवक स्वामी, निर्गुण जोत दा है प्रकाश ओ प्रकाश।।

समबुद्धि होने के ही कारण सजनों वह सर्वज्ञ परमेश्वर सम शक्ति, गुण व ज्ञान को रखने वाला, सहजता से इस मायावी सृष्टि रूपी ईश्वर के विराट् रूप का साक्षात्कार कर, प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत के नियामक धर्म और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि को जान, एक तत्वज्ञानी की तरह, इस जगत में निष्पाप विचरते हुए व सबका कल्याण निष्कामता से करते हुए, सही अर्थों में परोपकारी कहलाता है। इस अतुलनीय अवस्था में सजनों स्वाभाविक ही सृष्टि यानि प्राणी मात्र की रक्षा का भाव उसके स्वभाव के अंतर्गत हो जाता है और वह समभावी, काल धर्म अपना कर कभी भी अपने व किसी के विनाश का कारण नहीं बनता। यही कारण है सजनों उस अजर-अमर धर्मा को कभी भी काल का ग्रास नहीं बनना पड़ता यानि वह सदा मौत के भय से निर्भय रहता है। इस तरह सजनों सजनता से भरपूर जिस जीव का जीवन व लोक कल्याणार्थ परम पुरुषार्थ साथ-साथ चलता है, उसका मन संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त रहता है और वह अकर्त्ता भाव से सब कुछ करने वाला निष्कामी व परोपकारी कालातीत हो जाता है और जीवन का परम पुरुषार्थ सिद्ध कर लेता है।

इस संदर्भ में सजनों अगर हम चाहते हैं कि काल हमें न चलाए और न ही हम किसी कारणवश काल के ग्रास बनें तो उसके लिए हमें आत्मज्ञानी बन व समभाव-समदृष्टि के सबक़ को आत्मसात् कर त्रिकालदर्शी बनना होगा। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि त्रिकालदर्शी स्थिति में रह जो भी निर्णय लिया जाता है वह हमेशा कल्याणकारी होता है। कहने का आशय यह है कि अगर हम भी परोपकारी बन परमात्मा नाम कहलाना चाहते हैं तो हमें त्रिकालदर्शी के अर्थ को मात्र जानना ही नहीं होगा अपितु दिलचस्पी में आ, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित त्रिकालदर्शी बनने की युक्ति को भी पढ़-समझ कर अपनाना होगा।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन परमेश्वर, महाबीर जी की आज्ञा अनुसार स्पष्टतः सब सजनों को यह विचार समझा रहे हैं कि 'स्वभावों में स्थिर होना है। खोट न राहवे इस बदन में, ख़ालिस सोना होना है। तब ही हम जोत के साथ मेल खा सकते हैं। जोत के साथ मेल खाकर अनादि होना है, फिर

धीरे-धीरे त्रिकालदर्शी होना है। स्वभावों में स्थिर रहकर महाराज जी की गोद में रहना है, फिर इसी ध्यान के साथ प्रभु को पाना है, फिर उसी ध्यान में जुड़े रहना है। फिर सर्गुण में परिपक्क रहना है यानि फर्ज अदा को सच्चाई धर्म से निभाना है। किसी के घेरे में इन्सानों तुसां नहीं आना और फिर तुसां त्रिकालदर्शी बनना है।

इसी संदर्भ में आगे कहा गया है कि तीन प्रकार के इन्सान होते हैं, एक उत्तम, दूसरा मध्यम, तीसरा मन्द अधम। जो मन्द अधम होता है वह तो सुकर्म करता ही नहीं, जो मध्यम होता है वह सुकर्म तो पकड़ लेता है मगर कष्ट-कलेश तथा दु:ख आने पर छोड़ देता है। उत्तम वह है जो कष्ट-कलेश दु:ख-सुख में स्थिर रहता है और सुकर्मों को वह नहीं छोड़ता यानि सच्चाई धर्म में स्थिर रहता है, अपने फर्ज अदा को सच्चाई धर्म से चलाता है। दुनियाँ वाले उस पर कितना ही घेरा क्यों न डालें, वह किसी के घेरे में नहीं आता। हर समय महाराज की गोद में अटल रहता है और हकूमत की कुर्सी पर हमेशा स्थिर रहता है। इस तरह स्थिर होकर थोड़े दिनों में जोत के साथ मेल खाकर तीनों कालों की पहचान करके त्रिकालदर्शी हो जाता है। यही नहीं वह सच का ही वर्त-वर्ताव करता है। सुकर्मों को धारण करके फिर वह किसी से नहीं डरता है, फिर वह किस के आगे हाथ जोड़े, किस के आगे मस्तक झुकाये। जो नाम है वही शब्द गुरु है तो फिर वह भेटां किस को चढ़ाये। इस तरह तुमने भी त्रिकालदर्शी बनना है। इस अर्थ को धारण करते हुये तुम त्रिकालदर्शी बन सकते हो इसलिये तुम्हें भी चाहिये कि इस दुनियां में रहकर धर्म सच्चाई पकड़ो, यश लो अपयश न लो। समदृष्टि रखो, सर्व राम रूप समझो, यश की जीत अपयश की हार, तो सजनों इन अर्थों को धारण करके त्रिकालदर्शी बनो। यश कमावो - यश कमावो।'

इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों हमें सर्गुण के खेल खेलते हुए भी यानि अपना फ़र्ज अदा ठीक से निभाते हुए भी परस्पर एक दूसरे के सजन बन, एकता में आना होगा और निर्गुण के खेल खेलते हुए एकान्तवासी यानि फुरनों से आज़ाद बने रहने का स्वभाव अपनाना होगा। जानो एकान्त, एक अवस्था अर्थात् मन, बुद्धि की एकाग्रता में बने रहने का प्रतीक है जहाँ आत्मा का योग परमात्मा संग बना रहता है और एक ख़्याल, एक

दृष्टि हो एक दर्शन में स्थित रह, इंसान एकरूप हो इस जगत में सब कुछ करता है। इस तरह वह परमपिता परमेश्वर का ज्ञान व गुण धारण कर शक्तिशाली होकर उन्हीं के निमित्त निःस्वार्थता से एक तपस्वी व त्यागी की तरह सेवा भाव से सब कुछ करता है और बदले में कभी किसी से मान-सम्मान या कुछ और प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं करता। जानो कि ऐसे निष्काम परोपकारी सेवक पर ही प्रभु प्रसन्न होते हैं और उसे अपना सब कुछ दे इस तरह भरपूर कर देते हैं कि फिर वह जगत में जरूरतमंदों को जितना भी बाँटता है उतना ही उसका खजाना भरता जाता है। इस तरह वह अनुरागी व सत्-वादी, आत्मबोध रखने वाला सब दे दिलां दियां जानन वाला बन त्रिकालदर्शी नाम कहाता है।

सजनों आपको भी ऐसा ही निष्कामी व परोपकारी बन त्रिकालदर्शी बनना है। सब की जानकारी हेतु त्रिकालदर्शी के विषय में इससे आगे बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे।

दिनाँक 19 अगस्त 2018 का सबक़

प्रकाश (त्रिकालदर्शी-2)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने जाना कि त्रिकालदर्शी बनने या त्रिकालदर्शी की समीपता प्राप्त करने के लिए हमें अनथक परिश्रम करते हुए जाग्रति में आना होगा ताकि हमारा हृदय सदा आद्-जुगाद-प्रमाद के सत्य से एकरस प्रकाशित रहे और यह फुरने की सृष्टि अपने मायावी प्रभाव से, हमारे ध्यान को अस्थिर कर, ख़्याल को इधर-उधर भटका, अपने यथार्थ स्वरूप की विस्मृति करा व अपने में उलझा मिथ्यावादी न बना दे। सजनों जानो कि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम सत्य रूपी दिव्य अस्त्र धार इस ब्रह्मांडीय मायावी शक्ति के प्रहार से रक्षित रह सकते हैं क्योंकि उस दिव्य दृष्टि पर माया या मायाजनित हर वस्तु का प्रभाव निष्फल हो जाता है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

जेहड़ा सच वर्ते सच वर्त वर्तावे, ओ मेल महाराज जी नाल खाता है।
तिनां कालां दी पहचान ओ करके, त्रिकालदर्शी हो जाता है, त्रिकालदर्शी हो जाता है।।

उपरोक्त पंक्तियों द्वारा सजनों यह स्पष्ट हो जाता है कि सत्य को धारण करने वाला सत्य का पारखी ही व उसको आचरण द्वारा व्यवहार में लाने वाला सत्यवादी ही त्रिकालदर्शी हो सकता है। इसके विपरीत सत्य आचरण के विरुद्ध आचार-विचार व व्यवहार अपनाने व दर्शाने वाला चाहे अपने आप को कितना ही बड़ा ज्योतिषी या कालज्ञ क्यों न मान ले वह त्रिकालदर्शी नहीं हो सकता। वर्तमान युग में ऐसे ही बढ़ते हुए मिथ्याचारी सजनों की संख्या को दृष्टिगत रखते हुए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें सावधान कर रहा है कि:-

कलुकाल विच ज्योतिषी बन बैठे, ज्योतिषी बन बैठे भिखारी।
त्रिकालदर्शी है ज्योतिषियां दा ज्योतिषी अजकल दे ज्योतिषी।
समय अनुसार बात दे न सकन ओ सारी, बात दे न सकन ओ सारी।।
पढ़ गये ज्योतिषी गुढ़न दी जाच न आवे, इन्सान बैठे ने हिम्मत हारी।
तिन कालां दी बात किस तरह बतावन, किस तरह बतावन ओ सारी,
किस तरह बतावन ओ सारी।।

नि:संदेह इन पंक्तियों के माध्यम से सतवस्तु का ग्रन्थ हमें आजकल के ज्योतिषियों के दुष्प्रभाव से बचे रहने का निर्देश दे रहा है। साथ ही वह ज्योतिषियों के ज्योतिषी, त्रिकालदर्शी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण शरण में निष्काम भाव से बने रह, उनका हर वचन पालने के प्रति सदा तत्पर रहने का सुझाव दे रहा है। इस हेतु वह आत्मज्ञानी बनने का पराक्रम दिखा, सजनता का प्रतीक बनने के प्रति कुछ इस प्रकार प्रेरित कर रहा है:-

संत साध पण्डित ज्योतिषी, जेहड़ा तिनां कालां नूं लवे पहचान।
उसे नूं ज्योतिषी मान, उसे नूं ज्योतिषी मान।।
इन्सान होके न होवो नादान, त्रिकालदर्शी दी करो पहचान।
ओहदे निकट होवो इन्सान, उसे नूं ज्योतिषी मान, उसे नूं ज्योतिषी मान।।

पढ़ तो गये कई विरले इन्सान, जो तिनां कालां नूं लवे पहचान।
ओहदे निकट जावो इन्सान, उसे नूं ज्योतिषी मान।।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें असली ज्योतिषी की परख करने के प्रति ही नहीं अपितु वह तो हमें वर्तमान युग में अपने आप को सर्वज्ञ भगवान कहलवाने वाले शारीरिक गुरुओं के चंगुल में फँसने से भी बचाने हेतु स्पष्टतः कह रहा है कि:-

'जिस प्रकार आप साजन शब्द से परत गये हैं उसी प्रकार अब शरीरों के ध्यान से भी परत जावें

क्योंकि

जो शरीर दा ध्यान लगावेगा,
ओ जन्म मरन दे चक्कर दे विच राहवेगा।

इलाही सूरत महाराज जी दी, जेहड़ा ओ दर्शन पावेगा।
ओ त्रिकालदर्शी कहावेगा, ओ त्रिकालदर्शी कहावेगा सजन।।

इसलिए तो वह कह रहा है कि

जो नाम वही ध्यान में जब लग्न लग जायेगी तो फिर आप ज्योति में जोत हो सकते हैं। त्रिकालदर्शी भी हो सकते हैं और अलौकिक छवि के दर्शन भी पा सकेंगे।

अर्थात्

जेहड़े सजन कोलूं नाम ते ध्यान और भक्ति शक्ति होसी।
फिर तिनां कालां दी उस सजन नूं सजनों किवें न पहचान होसी।।

इस प्रकार सजनों समय की चाल को समझते हुए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें बार-बार कलुकाल के इस अंतिम चरण में परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए आत्मविश्वासी

बनने का और सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से एकरस बने रहने का पुरुषार्थ दिखाने के लिए प्रेरित कर रहा है ताकि निश्चित समय में ही हम समभाव-समदृष्टि की युक्ति को आत्मसात् कर अपनी भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर कर सकें और अपने जीवन का परम प्रयोजन सिद्ध कर त्रिकालदर्शी नाम कहा सकें। सजनों यह समय के साथ चलने की बात है जैसा कि कहा भी गया है कि गुजरा समय फिर हाथ नहीं आता। अतः समय रहते ही उचित पुरुषार्थ दर्शाओ।

याद रखो सजनों यह कोई कठिन कार्य नहीं है। अतः यह सोचकर मत बैठे रहो अपितु इसे सरल जान कर करने में जुट जाओ। जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार हर युग में, युग पुरुषों ने आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर त्रिकालदर्शी नाम कहाया, तभी तो कहा गयाः-

हनुमान जी तिन काल पहचाने, तिन काल श्री रामचन्द्र जाने।
त्रिकालदर्शी होये कृष्ण मुरारी, दसपातशाह होये जगत हितकारी।
ओन्हां दा संग करो इन्सान, ओन्हां दा संग करो इन्सान।।
जैं पा लिया आत्मिक ज्ञान, त्रिकालदर्शी उसे नूं जान।
पारब्रह्म परमेश्वर ओही भगवान, सजनों उसे दा लावो ध्यान।।

इसी प्रकार सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जिसके अंतर्गत, जो गुजर गई जो इस वक्त और जो आने वाली तीनों कालों की बात का यथातथ्य उल्लेख है, अपने आप में सच्चेपातशाह जी के भी त्रिकालदर्शी होने का साक्षात् प्रमाण है। इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

साजन जी परमधाम में रैहंदे हिन,
शक्तिवान दा बेटा ओ त्रिकालदर्शी नाम कहावे।
त्रिकालदर्शी परमधाम दा नज़ारा ओ पावे,
बिन सूरजों प्रकाश हर अन्दर सुहावे।
है ओ ताकतवर, ताकतवर नाम कहावे।।

अतः सजनों इन युग पुरुषों के जीवनकाल से प्रेरणा ले हमने भी इस हेतु फुरने की सृष्टि से आज़ाद होकर यानि अहं भाव त्याग व परमार्थ के रास्ते पर दृढ़ता से स्थिर बने रहते हुए, नम्रता से प्रभु चरणों में सीस अर्पण करते हुए सच्चे दिल से प्रार्थना करनी है,..... क्या?

तिन काल असां लऊं पहचान।
ओ जेहड़ी गुज़र गई, जेहड़ी इस वक्त, जेहड़ी आने वाली,
बात लऊं असां जान भगवान, भगवान।
बक्ष लवो मेरे बक्षण हारे, बक्षंद है तुहाडा नाम, भगवान, भगवान।।

इस प्रकार ईश्वर से बल, बुद्धि प्राप्त कर अपने वास्तविक ज्योति स्वरूप को पहचानना है। जानो फिर उस पहचान को धारण कर उस रूहानी व नूरानी स्वरूप में ख़्याल ध्यान स्थिर रखते हुए अर्थात् एकाग्रचित्तता से जो एक होकर मन मन्दिर में व्याप्त है वह महान अनेक होकर जगत जहान में कैसे प्रकाशित तथा शोभायमान है, उस सत्य को जानना है तथा फिर उस पर अटलता से बने रह इस यथार्थ को स्वीकार 'विचार ईश्वर है अपना आप' के ऐक्य भाव पर खड़े हो जाना है। इस अनुपम अवस्था में एकरस बने रहने हेतु समभाव-समदृष्टि का सबक़ आत्मसात् कर, जगत में विचरते समय ठीक वैसी ही रीति-नीति अनुसार, आचार-व्यवहार अपना कर समबुद्धि होने का परिचय देना है। ऐसा सुनिश्चित करने पर जैसे ही आपका ख़्याल ध्यान स्थिर हो हृदयगत प्रकाशमय वातावरण में रम जाएगा तो अक्षर चलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी अपितु वह तो स्वयंमेव अजपा चलने लगेगा। परिणामस्वरूप स्वतः ही निर्वाण की प्राप्ति होगी और समय आपका साथी बन जाएगा। समय जब साथी बन गया तो जीवन में न कभी अच्छा समय आएगा न बुरा अपितु सब समरस चलेगा और आनन्द की अनुभूति होगी। ऐसा अद्भुत होने पर आप आद् से लेकर अंत तक अर्थात् जो सृष्टि में हो चुका है, हो रहा है व आगे होने वाला है ठीक वैसा ही आवश्यकता अनुसार जान भी सकोगे और सारे ब्रह्मांड के समक्ष उसका बखान भी कर सकोगे यानि सारे किवाड़ खुल जाएंगे और आप परोपकारी प्रवृत्ति में ढल जाओगे। जैसा कि कहा भी गया है:-

जिन चरणों में फुरने दी सृष्टि झुके,
झुके तां अपना आप लवे पहचान जिऊ।
त्रिकालदर्शी ओ हो गया, ओहदी जोत जगे निर्वाण जिऊ।।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सोचों में मत बैठे रहो अपितु अपने मन को शांत करो। याद रखो सोचों में वही जाता है जो मनुराज के पंजे में फँसकर अंधकार में चला जाता है। इसके विपरीत जो हिम्मत दिखाता है वह प्रकाश में रम जाता है। अतः हिम्मत लड़ाओ, हिम्मत लड़ाओ, हिम्मत लड़ाओ और विचार में आ आत्मिक ज्ञान प्राप्ति में जुट जाओ क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

हिम्मत है जे जैंदे पास, हिम्मत है जे ओ अपना आप प्रकाश।
ओ प्रकाश दिखाई ओ जावो, त्रिकालदर्शी नाम कहाई ओ जावो।।

इस हेतु याद रखो .....क्या.?

कोई विरला गोता लावे - कोई विरला,
हीरे दी सार ओ पावे - कोई विरला।
हीरे नाल हीरा हो जावे - कोई विरला,
त्रिकालदर्शी हो जावे - कोई विरला।।

इसी विरले हिम्मतवान के बारे में कहा गया है.....

परमधाम प्रकाशे ओही, परमधाम प्रकाशे ओही।
सर्व सर्व प्रकाश रिहा, त्रिकालदर्शी नाम कहावे सोई।।

याद रखो सजनों आप सब ऐसा करने में सक्षम हो। आवश्यकता केवल पुरुषार्थ दिखाकर ऐक्य भाव में आने की है।

अंत में इसी सर्वोच्च उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों परमेश्वर संस्था को कह रहे हैं:-

ये देखो जी परमधाम है, परमधाम दे नज़ारे नूं पाइये।
सर्व व्यापी नाम कहाइये, त्रिकालदर्शी नाम कहाइये।
आद अन्त प्रकाश रहा हूं, प्रकाश नाम कहाइये।।

अतः हम सबके लिए बनता है कि कलुकाल से छुटकारा पा सतवस्तु में आने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्तियों की विधिवत् पालना करते हुए किसी प्रकार से भी इस फुरने की सृष्टि के साथ नाता न जोड़ें। इस प्रकार जगत से आज़ाद रह सदा अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित रहें और अपने असली प्रकाश नूं पा प्रकाश नाल प्रकाश हो जाएँ और त्रिकालदर्शी हो ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाएं।

सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह सजनों अब तक हमने प्रकाश के विषय में जो भी पढ़ा समझा है उस पर अभ्यास करेंगे। तब तक अपने ख़्याल को प्रकाश में रखने की आदत डालो ताकि आत्मज्ञान प्राप्त कर सको। याद रखो यदि इसके विपरीत आपके ख़्याल ने शरीर के साथ अपना सम्बन्ध बना लिया तो सारा काम खराब हो जाएगा और आप निकृष्टता को प्राप्त हो जाओगे। कहने का आशय यह है कि शरीर के प्रति सचेत अवश्य रहो यानि अपने आहार व विचार को सात्विक रखते हुए शरीर के साथ-साथ अपनी मानसिकता को भी अवश्य ही स्वस्थ रखो परन्तु इनसे नाता मत जोड़ो। याद रखो यदि मात्र इतनी सी सावधानी ले ली तो आपका निरंकुश ख़्याल सध जाएगा और सहजता से शरीर की बजाय आत्मा में जो है परमात्मा उस संग जा जुड़ेगा। इस तरह परमार्थ अर्जना सहज हो जाएगी और जीवन बनाना कोई दुष्कर कार्य नहीं रहेगा। सजनों मात्र इतनी सी बात समझो और अपना जीवन सफल बनाओ।

दिनाँक 26 अगस्त 2018 का सबक़

प्रकाश

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ शरीरधारी जीव को अपने वास्तविक ज्योति स्वरूप को जान-पहचान व उसी में स्थिरता से स्थित बने रह, अपने ओज व तेज प्रताप का नीतिसंगत प्रयोग करते हुए, इस जगत में ब्रह्ममय होकर, अशरीरी भाव से संकल्प रहित सत्य पथ पर बने रह, पुनः धर्म का झंडा बुलंद करने का आवाहन इस प्रकार दे रहा हैः-

हे इन्सान ! अपने इस यथार्थ को सहर्ष स्वीकार कि 'मैं' नश्वर शरीर नहीं वरन् 'ओ३म् अमर आत्मा' हूँ। जान कि ओ३म् परब्रह्मवाचक शब्द है जिसको ग्रहण करने से इन्सान के हृदय में इस जगत का रचनाकार ब्रह्म स्वतः प्रकाशित हो जाता है और शब्द ब्रह्म विचार प्राप्त रहने पर वह सहजता से अपने ज्योति स्वरूप को पहचान लेता है। ऐसा सकारात्मक घटित होते ही इन्सान ब्रह्म भाव अपना जगत में अधम अवस्था को प्राप्त हुए अज्ञानियों को आत्मबोध करवाने हेतु ब्रह्म के ही गुण/धर्म यानि ब्रह्म शब्द

विचारों का निष्काम भाव से प्रसार करने में प्रवृत्त हो जाता है और परोपकारी नाम कहाता है। सजनों जो अपना असलियत स्वरूप ब्रह्म जान जाता है जानो उस प्रतापी इन्सान की चेत पर परमेश्वर द्वारा रचित यह जगतीय माया का भी आकर्षण किसी प्रकार से प्रभाव डाल उसके ख़्याल को अपने साथ नहीं जोड़ सकता। इस प्रकार उस विवेकशील ब्रह्म भाव पर स्थित इंसान को शारीरिक अहं नहीं सताता। परिणामतः उस परमार्थी के लिए सुकर्मों के रास्ते पर निषंग बने रह निर्विकारतापूर्ण जीवन जीते हुए श्रेष्ठ परम पद को प्राप्त करना सहज हो जाता है।

सजनों यह जानने के पश्चात् हम भ्रमित बुद्धि इन्सानों के लिए भी बनता है कि पुनः सुमति में आने हेतु, हम 'ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा' इस सत्य को धारण कर एक विवेकशील बुद्धिमान इन्सान की तरह भ्रमरहित यथार्थतापूर्ण जीवन जीना आरम्भ करें। याद रखो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हमारी चित्त वृत्तियाँ निर्मल होंगी और मनःशांति के प्रभाव से हमारा ख़्याल ध्यान स्थिरता से परमात्मा संग जुड़ा रह स्वच्छता को प्राप्त रहेगा। इसी तरह हमारी जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन बनी रहेगी और हमारे कर्मों में सकारात्मकता व निष्कामता पनपेगी जो अपने आप में कर्म गति से बचे रहने का सूचक होगा। सजनों हम सब प्रकाशित बुद्धि हो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में व एक श्रेष्ठ इंसान की तरह इस जगत में विचरने के योग्य हो जाएँ इस हेतु आओ अब भरपूर उत्साह व उमंग में आकर शांत मन से ब्रह्म भाव को धारण करने हेतु अत्यन्त समझदारी के साथ अभ्यास करते हैं:-

मानो मैं ब्रह्म हूँ

और परब्रह्मवाचक शब्द ओ३म् मेरी अमर आत्मा है।

इसलिए स्वीकारो कि मेरी अमर आत्मा में परमात्मा समाहित है।

अब इस सत्य का अनुभव करते हुए

मानो कि यही असलियत ब्रह्म स्वरूप प्रकाश ही

मेरा अपना प्रकाश है।

अब ख़्याल द्वारा एकरस मूलमंत्र आद् अक्षर का जाप आरम्भ कर दो।

और अनुभव करो कि इस क्रिया द्वारा ज्यों-ज्यों आत्मप्रकाश से आपका हृदय प्रकाशित हो रहा है

वैसे-वैसे अंधकारमय वातावरण छँट रहा है और सत्य प्रकट हो रहा है।

अब अत्यन्त समझदारी से जो लुप्त हो रहा है उसे छोड़ते जाओ और

जो प्रकट हो रहा है उसे धारते जाओ।

अब यह आत्मनिरीक्षण करते हुए अक्षर को एक रस चलाने में प्रयासरत रहो

कि कहीं कोई सांसारिक फुरना, अक्षर के एकरस चलने में विघ्न तो नहीं डाल रहा।

अगर कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा हो तो अक्षर चलाने की क्रिया पर ध्यान का पहरा रखो

और अफुरता से अक्षर चलाना सुनिश्चित कर अपने हृदय को परिपूर्णता प्रकाशित कर

व अपनी सुरत को शब्द संग जोड़े रख आत्मबोध करने की चेष्टा करो

याद रखो इतनी सी सावधानी व मेहनत से जो सत्य रूपी अमृतत्व प्राप्त होता है

उसके सेवन से ही इन्सान के मन में परिपूर्ण तृप्ति का एहसास रहता है और

ए विध् जब वह शांत हो जाता है तो इन्सान के लिए आत्मभाव में बने रह

इस जगत में रहते हुए भी इस जगत से निर्लेप अपने वास्तविक परब्रह्म स्वरूप में यथा बने रहना सहज हो जाता है और वह जगत विजयी एक रूप हो कह उठता है

हम ब्रह्म प्रकाश

हम

हम ब्रह्म प्रकाश

हां

हम हर अन्दर निवास

हम

हम हर अन्दर निवास

हां

हम हर अन्दर प्रवेश

हम

हम हर अन्दर प्रवेश

हां

हम हर अन्दर विशेष

हम

हम हर अन्दर विशेष

हां

हम ब्रह्म हम

हम ब्रह्म हां

यह है अपने घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाना।

जानो इस क्रिया द्वारा आत्मप्रकाश के तेज से सब विकार ध्वस्त हो जाते हैं और इस प्रकार इन्सान के लिए एक तो विकारों पर विजय पा आत्मीयता का चलन अपनाना सहज हो जाता है, दूसरा पूर्व जन्मों के संस्कारों के प्रभाव से भी मुक्ति मिलती है। इस तरह निश्चिन्तता व सर्वसम्पन्नता के भाव से प्रकाशित बुद्धि इन्सान चेतन अवस्था में बने रह व सब कुछ प्रभु के निमित्त समर्पित भाव से करते हुए अपना जीवन सफल बना लेता है और परम पवित्र चरित्र वाला कहलाता है।

अतः हमें समझना है कि जैसे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अपना सच्चेपातशाह ने अपने हृदय से अज्ञान के बादल को हटा अपने निर्विकारी स्वरूप को प्रकट कर लिया और फिर यथा उसी स्वरूप में बने रह हम कलुकालवासियों को कुरस्ता छोड़ रास्ते पर लाने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की रचना कर दी वैसे ही हमें भी सर्व महान बन एक रूप हो जाना है।

दिनाँक 2 सितम्बर 2018 का सबक़

वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

जैसा कि सजनों सर्वविदित ही है कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब मात्र है। इसी बात को सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस प्रकार कहा गया है 'सुरत है अन्दर का ख़्याल, अपना प्रतिबिम्ब'। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों सुरत के लिए आवश्यक होता है कि वह अपनी आत्म अवस्था में यथा बने रहने के लिए ईश्वर को ध्यान में ला अपने वास्तविक स्वरूप को समझें व 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव को अपनाकर, सदा ईश्वर की कृपादृष्टि प्राप्त कर, उन सम बने रहने के योग्य बनी रहे।

ऐसा सुनिश्चित करना सजनों इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यदि ईश्वर के प्रति ध्यान अस्थिरता के कारण ईश्वर ख़्याल से उतर जाता है तो यह सुरत के आत्मविस्मृत यानि अपने वास्तविक स्वरूप, ज्ञान, गुण व शक्ति को भूल असंतोष को प्राप्त होने की बात होती है। इसके विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में इस प्रकार कहा गया हैः-

असली स्वरूप नूं भुलया मन कई जूनां विच भटकावे।

बुद्धि होई ए करूर तेरी, कई वेरी जम्मे ते मरदा राहवे।।

जीव की सुरत की इस दुर्भाग्यपूर्ण अचेतन अवस्था में छवि बिगड़ने लगती है अर्थात् कंचनता के स्थान पर उसका रूप, रंग आदि खराब होने लगता है और रेखा तंग करने लगती है। जीव की इस दयनीय स्थिति को देखकर परमेश्वर उसको कहते हैं:-

अपना आप तूं भुल गइयें, जग विच आके तूं रुल गइयें।

ऐसा होने पर सजनों इंसान शरीरस्थ पाँच तत्व, जीव के ऊपर हावी हो जाते हैं। जैसा कि कहा भी गया है:-

पंजां तत्तां घबराया, जीव होया कमज़ोर।
असली धन डाकू लुट चले, साडे पकड़ो महाबीर चोर।।

इस तरह सजनों जीव के कमजोर हो जाने पर मन चंचल हो विकारग्रस्त हो जाता है, बुद्धि जड़ता को प्राप्त हो जाती है और इंसान अपनी सुध-बुद्ध खो जगत के मायावी भ्रम जाल में फँस जाता है। नतीजा उसका ध्यान अस्थिर हो जाता है और मन में संकल्प-विकल्प की तरंगे जब उठती हैं तो वह सत्य को परख नहीं पाता। परिणामतः उसका आत्मविश्वास टूटता है व स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इस अवस्था में चित्त में विस्मय का भाव उत्पन्न हो जाता है और इंसान संदेही व शक्की मिज़ाज हो मिथ्या अभिमान अपना बैठता है। उसके चित्त की प्रसन्नता लुप्त हो जाती है और मन के अंदर ऐसा विस्फोट होता है जिसके प्रभाव से उसके लिए हर परिस्थिति में अपने स्वभावों को सम रखना मुश्किल हो जाता है। परिणामस्वरूप उसके स्वभावों का टैम्प्रेचर घटना बढ़ना शुरू हो जाता है और उसको इस दुःखद परिस्थिति से उबरने के लिए कोई उपाय नहीं सूझता। इसी कारण वह सत्य धर्म पर स्थिर नहीं रह पाता और उसका ख़्याल सदा नकारात्मकता को प्राप्त रहता है यानि वह सब कुछ नकारा ही सोचता है, बोलता है व करता है। इस परिस्थिति के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

भजन बन्दगी इन्सान भुल के ते भुल गये स्वरूप हमारा।
सच्चाई धर्म दे दो मन्त्र भुल गए न डिट्ठा प्रतिबिम्ब दा नजारा।।

स्पष्ट है सजनों किसी भी कारण सुरत की कंचनता का भंग होना हम विवेकशील इंसानों के लिए सबसे बड़ी अपमानजनक बात होती है जिसके दंड रूप में ही हमें नाना प्रकार के दुःख भोगते हुए आवागमन में भटकना पड़ता है। परन्तु इस संदर्भ में सजनों हम सजन तो अत्यन्त भाग्यशाली हैं क्योंकि हम अपनी यथार्थता से भटकी हुई सुरतों पर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी मेहरबान हैं और हमारे जगत में इधर-उधर भटके हुए व उलझे हुए ख़्याल को ध्यान स्थिरता द्वारा परमेश्वर संग जोड़ पुनः अपनी वास्तविक अवस्था को प्राप्त करने की सहज व सरल युक्ति बता रहे हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हम उनके प्रति असीम श्रद्धा व विश्वास रखते हुए उनकी चरण-शरण में बने रह, उनकी हर बात को आदर दें और अपने जीवन का बिगड़ता खेल संवार लें क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी कह रहा हैः-

ए पुरानी यादाशत है, दुनियां दे फन्दे विच आके अपनी यादाश्त न भुलावीं तूं।
तूं ईश्वर नाल प्रेम बढ़ा के, श्री राम नाम दी माला हृदय विच चलांदा राहवीं तूं।।
उस ईश्वर नूं याद कर लै उस दे चरणां नूं तूं फड़ लै, उस चरणां नूं भुल न जावीं तूं।
कर्मानुसार चौरासी भुगत के आया, वक्त है सम्भल जा फिर न पछोतांवी तूं।।

सजनों परमेश्वर के वचनानुसार हम भी वक्त रहते संभल जाएँ और समय बीत जाने के पश्चात् हमें पछताना न पड़े इस हेतु हमें तत्क्षण सावधान होना होगा और सर्वप्रथम अपनी कमजोरियों को दूर कर अपनी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणे को निर्मल बनाना होगा।

जानो सजनों चित्त की विविध् अवस्थाएँ होती है और इन अवस्थाओं को ही वृत्तियाँ कहते हैं। याद रखो चित्त की वृत्तियों द्वारा हम स्थूलता की ओर जाते हैं अर्थात बहिर्मुख होते हैं जबकि आत्मस्वरूप का बोध करने हेतु हमें स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर जाना होता है अर्थात् बाहर से अन्तर्मुख होना होता है। इस संदर्भ में सजनों जानो कि जब

शरीरधारी जीव अपना प्रयोजन सिद्ध करने हेतु जगत में मानव रूप धर कर आता है तो उसको अनेकानेक प्रकार के स्वभाव वालों के घेरे में रहते हुए उसका विधिवत् कार्य कैसे सिद्ध हो सकता है उसके लिए एक निश्चित आचरण/स्वभाव का चयन करना होता है। यही चयन की हुई वृत्ति ही उसकी जीवन कथा व चरित्र के रूप का आधार होती है क्योंकि इसी गोपनीय वृत्ति में उस द्वारा अपने कार्य की सिद्धि हेतु अपनाए जाने वाले मूल सिद्धान्त, प्रतिक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान अर्थात् फार्मूला/अर्थ निहित होता है। इसलिए कहते हैं कि वृत्ति अत्यन्त संक्षिप्त होती है और उचित पालना के अभाव के कारण 'हौं-मैं' में उलझा हुआ इंसान जब उसके अस्तित्व की यथार्थता समझ नहीं पाता तो भ्रमित हो उसके वास्तविक अर्थ को स्मृति में नहीं ले पाता और तद्नुरूप ही उसे कार्यरूप देने के लिए स्वभाव के अंतर्गत करने की भूल कर बैठता है। इस प्रकार उसके लिए शास्त्र द्वारा अनुमोदित विधान/पद्धति पर स्थिर बने रह अपने जीवन का प्रयोजन सिद्ध करना कठिन हो जाता है फलतः वह अपना जीवन वृत्तांत बिगाड़ बैठता है। इन्सान की इसी हालत को देखकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

जो पैदा हुआ इन्सान सजनों हां हां हां हां, ओ ईश्वर नूं क्यों भुला बैठा।
माता पिता दा संग हुआ तां अपना जीवन ओ गँवा बैठा।।
माता पिता दा संग हुआ, हां हां हां हां, फिर परिवार क्यों संगी बना बैठा।
छड मित्रताई उस ईश्वर दी, इन्सान जीवन अपना ओ भुला बैठा।।

स्पष्ट है सजनों वृत्ति की निर्मलता भंग होने पर इंसान का ख़्याल परमात्मा में ध्यान स्थिर नहीं रह पाता और आत्मविस्मृति के कारण समभाव उसकी नज़रों से छूट जाता है और वह परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने के स्थान पर द्वि-द्वेष अपना बैठता है जिसका अर्थ होता है उस विवेकहीन इंसान द्वारा परमार्थ का रास्ता छोड़ स्वार्थ का रास्ता अपनाना। इसलिए वह वर्तमान में प्रसन्नता का अनुभव करते हुए जीने के स्थान पर बीते हुए जीवन की घटनाओं, चरित्र आदि का बार-बार चिंतन करते हुए दुःखों को प्राप्त होता है। कहने का अर्थ है कि वह अपनी कलुषित मलीन वृत्ति के अनुसार ही

सोचता है, बोलता है व सब कुछ करते हुए उसी में ही लीन रहता है और वृत्तहीन हो चरित्रहीन कहलाता है।

इसके विपरीत सजनों निर्मल वृत्ति वाला वृत्तवान् इंसान, अपने ज्ञान स्वरूप में स्थित रहते हुए, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए शास्त्र विहित् कर्म करता है और अच्छा आचरण करने वाला सदाचारी इंसान कहलाता है। इस तरह वह ऊँचे स्तर पर मानसिक प्रयत्न करने वाला उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो, परम पुरुषार्थ की सिद्धि कर लेता है। स्पष्ट है सजनों केवल निर्मल वृत्ति ही अपने जीवन का प्रयोजन सिद्ध कर परमार्थी धन प्राप्त कर संतोष का भाव अपना सकता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों इस संसार के पालन कर्त्ता यानि सर्व श्रेष्ठ वृत्ति सुमतिवान दाता के सम बन, जगत का उद्धार करने हेतु आत्मवृत्ति अपनाओ और इस प्रकार अंधकारमय दानवीय वृत्तियाँ अपनाने से बचे रह, प्रकाशमय अवस्था को प्राप्त हो अपना जीवन बनाओ।

सजनों हम सब ऐसा करने में कामयाब हो सकें इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हम सजनों के लिए दो वृत्तियाँ बताई हैं। एङ्ग बैहरुनी वृत्ति और दूसरी अन्दरुनी वृत्ति। बैहरुनी-वृत्ति से तात्पर्य अपने शरीर, परिधान (वस्त्र), खुराक, आसपास के वातावरण व व्यवहार यानि रैहनी-बैहनी की स्वच्छता/निर्मलता बनाए रखते हुए अपने गृहस्थ आश्रम को ठीक चलाने से है। अतः इस हेतुः-

1. अपने रिहायशी मकान को साफ सुथरा रखो यानि हर एक चीज घर में तरीके से पड़ी हो और घर चमकता हुआ नज़र आए।

2. अपने शरीर रूपी मकान को साफ सुथरा रखो यानि अपनी हैसियत के अनुसार जो कपड़ा भी पहनो वह साफ सुथरा और उजला हो।

3. अपनी हैसियत के अनुसार खुराक खाओ ताकि सेहत ठीक रहे क्योंकि सेहत के

बिना हमारी भजन बंदगी नहीं हो सकती।

4. अपने बाल बच्चों को साफ-सुथरा रखो और उनको जी करके बुलाओ ताकि उनके संस्कार अच्छे हो जाएँ और वह भी इसी तरह से बोलें।

5. बच्चों के अन्दर यह बात बिठाओ कि हमारा रास्ता सच्चाई-धर्म का है और वह भी इसी रास्ते पर चलें। इस तरह वह सीधे रास्ते पर चलेंगे और कुरस्ते से बच जावेंगे।

6. बच्चों को प्यार से समझौता दो। मारो नहीं बल्कि कड़ी निगाह से समझाओ।

स्पष्ट है सजनों बैहरुनी वृत्ति की निर्मलता सुनिश्चित करने हेतु शरीर, मन व घर को साफ सुथरा रखते हुए व सात्विक आहार का सेवन सुनिश्चित करते हुए, कर्त्तव्यपरायणता से सबके प्रति अपने कर्त्तव्यों का समुचित तरीके से संपादन करते हुए, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलने का तरीका बताया गया है। सजनों जानों बैहरुनी वृत्ति में इन स्वभावों को धारण करते हुए और अपने गृहस्थ आश्रम को ठीक चलाते हुए हमने अन्दरुनी वृत्ति को पकड़ना है। यहाँ अन्दरुनी वृत्ति को पकड़ने से तात्पर्य अपने शारीरिक स्वभावों की सफाई हेतु अंतर्गत दोषों, भूलों आदि को ढूँढ निकाल अपनी सुरत को कंचन करने से है।

आओ अब इस विषय में जानते हैं कि अन्दरुनी वृत्ति की निर्मलता हमने कैसे बनाए रखनी है। इस हेतु सजनोंः-

1. पहले जिह्वा को स्वतन्त्र करना है अर्थात् उस द्वारा कटु शब्दों व अपशब्दों जैसे गाली-गलौच, निंदा चुगली आदि का प्रयोग न करके, सदैव जी-जी व सजनता सूचक मधुर शब्दों का उच्चारण करना है।

2. फिर यह याद रखते हुए कि 'हमारा और कोई भी कुसंगी नहीं है, संकल्प ही हमारा कुसंग है', अपने संकल्प यानि इरादे को स्वच्छ रखना है और उसको सजन और संगी बनाना है।

3. संकल्प को सजन और संगी बनाने हेतु 'जो मन मन्दिर, सो ही महाराज का रूप सारे जग अन्दर, जनचर-बनचर, जड़-चेतन एक ही रूप', इस सत्य को आत्मसात् करना है।

4. इस प्रकार संकल्प के स्वच्छ व पूर्ण रूप से सजन हो जाने पर घर भी सजन, परिवार भी सजन और कुल संसार भी सजन हो जाएगा। फिर हमारा झुखना बंद हो जाएगा। झुखने का अर्थ है रोना।

5. यही नहीं संकल्प के सजन हो जाने पर हमारी दृष्टि भी अपने आप ठीक हो जाएगी और इस तरह हमारा संतोष का सवाल हल हो जाएगा।

सजनों संतोष का सवाल जब हल हो गया तो अपनी सुरत को देखना है। सुरत क्या है और इसको कैसे देखना है, सजनों इस विषय में हम आगामी सप्ताह बात करेंगे ताकि हम बाकी के तीनों सवालों यथा धैर्य, सच्चाई, धर्म को हल कर सम अवस्था में बने रह सकें। तब तक अपनी बैहरुनी व अन्दरुनी वृत्ति की निर्मलता सुनिश्चित कर लेना।

दिनाँक 9 सितम्बर 2018 का सबक़

वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमें अन्दरुनी व बैहरुनी दोनों प्रकार की वृत्तियों की शुद्धि द्वारा अन्तःकरण/मानसिक, शारीरिक एवं व्यावहारिक शुद्धि एवं निर्मलता बनाए रखने के लिए कहा गया। इस संदर्भ में सजनों जानो कि अन्दरुनी वृत्ति की निर्मलता जहाँ हमें मानसिक रूप से स्वस्थ व स्वच्छ रखने के साथ-साथ, हमारे व्यक्तित्व व चरित्र को निखारती है तथा सज्जन व श्रेष्ठ पुरुष बनने में हमारी सहायक सिद्ध होती है वहीं बैहरुनी वृत्ति की शुद्धता हमें शारीरिक रूप से स्वस्थ व स्वच्छ बनाने के साथ-साथ हमारे आचरण व व्यवहार को उत्तम बनाकर हमें सुन्दर, स्पष्ट, मधुर व सदाचारी बनाती है। यद्यपि जीवनयापन हेतु दोनों प्रकार की वृत्तियों की शुद्धता परम आवश्यक है तथापि आत्मशुद्धि के निमित्त, शारीरिक पवित्रता से अधिक चित्त-वृत्तियों की पवित्रता तथा वासनादि के क्षय का महत्त्व है। ऐसा करने पर ही हम अपने व्यक्तित्व का पूर्ण रूपेण विकास कर प्रत्येक कार्य करने में दक्ष हो सकते हैं और आत्मविश्वासी व स्वावलंबी बन सकते हैं। इस संदर्भ में जानो अन्दरुनी वृत्ति की निर्मलता यानि आन्तरिक शुद्धि के लिए अपने अंतःकरण को स्वच्छ दर्पण सा पारदर्शी बनाना होगा।

इसके दर्पण होने की कल्पना तभी साकार होगी, जब उसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब पूर्ण रूप से स्पष्टतया दिखाई देने लगेगा। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजनों इस प्रतिबिम्ब के लिए सुरत शब्द का इस्तेमाल हुआ है, आओ आज जाने कि सुरत क्या है और इसको कैसे देखना है?

सुरत क्या है', इस विषय में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है, 'सुरत है अन्दर का ख्याल, अपना प्रतिबिम्ब'। यह सुरत स्त्री भाव में नज़र आती है। सुरत के दृष्टिगोचर होते ही अपने मन में उत्पन्न होने वाले विचार या प्रवृत्ति की स्वच्छता के प्रति परख करनी होती है ताकि किसी विध् भी ख़्याल के नकारात्मक हो जाने पर सुरत की कंचनता भंग न हो जाए। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही इंसान का हृदय आत्मप्रकाश से दीप्तिमान रहता है और इस वातावरण में ख़्याल इस तरह प्रभामय हो जाता है कि फिर किसी भी जगतीय वस्तु या बात या किसी क्रिया द्वारा होने वाला परिणाम उसके अंतःकरण को किसी ओर प्रवृत्त नहीं कर पाता। इस प्रकार जब इंसान मिथ्या जगत में विचरते हुए भी दृढ़ता व धीरता से कामनामुक्त अवस्था में स्थिर बने रहने की कला जान जाता है तो उसके लिए आत्मभाव अपनाना सहज हो जाता है और शब्द ब्रह्म विचार ही उसके परमार्थिक धन होते हैं जिनको धारण करने के उपरांत वह अमीरों का भी अमीर हो, जगदाता नाम कहाता है।

सजनों हम भी यही युक्ति अपना कर अमीरों के भी अमीर बनने में सफल हो पाएँ, आओ उसके लिए समझते हैं कि सुरत को कैसे देखना है? यह अति गंभीरता से विचारणीय बात है क्योंकि इस क्रिया द्वारा ही हम अपने ख़्याल पर ध्यान रख सकते हैं जिससे वह बिगड़ने या इधर उधर भटकने न पाए। इसी प्रकार हम अंतर्मुखी बने रह अपने मन को विषय विकारों यानि बुरी वासनाओं से और चित्त को दोषों से मुक्त रखते हुए, अंतःकरण में स्थित होकर प्रेरणा देने वाले अंतर्यामी के संग जुड़े रह सदा चैतन्य अवस्था को प्राप्त रह सकते हैं और अपनी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि समेत अपने स्वभावों को निर्मल रख सकते हैं।

जानो इस अवस्था में इंसान को शरीर की जड़ता और आत्मा की नित्य चेतन अवस्था का ज्ञान हो जाता है और उस चेतनायुक्त सुरत वाले के लिए सावधानी से जगत में

विचरते हुए, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिर बने रह परोपकारी नाम कहाना सहज हो जाता है। याद रखो सजनों चैतन्य अवस्था को प्राप्त होना परमात्मा का साक्षात्कार होने जैसी कल्याणकारी बात होती है क्योंकि रूप, रंग, रेखा रहित, ज्योति-स्वरूप, परब्रह्म परमेश्वर जब सुरत के समक्ष प्रत्यक्ष होते हैं तो जीवात्मा का आत्म ज्योति स्वरूप स्वतः ही साकार हो उठता है और उसका प्रतिबिंब होने के नाते जीव को यह ज्ञान हो जाता है अर्थात् यह प्रमाणित हो जाता है कि उसकी सुरत ही महाराज जी को देख रही है। ऐसा होने पर सहसा ही सुरत कह उठती हैः-

ज्योति स्वरूप है अपना आप हम तो हैं ओही प्रकाश।

फिर यह सत्य जब दृढ़ता से उसकी स्मृति में बैठ जाता है तो वह आनन्द विभोर हो हर्षा उठती है और परमपद प्राप्त करने हेतु महाराज जी के साथ बातें करती है व सर्गुण निर्गुण की खेलें खेलते हुए, उन को कई तरीकों से रिझाती है। ऐसा करते समय याद रखो शरीर का कोई सवाल नहीं होता यानि शरीर सुन्न होता है। इस प्रकार महाराज जी को देखते-देखते, उनसे बातें करते-करते जब सुरत रूपा स्त्री, अपने व शब्द की वास्तविकता से परिचित हो जाती है तो वह अटल सुहागिन की तरह त्रिलोकी के महाराजा यानि अपने पति परमेश्वर सम शोभायुक्त होने के लिए उनके श्रृंगार (ज्ञान, गुण व शक्ति) को देखती है यानि निहारती है और इसके प्रति जहाँ-जहाँ भी वह खुद को कमजोर पाती है उसमें अविलम्ब आवश्यक सुधार कर घाटा पूरा कर लेती है अर्थात् जो कमी पेशी होती है उसे पूरा कर हर प्रकार की हानि से बच जाती है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

'जैसे जैसे अपने स्वभावों को पकड़ते जावेंगे वैसे वैसे सुरत कंचन होती जावेगी।
तब आपका घाटा पूरा होगा और आप कामयाब हो सकेंगे।
वरना यत्न करने पर भी आप कामयाब नहीं हो सकेंगे।'

इस तरह अपने स्वभावों पर फ़तह पाने का अदम्य पुरुषार्थ दिखा सुरत चेतन अवस्था में बनी रह दिन-प्रतिदिन चमकती जाती है। सजनों जानो जैसे-जैसे सुरत चमकती गई

वैसे-वैसे इंसान धैर्य का श्रृंगार पहन लेता है। इस तरह उसका धैर्य का सवाल हल हो जाता है। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

स्वभावां वल्लों जित्त पा लवो सजनों, स्वभावां वल्लों जित्त पा लवो
फिर धैर्य दा पा लिया सिंगार, सुरत हो गई कंचन
फिर सुरत महाराज जी दे संग ओ जाके टापू-टापू में जा के ओ चमक दिखावे
शब्द इस तरीके नाल चलया फिर, सजन धैर्य वल्लों फतह पा गया।
धैर्य वल्लों जित पा गया सजन ओ, धैर्य वल्लों जित पा गया।।

आगे सजनों जानो कि सत्य चानणा है और हम संतोष-धैर्य का श्रृंगार पहन कर ही, सत्-वादी बन अपने शरीर को सचखंड बना सकते हैं। ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही हम अपने हृदय को सत्य से भरपूर करके इसकी सुगंधि से देवलोक की सुगंधि को भी मात कर सकते हैं। जैसे कि कहा भी गया है:-

फिर सच होवे जबान, सच होवे हृदय, सच होवे वर्त-वर्ताओ।
फिर शरीर रूपि मकान नूं सचखंड बनाओ।।
सच खंड बना लओ सजनों, सचखंड बनाओ।।
फिर फैले सुगन्धि ओ सजनों तुहाडी देश देशान्तर।
इस तरीके नाल देवलोक नूं हषाओ।।
देवलोक नूं हर्षा लवो सजनों, देवलोक नूं हर्षाओ।
फिर सजन सच्चाई वल्लों फ़तह पा गया ओ सजन सच्चाई वल्लों फ़तह पा गया।।

आगे सजनों श्री साजन परमेश्वर कहते हैं धर्म दे सवाल ते किस तरह फतह पानी जे सो सुनो:-

धर्म नूं जो जितना चाहवो, महाराज जी दे नैनां नाल नैन मिला के।
फिर जो मन मन्दिर सोई जग अन्दर,
मुकम्मल एहो दृष्टि सजनों दिखाओ।

सम दा कोई सवाल नहीं फिर दिव्य
दृष्टि दा शब्द लै के अपना जीवन बनाओ।।

स्पष्ट है सजनों सत्य को धारण करने के उपरांत हमें धर्म के रास्ते पर सीधा विचरना सुनिश्चित करना है। इस तप द्वारा जो प्रकाश त्रिलोकी के महाराजा का मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश जगत में देखने पर हमारी एक निगाह एक दृष्टि हो जाएगी और हम सतवस्तु में इंसान बन सकेंगे। परिणामस्वरूप हमारी सुरत रानी बनकर अन्दर महाराज जी के साथ-साथ, टापू-टापू में विचरती हुई सर्गुण में पहुँच जावेगी और महाराज जी के साथ रहते हुए पटरानी बनकर उनकी चालें पकड़ेगी और प्रभु से मेल खा जाएगी। सजनों इस तरह एकरूप हो जाने पर आवागमन का चक्कर मिट जाएगा।

उपरोक्त विवेचना से सजनों स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा के विषय में सम्पूर्ण जानकारी रखने वाला आत्मयुक्त, आत्मबुद्धि इंसान ही आत्मा का यथार्थ स्वरूप जानने वाला होता है और उसे शरीर के स्थान पर शरीरस्थ आत्मा से प्रेम होता है। तभी तो वह आत्मज्ञानी अपना व सबका कल्याण करने में समर्थ हो पाता है व आजीवन उमंग व उत्साह के साथ निष्काम भाव से परमार्थ के रास्ते पर स्थिर बने रहने हेतु, अपने ही ज्ञान, गुण व शक्ति द्वारा खुद को कामनायुक्त रास्ता अपनाने से रक्षित रख जितेन्द्रिय बन पाता है।

अन्य शब्दों में आत्मज्ञान द्वारा ही इंसान को संतोष व आत्मा को आनन्द प्राप्त रहता है। ऐसा आत्मतुष्ट इंसान ही परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो, अपने लाभ की ओर ध्यान न देते हुए दूसरों की भलाई के निमित्त अपने स्वार्थ का सहर्ष त्याग कर सकता है अर्थात् अपने सर्वस्व को अपने इष्ट देव को समर्पित कर सकता है।

अतः सजनों इस उपलब्धि के दृष्टिगत अपने मन में खुद को जानने की व तदुपरांत ब्रह्म नाल ब्रह्म होने की रुचि पैदा करो। इस तरह निज स्वरूप का भली-भांति ज्ञान प्राप्त कर आत्मज्ञानी बनो व ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाओ। ऐसा होने पर आत्मसंयम द्वारा अपनी चित्त वृत्ति को वश में रखना व अपने मन को रोकना सहज हो जाएगा यानि आत्मसंस्कारों से युक्त हो अपना सुधार आप कर पाओगे और चित्त पूर्णतः शुद्ध व मन

पवित्र हो जाएगा। इस तरह आत्मभाव में स्थित हो व तद्नुरूप वृत्ति तथा गुण अपनाकर आत्मसिद्धि कर लोगे यानि मुक्ति प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना लोगे।

अंततः सजनों यकीन मानो यदि मात्र इतना कर लिया तो फिर संसारी स्वभाव या कनरस नहीं भाएंगे अपितु परमार्थ का रास्ता अच्छा लगने लगेगा। यह अपने आप में बुराई से अच्छाई की ओर बढ़, सजन पुरुष बनने की बात होगी। इसके सद्प्रभाव से मुखमंडल पर ऐसा आभा-वृत्त बनेगा जिसकी ओर आकर्षित हो, हर प्राणी के अन्दर आप जैसा सजन-पुरुष बनने की उमंग व प्रेरणा जाग्रत होगी। इस प्रकार आप द्वारा सद्-वृत्ति अपनाने से, आपके सहित कईयों का कल्याण हो जाएगा।

सबकी जानकारी हेतु वृत्ति से स्मृति की निर्मलता कैसे जुड़ी हुई है, आगामी सप्ताह हम इस विषय में जानेंगे।

दिनाँक 16 सितम्बर 2018 का सबक़

वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह सजनों हमने जाना कि समुचित ढंग से सारे कार्य सम्पन्न करने हेतु एक इंसान की वृत्ति, स्मृति व बुद्धि सब निर्मल होनी चाहिए। इस विषय में अभी तक हम अन्दरुनी व बैहरुनी दोनों वृत्तियों की निर्मलता और उनके महत्त्व के विषय में अच्छी तरह समझ चुके हैं और यह भी जान चुके हैं कि वृत्ति निर्मल होने से स्मृति अपने आप निर्मल हो जाती है। आओ आज जाने कि वृत्ति से स्मृति की निर्मलता कैसे जुड़ी हुई है?

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि स्मृति और कुछ भी नहीं अपितु वह ज्ञान है जो स्मरण शक्ति के द्वारा प्राप्त होता है। अन्य शब्दों में यह ज्ञात विषय का ज्ञान है जिसे संस्कारजन्य ज्ञान भी कहते हैं। यह एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत सीखना, धारण करना प्रत्यभिज्ञान (यानि पहचान या वर्तमान में किसी वस्तु को देखने पर पहले देखे हुए पदार्थ विशेष का स्मरण होकर 'यह वही है' इस प्रकार का ज्ञान) तथा पुनः स्मरण सम्मिलित है।

इस जटिल प्रक्रिया को जानने हेतु ध्यान से समझो कि जब ख़्याल बहिर्मुखी हो, ध्यान स्थिरता द्वारा नश्वर जगत/भौतिक वस्तुओं का बहिर्बोध करता है तो असत्य-मिथ्या

धारणा द्वारा उसकी वृत्ति-स्मृति में उतरता जाता है। परिणामतः उसकी बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणा अस्वच्छ हो जाता है यानि उनका रूप-स्वरूप बिगड़ने लगता है और उसका आभा वृत्त मलिन हो जाता है। निज स्वरूप, ज्ञान, गुण व शक्ति के प्रति उसकी यही अचेतन/अवचेतन अवस्था ही आत्मविस्मृति का कारण बनती है।

इस आत्मविस्मृति के बाद, पुनः सत्-शास्त्र का विचार करने पर व सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति प्रवान करने पर जब इंसान को अपने वास्तविक स्वरूप की स्मृति आती है तो उसका ख़्याल अंतर्मुखी हो, ध्यान स्थिरता द्वारा अजर-अमर आत्मा के ज्ञान स्वरूप से परिचित हो, अंतर्बोध कर लेता है। ऐसा होने पर सत्य धारणा द्वारा उसकी वृत्ति-स्मृति में उतर जाता है और 'ईश्वर है अपना आप' का विचार उसकी स्मृति में ठहर जाता है। इस विचार के स्मृति में ठहरने का अर्थ, निज ज्ञान, गुण व शक्ति स्वरूप से परिचित हो पूर्णतः चैतन्य होने की बात होती है जिसके परिणामतः उसका आभा वृत्त निर्मल हो जाता है और वह इंसान सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी की तरह पुरुषोत्तम कहलाता है। उसमें किसी प्रकार का मल या दोष नहीं होता और वह अपने आप में निर्दोष, निर्विकार, निष्कलंक, निर्भय, निर्वैर, निरासक्त अर्थात् पवित्रता से परिपूर्ण सदाबहार धर्मसंगत मर्यादित जीवन जीते हुए, सत्य को कुशलता से प्रतिष्ठित कर सकता है। इस तरह जीवन जीने की कला में पारंगत हो वह कलाधारी बन जाता है।

ऐसी अद्भुत अवस्था में सजनों इंसान की बुद्धि में विशुद्धता से परिपूर्ण ब्रह्म शब्द विचारों अर्थात् आत्मिक ज्ञान के रूप में सद्-विचारों का अविरल प्रवाह बहता रहता है जिससे मन सदा शांत रहता है और चित्त में एकरस प्रसन्नता व आनन्द का अनुभव होता रहता है। परिणामतः उस आत्मिक ज्ञान को आत्मसात् कर चित्त वृत्तियाँ स्वतः ही बिना किसी यत्न के निर्मल रहती हैं और उस निर्मल वृत्ति व स्मृति इंसान का हृदय सदा आद् जोत के निर्मल प्रकाश से प्रकाशित रहता हुआ असीम शीतलता का अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में उस आत्मज्ञानी के लिए निर्बाध अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखना सहज हो जाता है तो मन मन्दिर में सुशोभित परमात्मा सदा दृष्टिगोचर रहता है। वह दृष्टिगोचर रहता है तो निज परमात्म स्वरूप के प्रति फिर कोई भ्रांति पैदा नहीं होती और न ही उसकी खोज में इधर-उधर भटकना पड़ता है। इस प्रकार इंसान जो सतवस्तु उसके पास है उसके स्वरूप व गुणों को धारण कर आत्मशक्ति स्वरूप को निहारता है

और उसके समीप हो जाता है। इस अवस्था में स्थिरता से बने रहने पर जब दृष्टिगोचर अपने असली सत्य स्वरूप की पहचान हो जाती है तो स्वतः ही उस सजन के संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल हो जाते हैं और उस अपने असली सत्य स्वरूप की पहचान रखने वाले सत्-वादी के लिए सम का कोई सवाल नहीं रहता क्योंकि वह जान जाता है कि 'जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश है, ओही असलीयत ज्योति स्वरूप मेरा अपना आप हैं'। इस प्रकार एक निगाह एक दृष्टि पर खड़े होने पर वह दिव्य दृष्टि के सबक़ अनुसार एक दर्शन में स्थित हो जाता है। ऐसा होने पर उस जितेन्द्रिय व निष्कामी के लिए इस मायावी जगत में शारीरिक व जगतीय बंधनों से मुक्त होकर निर्लिप्तता से अपने जीवन का कारज सिद्ध करना सहज हो जाता है। तभी तो उस आत्मतृप्त इंसान के मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विषय-विकार नहीं पनपते और वासना नहीं सताती। इस अवस्था में वह अपनी विवेकशक्ति का कुशलता से प्रयोग करते हुए इस मायावी जगत के भ्रमजाल में नहीं फँसता और सदा एकरस यथार्थ अवस्था में बना रहता है। बस फिर तो मौजां ही मौजां क्योंकि उसके लिए समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार परस्पर सजन भाव का वर्ताव करना सहज हो जाता है। इस प्रकार वह सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर अटलता से बने रह उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल कहलाता है। तभी तो वह अपने अलौकिक स्वरूप में स्थित रह, शक्तिशाली होकर ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सदा तत्पर रहता है और उस निर्मल वृत्ति/स्मृति की हर कृति निर्मल व सबके लिए मंगलमय होती है। यह अपने आप में जगत कल्याण हेतु परमार्थ के रास्ते पर बने रह परोपकार कमाने की बात होती है। इस अवस्था में मन पूर्णतः संकल्प रहित हो जाता है और ख़्याल ध्यान स्थिर हो मन मन्दिर में सुशोभित परमेश्वर में अखंडता से लीन रहता है। मन प्रभु में लीन रहता है तो इंसान की सुरत को एकान्त यानि निर्गुण में बने रहना भाता है यानि फिर संसारी बातों का कनरस नहीं सताता। तभी तो ऐसा इंसान न किसी की कोई ऐसी वैसी बात सुनता है न सुनाता है यानि गुण-अवगुणों में नहीं फँसता अपितु निर्गुण स्वरूप में स्थित बना रहता है। इस प्रकार सुरत का निर्गुण में बने रहना जब उसके स्वभाव के अंतर्गत हो जाता है तो वह निर्बाध व निर्भयता से सहज ही निर्वाण पद प्राप्त कर लेती है। यहाँ रूप, रंग, रेखा समाप्त हो जाती है। इस प्रकार परिपूर्णता को प्राप्त होते ही जब वह ख़ुद को भरा हुआ पाती है तो उसे अपना जीवन निर्वाह करने हेतु किसी अन्य पर निर्भर रहते

हुए, अभागों की तरह तिरस्कार पूर्ण जीवन जीने की आवश्यकता नहीं रहती अपितु वह तो अति उमंग व उत्साह के साथ अपने स्वार्थ व परमार्थ के कर्त्तव्य सहर्ष निभाते हुए सदा आनन्द को प्राप्त रहती है।

उपरोक्त विवेचना से सजनों वृत्ति के साथ-साथ स्मृति के निर्मल होने की प्रक्रिया व महत्ता स्पष्ट होती है परन्तु इस संदर्भ में यह जानना भी अनिवार्य है कि भूली हुई बात/तथ्य/स्वरूप के स्मरण में आने से उसकी वास्तविकता का अनुभव तो हो सकता है पर उसका बोध नहीं हो सकता यानि वह हमें प्राप्त नहीं हो सकती। आत्मस्वरूप के परिप्रेक्ष्य में उसका बोध करने के लिए हमें उसके मूल आधार स्वरूप परमेश्वर का सतत् संग करने की आवश्यकता होती है। अफुरता से परमेश्वर के संग रहने पर हम उस द्वारा प्रदत्त शब्द ब्रह्म विचारों को आत्मसात् कर तद्नुरूप अपना आचार-व्यवहार ढाल सकते हैं और ईश्वर सम बन सकते हैं।

यहाँ हम समझते हैं कि आप सब भी स्वीकारोगे कि अपने अनादि स्वरूप की स्मृति आने पर यदि हम केवल उसको याद ही करते रहें या उसके गुण ही गाते रहें और उसे अपने हृदय रूपी घर में बुला उसका साक्षात्कार कर उससे बातचीत न करें तो उस संग स्नेह नहीं पनप सकता। स्नेह नहीं पनपता तो कैसे हम उसके ज्ञानयुक्त विचारों व दिव्य गुणों को जान, उन जीवनदायक विचारों व दिव्य गुणों को उचित ढंग से अपनाने की युक्ति समझ सकते हैं? ऐसे में उन्नति कैसे कर सकते हैं? याद रखो संग रहने पर ही स्नेह पनपता है। स्नेह से ही समीपता बनती है यानि दिल और दिमाग एक हो, इको दिल हो जाते हैं। समीपता से ही मन-मस्तिष्क में नित्य अविनाशी स्वरूप की स्थिति बनी रहती है। यही स्थिति सुरत के अखंड सुहागन होने का प्रतीक होती है। जानो अटल सुहागन निर्विकारी सुरत ही इस संसार में विशेष रूप से रहते हुए भी, सबसे न्यारा जीवन जीती है। कहने का आशय यह है कि परमेश्वर संग रहते हुए, उस प्रभु के रंग में रंगने हेतु, सुरत के लिए ध्यान स्थिर होकर, उस परमपिता परमेश्वर के ज्ञान व गुण ग्रहण करना आवश्यक होता है और फिर उन सम ज्ञानी व गुणी बन उन्हीं की तरह शक्तिशाली होकर निर्भयता व निर्लिप्तता से अकर्त्ता भाव से जीवन जीने की कला सीखनी होती है।

इस संदर्भ में इस संसार में विचरते हुए उस जीव को सदा यह याद रखना होता है कि वह

जगत में परमेश्वर की आज्ञा अनुसार किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि हेतु भेजा गया है और वह उस कार्य को उन्हीं के निर्देशन में बने रहने पर ही, समयबद्ध सफलता से सिद्ध कर, उनका आज्ञाकारी सुपुत्र कहला सकता है और उनकी कृपा प्राप्त करने का पात्र बन सकता है। इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी इस दिशा में लगन से व तेजी से आगे बढ़ें यानि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के निर्देशन में स्थिरता से बने रह उनकी हर बात व विचार को भली-भांति समझ कर अपनाने की रीति अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लें यानि हाँ जी करना सीखें। याद रखो जो भी पुरुषार्थी इंसान इस ढंग से इस जगत में विचरता है केवल वह ही सभी मायावी बन्धनों से मुक्त रह अपनी यथार्थ अवस्था में बना रह पाता है और सुनिश्चित रूप से अपने मन सहित इस जगत पर फतह पा लेता है।

अंततः सजनों जानो कि परमात्म स्वरूप ही सदा स्मरणीय है। इसको स्मृति में रखने से किसी प्रकार के वियोग की संभावना नहीं रहती और विरह की पीड़ा नहीं भुगतनी पड़ती अपितु सदा विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था बनी रहती है। इसके विपरीत किसी देखी, सुनी अथवा बीती हुई बात को स्मृति में रखने से मन में कल्पना उठती है और संकल्प झुखता है व इंसान रोता है। इस कल्पना व झुखने-रोने से बचाने हेतु ही सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

कल्पना छोड़ जगत दी सारी ख़्याल कृष्ण जी नाल जोड़ लवो
ओही हिन साडे ओ साथी मुख जगत वल्लों मोड़ लवो

इस संदर्भ में याद रखो जो भूतकाल की बातों/सुखों को याद कर सदा झुखता-रोता रहता है यानि उदास व मायूस रहता है, उसका ऐसे स्वभाव में ढलना काम युक्तता का परिचय देता है। इसके विपरीत जो पिछली बातों (जिनसे काम उत्तेजित हो व मोह बंधन उत्पन्न होने की आशंका हो) को भूलने में ही भलाई समझता है वह समझदार कहलाता है और अपने स्वरूप में यथा बना रह, सत्य अनुरूप धर्मसंगत आचार-व्यवहार करने में सक्षम हो पाता है।

आप सब भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार अपनी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि को निर्मल रखने वाले ऐसे समझदार इंसान बन सको इस हेतु आगामी सप्ताह आपको बुद्धि की निर्मलता की महत्ता जनाएँगे।

दिनाँक 23 सितम्बर 2018 का सबक़

वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-4

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

याद रखो इन विचारों को पकड़ने से वृत्ति-स्मृति बिना किसी प्रयत्न के स्वतः निर्मल हो जाती है।

सजनों वृत्ति-स्मृति की निर्मलता के विषय में जानने के पश्चात् आओ आज बुद्धि की निर्मलता के बारे में जानते हैं। सजनों जैसा कि हम सब जानते ही हैं कि बुद्धि ही सोचने-समझने और निश्चय करने की शक्ति है। बुद्धि द्वारा ही पदार्थों का बोध होता है और सब कुछ समझा व जाना जा सकता है। अन्य शब्दों में किसी भी कर्म क्रिया, कार्य को करने से पहले जिसके द्वारा धर्म-अधर्म, लाभ-हानि, करणीय-अकरणीय आदि का निश्चय लिया जाता है उसे सद्-असद् विवेक बुद्धि कहते हैं।

विवेक बुद्धि मानव के समस्त कलाकृतियों में सर्वश्रेष्ठ होने की विशिष्ट पहचान है क्योंकि इसी के द्वारा मानव भले-बुरे व सत्य-असत्य की पहचान कर किसी भी वस्तु व पदार्थ के यथार्थ व सत्य को परख सकता है और ए विध् सत्यज्ञान यानि प्रकृति और पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान प्राप्त कर आत्मस्वरूप का

साक्षात्कार कर सकता है। इसके विपरीत जो ईश्वर प्रदत्त विवेकबुद्धि खो बैठता है वह पतित हो नीच बुद्धि बन जाता है। अतः संसार में इस विवेक बुद्धि से महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं। यकीन मानो यदि मानव आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर अपनी इस विवेकपरक बुद्धि का विकास करे तो सुनिश्चित रूप से उसके व्यक्तित्व एवं समष्टि का उच्चतम विकास हो जाता है और इंसान उच्च बुद्धि हो समबुद्धि कहलाता है। ऐसे समबुद्धि को फिर जीवन की कोई भी परिस्थिति यानि ऊँच-नीच प्रभावित नहीं कर पाती यानि वह हर अवस्था में समचित्त बना रह पाता है और आत्मचिंतन व सुविचारों से हर कठिन परिस्थिति से सहज ही उबर जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों वर्तमान परिवेश में अभिभावकों के लिए अपने बच्चों को ऐसा ही विवेकशील बनाना आवश्यक है।

आगे जानो कि बुद्धि मुख्यतः दो प्रकार की मानी जाती है यथा सुबुद्धि तथा दुर्बुद्धि। सुबुद्धि जिसे सुमति भी कहते हैं, सजन व्यक्तियों में पाई जाती है तथा निर्मल, सात्विक व प्रकाशित बुद्धि कहलाती है। ऐसी बुद्धि विवेकपरक होने के कारण प्रवृत्ति (बन्ध), निवृत्ति (मोक्ष), कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, भय-अभय को जानती है तथा सदा जागरूक व निश्चयात्मक होने के कारण निर्द्वन्द्व व मौत के भय से निर्भय रहती है। इस बुद्धि कौशल से अलंकृत व्यक्ति सुजान यानि विचारशील कहलाता है। इसके विपरीत दुर्बुद्धि जिसे कुमति/जड़मति भी कहते हैं, दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों में पाई जाती है व संकीर्ण, ध्वंसक व सब बातों को उल्टा समझने के कारण, वास्तविकता के विपरीत धर्म को अधर्म, कर्त्तव्य को अकर्त्तव्य समझने की भूल कर बैठती है।

इस परिप्रेक्ष्य में हम सब भली-भांति जानते ही हैं कि अपकारी होने के कारण दुर्बुद्धि त्याजय है तथा सर्व हितकारी होने के नाते सुबुद्धि यानि सद्बुद्धि जिसकी विशेषता निर्मलता व विवेकशीलता है, विधिपरक एवं ग्राह्य है। सात्विक आहार-विचार, जप-तप-संयम, भक्ति-ध्यान, सत्संग, अभ्यास आदि सब निर्मल व सात्विक बुद्धि के विकास के साधन हैं। चूंकि सजनों बुद्धि आत्मिक ज्ञान के प्रवाह द्वारा निर्मल व प्रकाशित होती है इसलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ इन साधनों के प्रयोग द्वारा प्रत्येक इंसान को अपनी बुद्धि निर्मल

बना उच्च बुद्धि होने का निर्देश दे रहा है।

यहाँ स्पष्टतः जान लो कि निर्मल बुद्धि ही उच्च बुद्धि कहला सकती है। ऐसी बुद्धि उसी की ही हो सकती है जिसकी वृत्ति-स्मृति निर्मल होती है अर्थात् वृत्ति-स्मृति निर्मल होने पर ही बुद्धि निर्मल हो जाती है और उच्च बुद्धि यानि उन्नत व श्रेष्ठ कहलाती है। जानो उच्च बुद्धि वाले का ही उच्च ख़्याल होता है। इस संदर्भ में आप भी उच्च बुद्धि हो बुद्धिमान इंसान बनने हेतु, आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, उसे अमल में लाओ और ए विध् आत्मबोध कर आत्मिक उन्नति करो। इस हेतु वृत्ति-स्मृति की निर्मलता व संकल्प को स्वच्छ रखने या मन को संकल्प रहित रखने की महत्ता को समझो और खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए अपनी बुद्धि को इस तरह निश्चयात्मक बना लो कि किसी बात व वस्तु की यथार्थता समझने में आपसे भूल न हो जाए। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर जीवन में जो निर्णय भी आप लोगे उसका परिणाम सदा कल्याणकारी ही होगा।

यहाँ निश्चयात्मक बुद्धि के संदर्भ में जान लो कि निश्चयात्मक बुद्धि असंदिग्ध होने के कारण पूर्णतः दृढ़ व स्थिर होती है। ऐसी बुद्धि वाले इंसान के अन्दर ही संकल्प-विकल्प नहीं उठते। इसलिए ऐसा इंसान आत्मविश्वास के साथ इस जगत में विचरता है और उसका आत्मिक बल ताकतवर होता है। ऐसा होने पर आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर आत्मज्ञानी बनना कोई कठिन कार्य नहीं रहता यानि परमार्थ के रास्ते पर बने रहना सहज हो जाता है। याद रखो आत्मिक ज्ञान के मनन व उचित ढंग से न्यायसंगत प्रयोग करने पर ही इंसान मिथ्या ज्ञान अपनाने से बचा रहता है और इस प्रकार जगत विजयी हो अपना नाम रोशन कर सकता है।

यहाँ मनन को स्पष्ट करते हुए बता दें कि मनन भली भांति समझ कर किया जाने वाला अध्ययन या विचार है यानि सुने हुए वाक्यों पर बार-बार विचार करना तथा शंका, समाधान द्वारा उसका निश्चय करना है। निश्चयात्मक बुद्धि वाला इंसान बनने हेतु मननशील बनना अनिवार्य है। इस मनन में भी

बुद्धि से काम लेना जरूरी है यानि मनमत/स्वेच्छा आड़े नहीं आनी चाहिए। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अगर एक बार मनमुखी बन गए तो बुद्धि के स्थान पर मन में सोची या विचारी हुई मनोप्रिय बात को सिद्ध करने हेतु, स्वेच्छाचारिता के व्यवहार में ढल जाओगे और अहंकारी बन जाओगे यानि इंसानियत में नहीं बने रह पाओगे। फिर इस निजी अहं भाव में ढलने पर जो भी करोगे वह केवल मन को प्रसन्न करने के लिए स्वार्थपरता/कामना के भाव से ही करोगे जो कामुकता अपनाने की बात होगी। इस तरह कामना का बोलबाला हो जाएगा और निष्काम भाव समाप्त हो जाएगा क्योंकि दिल और दिमाग दोनों ही नश्वर समृद्धि के संग्रह में उलझ भवचक्र में फँस जाएंगे। इस तरह निष्काम भाव गया तो ठीक से मनन नहीं कर पाओगे। मनन नहीं करोगे तो वृत्तियाँ तो दूषित होंगी ही होंगी साथ ही स्मृति में आया हुआ भी मिट जाएगा। इस तरह याद्दाश्त कमजोर हो जाएगी और हम शारीरिक-मानसिक रूप से दुर्बल हो जाएंगे। सजनों ऐसी दयनीय अवस्था को प्राप्त होने पर हम अपने जीवन का प्रयोजन सिद्ध करने में किसी विध् भी काबिल नहीं रहेंगे जो अपने आप में जन्म की बाजी हारने की बात होगी।

हमारे साथ ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि बुद्धि की निर्मलता का महत्त्व समझो और निर्मल बुद्धि हो जाओ। जानो कि निर्मल बुद्धि वाला इंसान ही अपनी धारणा शक्ति का मन-वचन-कर्म द्वारा यथोचित प्रयोग करते हुए सार्थक परिणाम प्राप्त कर अपना जीवन उन्नतिशील व समृद्धशाली बना सकता है। इसके विपरीत जिसकी बुद्धि संकल्पों-विकल्पों में फँस कर भ्रमित अवस्था को प्राप्त हो जाती है उसके लिए यथार्थ परख कर सही निर्णय लेना कठिन हो जाता है। फिर बुद्धि निज अनुभव द्वारा जो समझ पाती है उसी अनुसार वस्तु या विषय का अज्ञान धार बैठती है। परिणामस्वरूप इंसान आत्मविश्वास खो व पराश्रित हो अविचारी चलन अपना कर तद्नुरूप कुकर्म अधर्म करता है और उसके आचार-व्यवहार में भ्रष्टता आ जाती है।

सजनों हम हौं-मैं के अधीन हो ऐसे अहंकारी व भ्रष्टाचारी न बने इस हेतु समझो कि जगत में विचरते समय अच्छी-बुरी दोनों तरह की परिस्थितियाँ आती हैं। विषम परिस्थितियों में ही इंसान की धीरता व बुद्धिमत्ता की परीक्षा होती है यानि जो साहसी हर अवस्था में निष्कामता से अविचल व निर्द्वन्द्व बना रह, ईश्वर के विधान पर विश्वास

रखते हुए सत्य-धर्म पर डटा रह पाता है, वही स्थिर बुद्धि ही सम अवस्था में बने रह, अपनी वृत्ति, स्मृति व बुद्धि को निर्मल रख पाता है और अपने समस्त कर्त्तव्यों का निर्वाह कुशलता से करते हुए आत्मविजयी हो जाता है।

आपको भी सजनों ऐसा ही आत्मविजयी बनना है और इस हेतु अपना हर कर्म परमेश्वर के निमित्त सेवा भाव से करते हुए जगत हितकारी बनना है। इस संदर्भ में कोई भूल न हो जाए इस हेतु सदा याद रखना है कि 'मैं' यानि उस परमपिता परमात्मा की आत्मा रूप में उन्हीं का ही अंश, इस कारण जगत में, परमेश्वर के निमित्त ही सब कुछ करने के लिए बना हूँ यानि फुरने के माता-पिता ने मेरा सृजन नहीं किया है अपितु इलाही परमपिता परमात्मा ने आत्मा रूप में मुझे इस जगत में अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा है। अतः उस इलाही वंश का अंशज होने के नाते मुझे मन में अपने आधारस्वरूप परमेश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास रखते हुए केवल वही करना है जो वह कहें यानि जो उनके हुक्म के अधीन हो तथा वही व्यवहार दर्शाना है जो आत्मीयता के अनुकूल हो। इस तरह पूरा यकीन रखना है कि वह अच्छाई के भंडार मुझ से जो कुछ भी करवाएंगे वह अच्छा ही करवांएगे। इस विश्वास के साथ अकर्त्ता भाव में रहते हुए सजनों अपनी हर कृति को निर्मल करते जाना है। जानो यही हकीकत में सच्ची सेवा है। इससे भाव-स्वभाव रूपी ताना-बाणा ठीक वैसे ही निर्मल व उज्जवल हो जाएगा जैसे सतयुगवासियों का होता है। जानो वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व इस भाव-स्वभाव रूपी ताने बाणे के निर्मल होने के ही कारण सजनों उनके अन्दर-बाहर परमेश्वर सदा प्रकाशित रहते हैं और कुदरती कला से सारे कार्य सम्पन्न होते हैं। इस तरह समभाव स्थापित हो जाता है और सजन भाव व्यवहार में आ जाता है। यह सारा खेल कैसे चलता है आगामी सप्ताह हम इसी बात को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित कीर्तन 'राम रटन ओथे लग रही' के माध्यम से समझेंगे। तब तक आज की बात पर भली भांति मनन कर उसको अमल में लाना।

दिनाँक 30 सितम्बर 2018 का सबक़

वृत्ति/स्मृति/बुद्धि-5

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताहों में सजनों हमने वृत्ति-स्मृति व बुद्धि की निर्मलता का महत्त्व जाना। आओ सजनों आज इसी बात को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित कीर्तन 'राम रटन ओथे लग रही' के माध्यम से जानते हैंः-

- शब्द -

राम रटन ओथे लग रही लगे सारे लोक।
लोक लगे परलोक लगे, रटन एहो श्लोक, ओ ओ ओ ओ ओ।।
हो गई बख्शीश उस दयालु बख्शन्द दी, हो गई बख्शीश।
हो गई असीस उस आनन्द कन्द दी, आनन्द कन्द दी।।
शेष ते विराजमान, सैन करो विश्रामी पलंग।
निर्वाण दे अन्दर जोत ओ चमके,
चमके सर्व ही अन्दर, चमके सर्व ही अन्दर।।
निर्मल तेरी जोत ओ साजन निर्मल ही निर्वाण हुआ।

निर्मल आद अन्त तूं भासे, निर्मल कुल जहान हुआ,
निर्मल कुल जहान हुआ।।
निर्मल वृति, निर्मल स्मृति, जैं सूक्ष्म युक्ति वल ध्यान दिया।
निर्मल पा लिया बाणा उसने अपना आप पहचान किया,
अपना आप पहचान किया।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

इन्सानां विच वसदा दिसदा हां,
खावां पीवां खिड़ खिड़ के पिया हसदा हां।
एहो मन विच करो विश्वास सजनों मेरी सुण लौ बात,
सजनों मेरी सुण लौ बात।।

(श्री राम चन्द्र जी कह रहे हैं)

सतवस्तु दी निर्मल बुद्धि उच्च बुद्धि कहाई।
निर्मल बुद्धि, निर्मल बाणी, पवित्र रचना दिखाई,
साजन जी पवित्र रचना दिखाई।।
सतवस्तु दा बगीचा देखो कैसी सुगन्धि आई।
चार वेद छः शास्त्र समझ न सकन, कैसी पदवी पाई,
साजन जी ने कैसी पदवी पाई।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

जीव जन्तु में भासदा जापदा, एह मेरा समझो इतिहास।
जड़ चेतन में मेरा प्रकाश, सजनों मेरी सुण लौ बात,
सजनों मेरी सुण लौ बात।।

ध्वनिः-

सजनों मेरी सुण लौ बात, दुनियां तों राहवो आज़ाद।।

सजनों हमें भी इस कीर्तन के भावार्थों अनुसार अपने आपको ढालना है। ऐसा करने पर ही हम इंसानियत में आ सकते हैं। अतः आओ अब इस कीर्तन के भावार्थ को समझते हैं:-

इस कीर्तन के अंतर्गत सजनों राम भक्त सजन श्री शहनशाह हनुमान जी, परमार्थ का रास्ता छोड़, संकल्प-विकल्पों से भरे स्वार्थपर अवलड़े रास्ते पर चलने वाले कलुकालवासियों को, अपना जीवन उद्धार करने के प्रति सचेत करते हुए कह रहे हैं कि सर्वत्र रमण करने वाले परमात्म स्वरूप 'राम' को अपने हृदय में धारण कर, सम्पूर्णता को प्राप्त करने हेतु, लोक-परलोक का हर प्राणी, इस संसार से विरक्त हो, भावयुक्त होकर, 'राम' शब्द का बार-बार उच्चारण कर रहा है। वह आगे कहते हैं कि जानो वह सब ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्हें भली-भांति ज्ञात है कि 'राम' नाम ही सत्य है यानि एक ईश्वर का नाम ही सच्चा है बाकी संसार असार और मिथ्या है अर्थात् संसार में सब नाम और रूप नाशवान हैं केवल परमात्मा ही अविनाशी है। स्पष्ट है सजनों कि वे समस्त प्राणी आत्मोद्धार हेतु, संसार के व्यर्थ शोरगुल से बचे रह, अपने मन को परमेश्वर में लीन रखते हुए यानि उस ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव से प्राप्त होने वाले सुखद आनन्द का रस लेते हुए, उन्हीं के प्रति स्नेह व मित्रता बनाए रखने को आवश्यक व लाभकारी समझते हैं इसलिए वे सबमें रमने वाले राम शब्द की रटन लगा, राम होने की अवस्था यानि परमात्म स्वरूप में ही स्थित होना चाहते हैं।

इस संदर्भ में सजनों इस कीर्तन में वर्णित उक्त पंक्तियों में लोक व परलोक दो शब्द आए हैं। जानो परलोक वह स्थान है जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है अर्थात् मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति है तथा लोक वह स्थान है जिसका बोध प्राणी को होता है अथवा जिसकी उसने कल्पना की होती है। यह जन साधारण को विषयासक्ति द्वारा कष्ट पहुँचा और भयभीत कर उसके मन में संसार को स्थित कर उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप के प्रति विस्मृत कर, कर्त्ता भाव से सब कुछ करने के लिए बाध्य करता है। यह अपने आप में धर्म के मार्ग से हटा अधर्म के रास्ते पर चढ़ाने की बात होती है। ज्ञात हो कि जो जीव इस तरह जगत के आकर्षण में बंधनमान हो, तद्नुरूप ही मिथ्या ज्ञान व गुणों को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेता है, वह अपना यथार्थ रूप भूल जाता है और उसकी जीवन यात्रा भूमंडल और स्वर्ग

तक ही सीमित रह जाती है यानि वह कदाचित् मोक्ष नहीं पा पाता। अन्य शब्दों में जब इंसान लोक-चरित्र अर्थात् संसार का ज्ञान व सार्वजनिक व्यावहारिक ढंग अपना लेता है तो वह ठग मनमत की मस्ती में होश-हवास खो, अंतर्जगत से अपना नाता तोड़ बैठता है और इस प्रकार लोकात्मा, परमात्मा को विस्मृत कर, अपनी अलग सत्ता बना बैठता है। तभी तो वह फिर इस संसार में जो भी करता है केवल अपने ही हित को ध्यान में रखकर करता है। इस तरह लोक पद्धति अपनाने वाला कामी, क्रोधी, लोभी, मोहयुक्त व अहंकारी हो जाता है और राजसिक व तामसिक गुण अपना, बड़े-छोटे का सवाल पैदा कर खुद गुरु बन बैठता है व औरों से अपनी पूजा-मानता करवाने में ही अपनी शान समझता है। यह होता है अहंवश अपनी विवेक बुद्धि व स्मृति का नाश कर अपना व सबका सर्वनाश कर बैठना ।

इस कीर्तन के अंतर्गत आगे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सच्चेपातशाह जी को कहते हैं कि आप अत्यन्त भाग्यशाली हैं इसलिए तो आपके निष्काम भक्ति-भाव से प्रसन्न होकर उस दयालु बख़्शंद ने आपको सब कुछ अर्थात् त्रिलोकी का राज प्रदान कर दिया है। तात्पर्य यह है कि इस बख़्शीश द्वारा उस परम आनन्द के दाता ने आपको अपना परम मंगलकारी आशीर्वाद प्रदान करने की अपार कृपा की है। इसलिए जब आप परमात्म स्वरूप को धारण कर व सर्वोच्च महान पद को प्राप्त कर असली खजाने के मालिक यानि परमेश्वर सम हो गए हो तो वह कहते हैं कि अब विश्रामी पलंग अर्थात् शेष शैय्या पर विराजमान यानि प्रकाशमान हो विश्राम को पाओ और जगत प्रकाशी नाम कहाओ। यह होती है सजनों निष्काम भाव से भक्ति करने की प्राप्ति।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी आगे सच्चेपातशाह जी को कहते हैं कि हे परमेश्वर ! आपकी ज्योति का प्रकाश अपने अत्यन्त विशुद्धतम रूप में है व मुक्ति धाम निर्वाण की निर्मलता का प्रतीक है। यही नहीं आप ही अपने निर्मल स्वरूप में आद्-अन्त, सर्व-सर्व अर्थात् समस्त ब्रह्मांड में चमक रहे हो। पर आज के समयकाल में कोई विरला ही आपके इस पावन व सुन्दर स्वरूप को जान, अपने आप की पहचान कर पा रहा है। निःसंदेह वह विरला वही है जो आप द्वारा बताई हुई सूक्ष्म युक्ति पर ध्यान से बने रह, निर्मल शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर, निर्मल वृत्ति व

निर्मल स्मृति हो निर्मल बाणा पहन रहा है और अपना आप पहचान कर अपना जीवन सफल बना रहा है।

आगे श्री साजन परमेश्वर कहते हैं कि मैं ही जड़ रूपों को चेतन कर, उनके हृदय में स्थाई रूप से रहते हुए, उन्हें जीवनयापन कर पाने योग्य बनाता हूँ अर्थात् मेरे निवास से ही हर इंसान का हृदय आबाद रहता है। वह कहते हैं कि जो भी व्यक्ति अपने मन में मेरे स्थित होने की वास्तविकता का अनुभव कर लेता है वही मेरा प्रियवर अपना ख़्याल ध्यान स्थिर रख मुझसे सब कुछ प्राप्त कर पाता है व भरपूरता का एहसास कर देवलोक की सुगंधि को मात कर देता है। इस तरह जब इस परिपूर्ण अवस्था को प्राप्त होने वाले उस सजन का मन संकल्प रहित/इच्छा मुक्त हो जाता है तो उस प्राणी को अपने ही मन मन्दिर में अपने वास्तविक परमात्म स्वरूप का साक्षात् इलाही दर्शन हो जाता है। परमेश्वर की कृपा से ऐसा अद्भुत होने पर वह इंसान 'विचार ईश्वर है अपना आप' के भाव पर स्थित हो जाता है और उसके खाने-पीने का ढंग अथवा आचार-विचार ईश्वर की रीति अनुसार सत्यतापूर्वक चलता है जो इस जगत से निराला होता है। कहने का आशय यह है कि वह खुद को सांसारिक परिवार से भिन्न, इलाही यानि ईश्वर के परिवार का सदस्य समझता है इसलिए ईश्वर-अनुकूल रैहणी-बैहणी व चाल-चलन का तरीका अपनाता है। वह आगे कहते हैं कि ए विध् जब वह अपना आप जान जाता है तो उसके चित्त को निरंतर प्रसन्नता रस प्राप्त होता रहता है और उसका हृदय कमल खिल जाता है। जानो यह अलौकिक खेल रचा 'मैं' ही उसके हृदय में खिलखिलाता हुआ हँसता हूँ अर्थात् रमणीय लगता हूँ व उस इंसान को आत्मिक आनन्द से सराबोर कर हँसने में प्रवृत्त करता हूँ। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों श्री साजन परमेश्वर कलुकाल के हर जीव को सतवस्तु में आने हेतु, ध्यानपूर्वक अपनी बात सुनने का आवाहन देते हुए कहते हैं कि हे जीवो ! मेरी सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता व सर्वशक्तिमानता के प्रति मन में सुदृढ़ विश्वास रखते हुए निर्मल आचार-व्यवहार अपनाओ और सतवस्तु में प्रवेश कर जाओ।

श्री साजन जी के ऐसे सुन्दर आवाहन को सुनकर आगे सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी सभी कलुकालवासियों को सतवस्तु में प्रवेश करने के प्रति उत्साहित करते हुए इस सर्वविदित सत्य को जनाते हुए कहते हैं कि इस सृष्टि का आधार ब्रह्म ही सत् यानि

नित्य, श्रेष्ठ, शुद्ध, पवित्र व सुन्दर है। उसी की ब्रह्म सत्ता यानि मूलमंत्र आद् अक्षर को ग्रहण करने पर ही इंसान, वस्तुतः तत्त्वज्ञानी बन, अपनी वास्तविकता की पहचान कर सकता है यानि नित्य भाव में स्थिर हो, पवित्रात्मा व श्रेष्ठ मानव कहला सकता है और मौत से भी निर्भय हो, आत्मतुष्टता व धीरता से इस जगत में आने का अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकता है। इस प्रयोजन की सिद्धि हेतु ही वह सजनों को निर्मल बुद्धि, होने के प्रति उत्साहित करते हुए कहते हैं कि सतवस्तु के इंसानों की बुद्धि यानि सोचने-समझने और निश्चय करने की शक्ति निर्मल व उच्च होती है इसलिए वह श्रेष्ठ बुद्धि इंसान कहलाते हैं। हम सब भी ऐसे श्रेष्ठ बुद्धि इंसान बन सकें इसलिए तो सच्चेपातशाह जी ने कलुकाल में सबको निर्मल बुद्धि बन, निर्मल वाणी होने का पाठ पढ़ाने जैसी पवित्र रचना रचाई है। आगे वह सजनों को सतयुगी इंसान बनने के प्रति पुनः उत्साहित करते हुए कहते हैं कि घोर कलुकाल के अंधकारमय समय में भी सतवस्तु की मर्यादा अनुसार अनुशासनबद्ध रह व परमेश्वर नाम कहा श्री साजन जी ने जो अद्भुत सर्वोच्च श्रेष्ठ पद प्राप्त किया उस महान पद की शोभा चार-वेद व छः शास्त्र भी नहीं समझ सकते क्योंकि उस अनादि प्रमादि श्री साजन जी की महिमा अपरम्पार है।

अंततः सजनों श्री साजन परमेश्वर सम्पूर्ण जगत को अपनी परिपूर्णता का परिचय देते हुए अपना इतिहास समझा रहे हैं और कह रहे हैं कि 'मैं' ही हर जीव जन्तु में भासता हूँ यानि दीप्तिमान हूँ व 'मैं' ही हर जीव जन्तु में जापदा हूँ अर्थात् दृष्टिगोचर हूँ। अतः सजनों मेरी बात अति ध्यानपूर्वक सुनो और जड़-चेतन में मेरा ही प्रकाश मानो व सत्यप्रकाशी हो जाओ। वह कहते हैं कि सतवस्तु में आने हेतु मेरी इस बात को सुन-समझ कर अपने हृदय में धारण करो और इस दुनियां में विशेष होते भी निर्लेप यानि आज़ाद रहकर जीना सुनिश्चित करो और इस प्रकार अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित रह जन्म की बाज़ी जीत जाओ।

सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह से हम सेवा के विषय में बात करेंगे।

निवेदन

इस पुस्तक को और अधिक जीवन उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES
Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA
Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH
B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY
UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH
World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA
Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org